ओ३म्

ख़ूनी इतिहास

लेखक—

श्री गणपतिरायजी अग्रवाल,
सरदार शहर, बीकानेर.

द्वितीयावृत्ति	संवत् १९९७ वि०	मूल्य
१०००	सन् १९४१ ई०	॥)

ओ३म्

प्रस्तावना

राष्ट्रीय रोग को दूर करने के लिये ऐतिहासिक ज्ञान की उतनी ही आवश्यकता है, जितनी कि मानुषीय व्याधि को मिटाने के लिये शरीर विज्ञान (Physialogy) और चिकित्सा शास्त्र (Medicine की। इसी कारण राष्ट्रीय इतिहास का पढ़ना और अपने बच्चों को पढ़ाना रामबाण का काम देता है, परन्तु यह हमारा दुर्भाग्य है कि भारत निवासी हिन्दू (आर्य्य) न तो अपने इतिहास की ओर ध्यान देते हैं और न भारत की रहने वाली अन्य जातियों का इतिहास पढ़ते हैं। भारत से बाहर रहने वाली जातियों के इतिहास की तो बात ही क्या है।

भारतवर्ष में हिन्दुओं को छोड़ कर सब से अधिक संख्या मुसलमानों की है, अतः सब से प्रथम इन्हीं का इतिहास जिसके लिए यह कहना अत्युक्ति न होगा कि वह मनुष्य के खून की स्याही बना कर तलवार की लेखनी द्वारा लिखा गया है, प्रत्येक हिन्दू स्त्री पुरुष को पढ़ना चाहिए, जिससे उनके साथ मित्रता करते समय कभी धोखा न हो, जैसा कि पिछली बार हुआ। साथ ही साथ उनके संगठन और धार्मिक जोश की घटनाएं पढ़कर कुछ शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। केवल इसी अभिप्राय से यह छोटी सी पुस्तक लिखी गई है। आशा है कि सज्जनगण इससे लाभ उठावेंगे।

मैं निम्न लिखित इतिहासवेत्ताओं का ऋणी हूं और उनको धन्यवाद देना अपना धर्म समझता हूं क्योंकि मेरी इस पुस्तक की दीवार उन्हीं के ग्रन्थों के आधार पर खड़ी की गई है।

Messrs. J. Tod, Elphinston, W. W. Hunter, E, B. Hevell, V. A. Smith, A. Gilman, W. Irving G. Sale, Ibn Khaldoon, Farishta, M. Latif, M. Ksbir, M, Karm Ilahi and Pandit Lekhram.

पुस्तक हिन्दी में लिखने के लिये मेरे पुत्र चि० वृद्धिचन्द्र अग्रवाल ने भी कम परिश्रम नहीं किया, अ:त उसको आशीर्वाद दिये बिना नहीं रह सकता, परमात्मा उसकी दीर्घायु करे।

मैं कई वर्षों से हृदय रोग से पीड़ित हूं, नहीं मालूम वह मेरे जीवन का कब अन्त करदे, अतः यह मेरी हार्दिक इच्छा थी कि शीघ्रातिशीघ्र यह पुस्तक प्रकाशित हो जावे। मैं आर्य्य साहित्य मण्डल अजमेर का बड़ा आभारी हूं कि उसने मेरे परिश्रम को ठिकाने लगा दिया और उचित परिवर्तन के साथ संक्षिप्त रूप में उसे निकल दिया, यदि मेरे स्वाध्य ने मुझे अवसर दिया तो इसी प्रकार और सेवा करूंगा।

अन्त में 'जय जङ्गलधर बादशाह' बीकानेर श्रीमान महाराजा गंगासिंह बहादुर और सम्पूर्ण राज-परिवार की दीर्घायु और प्रताप वैभव के लिये जगत्-पिता परमेश्वर से प्राथना करता हूं, क्योंकि श्रीमान् के रामराज में मुझको इस ग्रन्थ के लिखने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ।

२१ जुलाई सन्
१९२४ ई०

गणपतराय अग्रवाल,
सरदार शहर,
बीकानेर.

ओ३म्

प्रकाशकीय वक्तव्य

भारतवर्ष के प्राय: सभी मुसलमान 'करबला की लड़ाई' की यादगार में प्रति वर्ष मोहर्रम मनाते और ताज़िये निकालते हैं। इन मोहर्रम और ताज़ियों को लगातार देखते २ हिन्दुओं के हृदयों में यह एक अटल विश्वास होगया है कि उक्त त्यौहार किसी अतीत धार्मिक युद्ध का पवित्र स्मृति चिन्ह है। इसी विश्वास के कारण बहुतेरे भोले हिन्दुओं ने इन ताज़ियों को श्रद्धा भक्तिपूर्वक पूजना भी शुरू कर दिया है, परन्तु बाबू गणपतिरायजी अग्रवाल के इस 'खूनी इतिहास' के साद्यन्त अवलोकन से ज्ञात होता है कि जिस करबला के युद्ध को मुसलमान लोग इतना श्रेय देते हैं, वह पारस्परिक द्वेष और स्वार्थ साधन की कुत्सित प्रवृत्ति के कारण हुआ था और उसकी जड़ में कोई धार्मिक कारण न था।

इस ग्रंथ को पढ़ने से मुसलमानों का आदि से अब तक का ठीक २ इतिहास, उनके आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-रिवाज और उनके धार्मिक सिद्धांन्तों का पूर्ण ज्ञान होजाता है। लेखक महोदय के इस प्रयत्न के लिये समस्त भारतवासियों को कृतज्ञ होना चाहिये।

अग्रवाल महोदय ने जो इतिहास 'आर्य्य साहित्य मण्डल' के पास प्रकाशनार्थ भेजा था, वह ४०० से भी अधिक पृष्ठों पर लिखा था, परन्तु उसे बहुत संक्षिप्त करके 'मण्डल' ने पाठकों के सम्मुख रक्खा है। हिन्दी भाषा भली प्रकार न जानने और फ़ारसी का ही विशेष अभ्यास होने के कारण संक्षेप करते समय अनेक स्थलों पर लेखक की भाषा सम्पादक की भाषा से बदल गई है जिससे

बहुत सम्भव है कि वह पाठकों को अरुचिकर प्रतीत हो, परन्तु हमें पूर्ण आशा है कि भावग्राही पाठक भाषा पर अधिक ध्यान न देकर अभिप्राय पर ही दत्तचित्त होंगे और ऐतिहासिक घटनाओं की यथार्थता को जानने का प्रयत्न करेंगे।

अरब के मोहम्मदी लोगों की लूट मार, निर्बलों तथा निःशस्त्रों पर अत्याचार; अबलाओं और बच्चों का निर्भय रक्तपात तथा मित्रों और निकट सम्बन्धियों तक के साथ विश्वासघात को देख कर कुछ लगों का मत है कि यह सब अरब की जलवायु का प्रभाव है, किन्तु यह बात एकदम असंगत और युक्तिशून्य मालूम पड़ता है। भारत के अधिकांश मुसलमानों में, जिनकी देह भारत की ही जलवायु से बनी है और जिनमें ९५ प्रतिशत से अधिक में हिन्दुओं का ही रक्त विद्यमान है, अभी तक वे ही उपरोक्त बातें अविकल रूप से वर्तमान हैं, फिर क्यों न माना जावे कि इसका कारण जलवायु नहीं, प्रत्युत मोहम्मद साहब का बहिश्त और हूरों के प्रलोभनों से परिपूर्ण वह धर्म ही है।

अन्त में हम म० गणपतिरायजी अग्रवाल को अनेकानेक धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने ऐसी आवश्यक पुस्तक लिख कर एक बड़ी भारी कमी को पूर्ण किया है। परमात्मा करें लेखक महोदय शीघ्र आरोग्य लाभ करें ताकि वे हिन्दू जाति के सम्मुख ऐतिहासिक अन्य अनुसन्धान पूर्वक पुस्तकें भी शीघ्र रख सकें।

—प्रकाशक

—:o:—

विषय सूची

ओ३म्

ख़ूनी इतिहास

१—अरब देश का विवरण।

भारत से पश्चिम की ओर एशिया महाद्वीप के दक्षिण व पश्चिम के कोने पर अरब का मरुदेश है। इसके उत्तर में कनान देश और शाम है, पूर्व में फ़ारस की खाड़ी, दक्षिण में हिन्द महासागर और पश्चिम में लाल सागर है। इसकी लम्बाई लगभग १४०० मील और चौड़ाई ७०० मील है। जन संख्या ५० पचास लाख के क़रीब है। कुछ भाग को छोड़ सारा देश रूखा सूखा और रेतीला है। उत्तर दक्षिण और मध्य में बड़े २ ऊजड़ व सुनसान स्थान हैं। इनमें नीलगाय, उष्ट्रपक्षी, हिरन और भयङ्कर वनचर पाये जाते हैं। सारे देश में साधारण पहाड़ों व नीची २ पहाड़ियों की शृंखला भी हैं और कहीं २ रेत के टीले और काली २ नंगी चट्टानें बड़ी डरावनी प्रतीत होती हैं। पानी का भी बड़ा तोड़ा रहता है, इस कारण खेती-बारी बहुत कम होती है। खजूर यहां की प्रधान पैदावार है। गर्मी की जलजलाती धूप में खजूर की छाया अमृत है। इतने बड़े देश में कोई बड़ी नदी नहीं है। पहाड़ों में छोटे २ नाले बहुत हैं। लोग इन्हीं नालों के पास आ ठहरते हैं। जबतक पानी-चारे का सहारा रहता है ठहरते हैं, फिर किसी अन्य स्थान में चले जाते हैं। ऐसे लोगों को ही "ख़ाना-बदोश" कहा जाता है।

गर्मी इस देश में इतनी अधिक पड़ती है कि दोपहर के समय *हिरन भी अन्धे के* समान इधर-उधर टकराता फिरता है, आंधियां ऐसे सन्नाटे से चलती हैं कि बालू के बड़े बड़े टीले अपने स्थान से उड़ जाते हैं, इस लपेट में कभी २ यात्रियों का समूह बिलकुल नष्टभ्रष्ट हो जाता है। गर्मी के सिवाय जाड़ा भी किसी २ भाग में कड़ाके का पड़ता है, जाड़े के दिनों में वर्षा भी होती है। वर्षा का जल जो नदियों या गड्ढों में एकत्र हो जाता है वही पीने के निमित्त बहुत प्रयोग किया जाता है।

अरब के घोड़े संसार भर में विख्यात हैं। पथरीले स्थान में यह बड़े काम का पशु है। पर मरुस्थल के लिये ऊंट विशेष रूप से काम का जानवर है। इसका दूध व मांस बहुत प्रयोग में आता है। लोग खजूर का गूदा स्वयं खाते हैं और गुठली ऊंटों को खिलाते हैं। सबसे अधिक खजूर यमन के बाग़ में होता है। यमन अरब का एक मुख्य भाग है और बहुत उपजाऊ है। फलतः उपजाऊ भूमि के लोग और नगरों के निवासी खेतीबारी, व्यापार तथा अन्य कुछ काम-काज करते हैं, शेष अधिकतर लूटमार पर जीवन व्यतीत करते हैं। मक्का व मदीना नगर जिस भाग में हैं वह "हजाज़" कहता है। यह भी अरब का एक मुख्य भाग है। यमन हजाज़ के सिवा उम्मान, तहामा, नजद और बहरैन भी अरब के प्रधान भाग हैं।

लूटमार बहुधा प्रातःकाल अथवा रात्रि को होती है क्योंकि दिन में असहनीय गर्मी के कारण लोग बहुधा रात्रि में ही चलते फिरते व यात्रा करते हैं। मोहम्मद साहब से पहिले अरब के आदमी बहुत ही असभ्य और पशुवृत्ति के थे, उसी का स्वर्गीय कवि "हाली" ने निम्नलिखित शब्दों में वर्णन किया है:—

चलन उनके जितने थे सब बहशियाना।
हरएक लूट और मार में था यगाना॥
फ़िसादों में कटता था उनका ज़माना।
न था कोई क़ानून का ताज़ियाना॥
वे थे क़त्लो ग़ारत में चालाक ऐसे।
दरिन्दे हों जङ्गल में बेबाक जैसे॥

(मुसद्दस हाली)

अरब निवासी यंत्र-मंत्र आदि के भी बड़े विश्वासी थे और यद्यपि अब उनकी हालत बहुत कुछ बदल गई है, तथापि बहुत सी पुरानी बातें जैसे लूटमार करना, ज़रा २ सी बातों में अकड़ना व अजनबियों को अपने बीच न आने देना इत्यादि अब भी उनमें पाई जाती हैं और सम्भव है प्रलय तक उनमें बनी रहें।

उपरोक्त वाक्यों की पुष्टि में मि० ज्यार्ज सेल तथा मि० ए० गिलमैन के वाक्य उन्हीं की भाषा में अंग्रेजी पाठकों के लिये अधिक उपयोगी समझकर नीचे उद्धृत किये जाते हैं:—

The Arabs have a natural disposition to war, bloodshed, cruelty and rapine, being so much addicted to bear malice that they scarce ever forget an old grudge, which vindictive temper, some physicians say, is occasioned by their frequent feeding on camel's flesh (the ordinary diet of the Arabs of the desert), who are therefore observed to be most inclined to these vice that creature being most malacious and tenacious of anger, which account suggests a good reason for a distinction of meats. —*George Sale.*

The Arab at this time was a devoted believer in spells, enchantment and the evil eye, and still is, and Mohammad was superstitious in this respect as any of his countrymen.

When an Arabian whirl-wind was seen carrying sand and dust over field and desert, it was said that some evil jinii was riding forth with sinister *intent, and the beholder was wont to cry out* "Iron ! Iron ! thou unlucky" forn the jiniis were *cowed by the fear of iron.* —*A. Gilman.*

Such was the nation that gave birth to the false Prophet (Mohammad), whose doctrines have so long and so powerfully influenced a vast portion of the human race. But what-ever may have been the reality of his zeal and even the merit of his doctrines, the spirit of intolerance in which it was preached and the bigotary and bloodshed which it engendered and perpetuated must place its author among the worst enemies of mankind.

History of India
by Hon: M. Elphinston.

२—मोहम्मद साहब के पूर्वज।

मोहम्मद साहब के एक सुप्रसिद्ध कथन का आशय यह है कि मैं ख़ुदा की ज्योति से हूँ और सारी सृष्टि मेरी ज्योति से रची गई है, परन्तु मोहम्मदी लोग अद्वैतवादी हैं और इन सबका विश्वास है

कि मूल तत्त्व एक ईश्वर ही अनादि और अनन्त है, उसने अपनी माया शक्ति से प्रकृति और जीवात्मा को उत्पन्न किया।

सब से पहिले बाबा आदम ईसा से लगभग ४००४ वर्ष अर्थात् आज से ५९२९ वर्ष पहिले दुनिया में भेजे गये। फिर उनसे १६५६ वर्ष बाद नूह के समय में जलप्रलय हुई, जिसमें नूह के वंश को छोड़ सारे आदमी डूब मरे। हज़रत नूह के तीन पुत्र साम, हाम और याफ़िस बतलाये जाते हैं। अरब लोग अपने को साम की सन्तान कहते हैं, साम के पोते का पोता क़हनान हुआ जिसके एक बेटे का नाम "अरब" था और उसी के नाम पर देश का नाम भी "अरब" रक्खा गया।

नूह से दसवीं पीढ़ी में पैग़म्बर इब्राहीम पैदा हुए, उनके दो पुत्र थे। * बड़े इस्माइल थे जो हज़रत इब्राहीम की स्त्री की बांदी बाबी हाजरा के पेट से थे और छोटे इसहाक़ उनकी असली बीबी सारा से उत्पन्न हुए थे।

हज़रत इस्माइल की पन्द्रहवीं पीढ़ी में कुरैश का जन्म हुआ था। इनका वंश शीघ्रता के साथ सारे अरब देश में फैल गया। क़ुरैश की नवीं पीढ़ी में अब्दमनाफ़ हुए। इनके दो पुत्र हाशिम व अब्दुलशम्स थे। हाशिम के पुत्र अब्दुलमत्लब हुए और इनके सबसे छोटे पुत्र अब्दुल्लाह और उनकी स्त्री आमिना से मोहम्मद साहब का जन्म हुआ।

* हज़रत इस्माईल लौंडी के पुत्र थे, उन्ही के कुल में हज़रत मोहम्मद उत्पन्न हुये थे, इसी कारण एक अवसर पर श्री स्वामी दयानन्दजी सरस्वती ने एक मुसलमान को उत्तर में कहा कि मुसमान लौंडी की सन्तान हैं।

३—मोहम्मद साहब का जन्म और पालन पोषण।

मोहम्मद सा० के जन्म तिथि के सम्बन्ध में इतिहासकारों का मतभेद है। कोई वैशाख संवत् ६२७ मानता है और कोई ज्येष्ठ सं० ६२८ कहता है, अधिक लोग २० अप्रैल सन् ५७० ई० मानते हैं।

मोहम्मद सा० अभी अपनी माता आमिना के गर्भ में ही थे, जब उनके पिता अब्दुल्लाह का देहान्त होगया। पति की अकाल मृत्यु के कारण आमिना के सिर पर दुःख का पहाड़ टूट पड़ा, यहां तक कि उनकी छातियों का दूध सूख गया, जिससे वह अपने पुत्र मोहम्मद को ७ दिन से अधिक दूध भी न पिला सकीं। कुछ दिन तक उसकी दासी सुविया ने दूध पिलाया, पीछे "हलीमां" बच्चे को घर लेगई और अपने यहां तीन चार वर्ष तक पालन पोषण किया, फिर मक्के लेआई और अब्दुलमतलब के गोद में बिठा दिया। दो तीन वर्ष बाद आमिना मोहम्मद को लेकर अपने बाप के घर मदीना को रवाना हुई, परन्तु मार्ग में ही उसकी मृत्यु हो गई। अभी माता को मरे दो वर्ष भी न हुए थे कि वृद्ध दादा भी चल बसे, किन्तु उनके पुत्र अबूतालिब ने अपने बाप की आज्ञानुसार मोहम्मद को अपने पुत्र के समान रखा। अबूतालिम शाम देश में ऊंटों द्वारा ग़ल्ले का व्यवसाय करते थे। मोहम्मद ने १२ वर्ष की आयु से अपने चचा के साथ काफ़ले में जाना आरम्भ कर दिया, जिससे बहुत-थोड़े समय में ही उन्होंने शाम देश के व्यापार और लेन-देन का अच्छा अनुभव प्राप्त कर लिया। कभी कभो आप अपने दूसरे चचा के साथ, जो यमन जाया करते थे, जाकर वहाँ के व्यवसाय को भी समझ लिया।

शाम देश उस समय रोमन बादशाहों के अधीन था और यमन में ईरानी राज्य करते थे। इन दोनों देशों के बादशाह आपस की लगातार लड़ाई के कारण बहुत निर्बल होगये थे।

उन्हीं दिनों जो सूबेदार सीमा प्रान्त पर शाम व फ़ारिस देश की ओर से शासन करते थे, वे राजद्रोह करने को तैयार थे और अपने देश को शत्रु के हाथ देने पर उद्यत् थे। मोहम्मद साहब इस बात को अच्छी तरह ताड़ गये और अरब की लड़ाकी व .खूनी जातियों को, जो आपस में ही लड़ाभिड़ा करती थीं, एक सङ्गठन में लाकर शाम तथा फ़ारिस को हड़पने के मंसूबे बांधने लगे। उस समय अरब के लोग नाना मत-मतान्तरों और धार्मिक सम्प्रदायों में विभक्त थे, इसलिये आपने सब से पहले धर्म-सुधार या धार्मिक ऐक्य की ओर ध्यान दिया।

मक्का नगर में ख़दीजा नाम की एक धनवान् विधवा स्त्री थी। वह दो बार पहले विवाह कर चुकी थी और चार बच्चे पैदा हो चुके थे, परन्तु दोनों पति और चारों बच्चे मर चुके थे और घर में कोई काम काज करने वाला न था, अतः उसने मोहम्मद को अपने यहां गुमाश्ते के तौर पर रख लिया और धीरे २ आपस में मोहब्बत बढ़ गई अन्त में दोनों का विवाह हो गया। कहा जाता है कि विवाह के समय मोहम्मद की २५ वर्ष और ख़दीजा को ४० वर्ष की आयु थी।

४—इस्लाम धर्म की उत्पत्ति।

शाम और यमन देश में जिस समय मोहम्मद साहब व्यापार के निमित्त जाते थे उस समय उनको यहूदी व ईसाई धर्म के आचार्य्यों से बातचीत करने का अवसर मिलता था, जिससे उनका इन दोनों धर्मों की अवस्था और पिछली बातें बहुत कुछ मालूम हो गई थीं। उन्होंने यह भी अनुभव कर लिया था कि धार्मिक फूट का प्रभाव देश और समाज में पड़े बिना नहीं रह सकता और धार्मिक ऐक्य का राष्ट्रीय ऐक्य के साथ वैसा ही

सम्बन्ध है जैसा कि बत्ती का तेल के साथ, अतः उन्होंने बहुत सोच-विचार के पश्चात् यह कहना आरम्भ कर दिया कि खुदा के पास से जिब्राईल फ़रिश्ता मेरे पास समाचार लाता है।

सब से पहिले मोहम्मद सा० को बीबी ख़दीजा ने उनकी बातों पर विश्वास किया और उनका मत स्वीकार किया, उसकी देखादेखी उसका नौकर जैद इब्ने हारिस भी इस नवीन मत का अनुयायी हुआ। बाद में अधिकांश मोहम्मद सा० के वंशधर या सम्बन्धी मोहम्मदी बने।

जब मोहम्मद सा० ने देखा कि २०-२५ आदमी मेरे मत के हो गये हैं तो खुल्लमखुल्ला कहना आरम्भ कर दिया कि मैं .खुदा का रसूल (दूत) हूँ, मेरे पास उनके यहां से समाचार आते हैं, साथ ही मूर्तिपूजा का खंडन और देवी-देवताओं की निन्दा भी स्पष्ट शब्दों मे करनी आरम्भ करदी। यह बात सुनकर .कुरैश लोगां ने उनसे कहा कि आप हमारे धर्म और देवताओं की निन्दा न किया करें, किन्तु मोहम्मद साहब ने उनकी बातों पर ध्यान न दिया। एक दिन उनके अनुयायी "साद" ने उनका पक्ष लेकर एक .कुरैश का सिर फोड़ डाला, जिससे उसका बड़ा मान हुआ और अब तक भी मोहम्मदी लोग उसका नाम बड़े आदर से लेते हैं क्योंकि काफ़िरों के मारने का श्रीगणेश उसी ने सब से प्रथम किया था।

जब मोहम्मद साहब ने अपने चचा "अबिलहब" तक का कहना न माना और अपने बाप-दादाओं के धर्म की निन्दा करते ही रहे तो .कुरैश लोग उनसे बिगड़ गये और उनको मार डालने तक पर उतारू हो गये। उन्होंने मोहम्मद साहब के चचा अबूतालिब के द्वारा भी बहुत कुछ उनको समझाने की चेष्टा की, पर जब नतीजा कुछ न निकला तो उन्होंने मोहम्मदियों के बहिष्कार की घोषणा करदी और एक कागज़ पर लिख कर काबे के द्वार पर लगा दिया। दैवयोग से उस

कागज़ को कीड़ों ने ख़राब कर दिया, इसका पता मोहम्मद साहब को लग गया, अतः आपने अपने चचा अबूतालिब द्वारा क़ुरैशियों से कहला भेजा कि ख़ुदा ने अपने फ़रिश्ते से मुझे ख़बर भेजी है कि वह काग़ज़ ख़राब कर दिया गया है। जब अबूतालिब ने उस कागज़ को ख़राब दशा में देखा तो बहुत ही चकित हुआ और कुरैशियों से सारा हाल कह सुनाया। क़ुरैशी लोग अपने काग़ज़ को फटी हुई दशा में देख मोहम्मद सा० को जादूगर समझने लगे और उनका चचा "हमज़ा" तथा और कुछ लोग भी मोहम्मदी बन गये।

शनैः २ मोहम्मद साहब को अपने धर्म का प्रचार करते दश वर्ष होगये। एक दिन, जब कि उनके चचा अबूतालिब बीमार थे, लोगों ने कहा यदि आपके पास ख़ुदा के पास से समाचार आते हैं तो आप कोई ऐसी औषधि क्यों नहीं मँगा देते जिससे आपके चचा अच्छे होजावें। आपने उत्तर दिया कि "बहिश्त (स्वर्ग) के पदार्थ क़ाफ़िरों को नहीं मिल सकते"। फिर लोगों ने पूछा कि आपके दादा अब्दुलमतब्ल कहां हैं। आपने कहा कि "दोज़ख़ (नर्क) में"। ऐसे अपमानजनक शब्द सुनकर उनके चचा अबूलहब, जो कि मोहम्मदी होगये थे, विमुख होगये और उठकर चलेगये। अबूतालिब की बीमारी बढ़ती गई। एक दिन मोहम्मद साहब ने उनसे कहा "चचा साहेब ! आप मेरा कलमा पढ़लें, जिससे क़यामत के दिन आपका अपराध क्षमा करने के लिए ख़ुदा से प्रार्थना कर सकू"। अबूतालिब ने जवाब दिया कि ऐसा करने से कुरैश लोग हँसी उड़ावेंगे, इसलिये मैं तुम्हारा कहना नहीं मान सकता, इसके पश्चात् थोड़ी देर में अबूतालिब की जान निकल गई। इसको मरे अभी दश दिन भी न हुए थे कि ख़दीजा भी परम धाम को चली गई।

ख़दीजा की मृत्यु के पश्चात् मोहम्मद साहब ने कई अन्य स्त्रियों के साथ विवाह किया उनमें से केवल एक कुंवारी थी बाक़ी सब

विधवा थीं, जिस कुंवारो के साथ आपका विवाह हुआ उसका नाम "आयशा" था। जब कि हज़रत मोहम्मद साहब की आयु पचास वर्ष से अधिक थी।

५—मोहम्मद साहब का मक्का से मदीना भागना।

जब मोहम्मद सा० ने देखा कि कुरैश लोगों के विरोधी होने से मक्का में प्राण बचाना कठिन है तो वह ताईफ़ नगर चले गये, किन्तु यहां से भी लोगों ने पत्थर मारकर निकाल दिया।

वि० संवत् ६७९ में कुछ यात्री मदीना से, जिसका नाम उस समय 'यसरब" था मक्का आये और मोहम्मदी बन गये थे। उन्होंने मोहम्मद साहब का विपत्ति में देख कर कहा कि आप हमारे शहर में आजावें, हम आपकी सेवा और रक्षा करने को तैयार हैं। कुरैश लोगों को जब इस बात का पता लगा कि मोहम्मद सा० भागने वाले हैं, उन्होंने आपके मकान पर पहरा बिठा दिया किन्तु आपने अली इब्ने अबू इब्तालिब को अपनी जगह सुला दिया और आप उसके कपड़े पहने छिप-छिपाकर घर से भाग निकले और अपने एक मित्र "अबूबकर" के साथ सौर नामी पहाड़ी गुफ़ा में जा छिपे। तीन दिन गुफ़ा में रहकर मोहम्मद सा० और अबू बकर मदीने की तरफ रवाना हुए। रास्ते में * एक कुरैश ने मोहम्मद साहब को पहचान लिया और मारने के लिये भाला ताना, किन्तु उसके घोड़े ने ठोकर खाई, जिससे वह पृथ्वी पर गिर पड़ा और मोहम्मद साहब तथा अबूबकर कुशल

* इतिहासकारों का कहना है कि यदि उस कुरैश का वार खाली न जाता तो धर्म के नाम पर रक्तपात न होता और करोड़ों निर्दोष आदमियों के गले पर मोहम्मदी अत्याचारी छुरी न चलतीं।

पूर्वक मदीना जा पहुँचे। मोहम्मद साहब के मक्के से मदीना जाने के समय से मुसलमानों ने अपना नवीन संवत् सन् हिजरी के नाम से जारी किया। मदीना जाकर मोहम्मद साहब ने अपने अनुयायियों के नाम निम्नलिखित घोषणाएं जारी कीं:—

१—जो आदमी मेरे धर्म का प्रचार करना चाहे उसको तर्क वितर्क तथा शास्त्रार्थ के झगड़े में न पड़ना चाहिये, क्योंकि मेरे धर्म में जवाब देने के लिये तलवार ही सब से बड़ी शक्ति है।

२—जो आदमी मेरे धर्म को स्वीकार न करे और उसमें तर्क वितर्क करके किसी प्रकार का सन्देह करे उसका सिर काट देना चाहिये।

३—मेरे धर्म में तलवार ही स्वर्ग की कुञ्जी है। जो मुसलमान मेरा धर्म फैलाने में मरता या मारता है उसके लिये स्वर्ग का द्वार खुला हुआ है, जहां पीने को शराब, खाने को अति स्वादिष्ठ मांस और भोगने को स्त्रियें व लौंडे मिलते हैं।

मदीने में मोहम्मद साहब की शक्ति बहुत बढ़ गई, इसलिये अब उन्होंने अपने शत्रुओं के मुक़ाबिले में चुप रहना अच्छा न समझा और अपने अनुयायियों को काफ़िरों के साथ लड़ने-भिड़ने तथा मारने की स्पष्ट शब्दों में आज्ञा देदी, इसी का फल है कि दस वर्ष के भीतर सत्तर लड़ाइयां व लूटमार की घटनायें माहम्मदियों की ओर से हुईं। कहा जाता है कि इनमें से अधिकांश में मोहम्मद सा० ने स्वयं भाग लिया था।
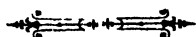
६—नख़ले की डकैती।

एक दिन मोहम्मद सा० को ख़बर लगी कि व्यापारियों के ऊंट माल से लदे हुए ताइफ़ की ओर से मक्का को जा रहे हैं आपने अब्दुल्लाह अपने एक अनुयायी से कहा कि कुछ आदमी लेकर

नखला गांव के समीप किसी निर्जन स्थान में जा बैठो और अवसर मिलने पर व्यापारियों को लूट लो, अब्दुल्लाह आपकी आज्ञानुसार दस बारह आदमी साथ लेकर रवाना हुआ और अपने को यात्री बताकर उन व्यापारियों के साथ हो लिया। रास्ते में एक स्थान पर जब व्यापारियो ने पड़ाव डाला और रोटी बनाने आदि कामों में लग गये, अब्दुल्लाह अपने साथियों सहित उन पर टूट पड़ा और कई एक व्यापारियों को मार डाला, उनका सारा माल लूट लिया और जो व्यापारी बच गये थे उनको क़ैद करके मोहम्मद सा० के सामने ले गया, अब्दुल्लाह ने लूट के माल से पाँचवाँ भाग मोहम्मद सा० के लिये निकाल दिया और बाक़ी आपस में बाँट लिया। मोहम्मद सा० अब्दुल्लाह को इस कार्यवाही पर बहुत .खुश हुए, उसी दिन से मोह-म्मदियों में यह रिवाज जारी किया कि काफ़िरों के लूटने से जो माल हाथ लगे उसमें से पांचवां भाग खलीफ़ा का और बाक़ी लूटने वालों का समझा जावे। मोहम्मद साहब की यह नीति आज तक काम में लाई जाती है। जब नखले की लूट का हाल लोगों को मालूम हुआ तो सारे अरब में हाहाकार मच गया. क्योंकि रजब के पवित्र महीने में लूट मार करना हराम समझा जाता था। इस घटना के कारण बहुत से लोग मोहम्मद साहब से फिर गये; मोहम्मद सा० ने अपना बना-बनाया काम बिगड़ता देख सब लोगों के सामने अब्दु-ल्लाह को दिखावे के रूप में डांटा और पाँचवाँ भाग उसे वापिस कर दिया। कुछ दिन पश्चात् जब मामला ठंडा पड़ गया, आपके पास .खुदा के यहां से समाचार आया कि अब्दुल्लाह निर्दोषी है उसने जो कुछ किया, ठीक किया, तुम पाँचवाँ भाग लेलो, अतः मोहम्मद साहब लूट के माल का पाँचवाँ भाग, जो अब्दुल्लाह का वापस कर दिया था, उसके घर से मँगा लिया।

७—बद्र का युद्ध।

(सं० ६८० वि०)

जब अरब के भूखे और लुटेरे लोगों ने देखा कि नख़ले की डकैती में बहुत सा माल मोहम्मद साहब के हाथ लगा है तो वे धड़ाधड़ उनके अनुयायी बनने लगे और थोड़े ही दिनों में उनकी संख्या दो ढाई सौ के लगभग होगई। नख़ले की डकैती को अभी पूरे दो महीने भी न हुए थे कि मोहम्मद साहब को शाम देश से मक्का वापस आने वाले व्यापारियों का पता लगा, अतः मोहम्मद साहब अपने अनुयायियों सहित उनके लूटने का उपाय सोचने लगे और २१३ आदमियों को साथ लेकर उन व्यापारियों को लूटने के लिये निकल पड़े। व्यापारियों को भी इस बात की ख़बर लग गई। उन्होंने अपने काफ़ले को बचाने के लिये मक्का से मदद मँगवाई। मक्के का हाकिम इस समाचार को पाते ही अपने ९५० योद्धाओं को साथ लेकर काफ़ले की रक्षा के लिये रवाना हुआ, किन्तु क़ाफ़ले वालों से भेंट न हुई क्योंकि अबूसफ़ प्यान दूसरे मार्ग से काफ़ले को निर्विघ्न मक्का ले आया फिर भी मक्के का हाकिम लुटेरों और डाकुओं को नाश करने के लिये आगे बढ़ता ही गया और बद्र के निकट मोहम्मदी लोगों से जा भिड़ा, किन्तु मोहम्मदी लोग ऊंची जगह पर थे उनके पास मीठे पानी का झरना था और सब खा पीकर तैयार थे, इधर हाकिम मक्का के लोग नीची जगह पर थे, रास्ते की थकावट से परेशान थे और पीने के लिये पास पानी भी न था। मोहम्मद साहब इन सब बातों को ताड़ गये थे, उन्होंने अपने दुश्मन को सुस्ताने का अवसर न देकर तुरन्त लड़ाई का नरसिंहा फूंक दिया। घमासान लड़ाई होने लगी, लाशों के ढेर लग गये और यद्यपि मक्का का सरदार मारा गया फिर भी क़ुरैश लोगों के सामने मोहम्मदियों के पैर उखड़ गये और वे भागना ही चाहते थे कि दैवयोग से आंधी

चल पड़ी जिससे .कुरैश लोगों की बड़ी हानि हुई। भयंकर आंधी को देखकर मोहम्मद साहब ने, जो अपने साथियों के पास ही टीले पर बैठे हुए थे, ताली बजाकर यह कहना आरम्भ किया कि .खुदा ने फरिश्तों की फ़ौज हमारी सहायता के लिये भेजदी है, अब हमको डर किस बात का है। मोहम्मद साहब की यह बात सुन .कुरैश लोग भयभीत होकर भागने लगे, क्योंकि वे उनको जादूगर समझते थे। .कुरैश लोगों के भागते ही उनका सारा माल मोहम्मदियों ने लूट लिया। यह लड़ाई अरब के इतिहास में तारीख़ १७ रमज़ान सन् २ हिजरी में शुक्रवार के दिन होना लिखा है। इस लड़ाई में भी लूट के माल का पाँचवाँ हिस्सा मोहम्मद साहब के हाथ लगा।

८—असमा तथा काब का मारा जाना।

जब बहर के युद्धक्षेत्र से मोहम्मद सा० क़ैदियों और लूट के माल सहित मदीना आये तो कई आदमियों ने उन्हें लुटेरा और अत्याचारी कहकर कविता रचनी आरम्भ करदी, जिनके द्वारा लोगों को कहा जाता कि .खूनी डाकुओं की बात मत मानो और उनका धर्म मत स्वीकार करो। यह कविताएं असमा नामक स्त्री, अबू अफ़क़ नाम यहूदी और काब इब्ने अशरफ़ ने बनाई थीं। जब यह कविताएं मदीने की गली-गली में गाई जाने लगीं और उनसे लोगों में मोहम्मद साहब के प्रति घृणा उत्पन्न होने लगी तो मोहम्मद सा० ने उनके क़त्ल करने के लिये अपने शिष्यों को आज्ञा दी।

असमा के कत्ल करने का काम अमीर इब्ने आदि को सौंपा गया, वह एक रात असमा के घर में घुस गया और किसी गुप्त स्थान में छिपा रहा, जब आधी रात हुई और मुहल्ले के सब आदमी सो गये, उसने असमा को, जब कि वह गहरी नींद में सो रही थी

और एक छोटा सा बच्चा उसकी छाती पर दूध पी रहा था, बच्चे का अस्मा का छाती पर से उठाकर पृथ्वी पर दे मारा और अस्मा के पेट में छुरी भोंक दी और वहां से निकल कर मोहम्मद साहब के पास जा पहुँचा। अमीर की इस कारवाई से मोहम्मद सा० बहुत प्रसन्न हुए और उसको धन्यवाद देते हुए बहुत सराहा।

अमीर ने पूछा कि अस्मा के मारने का मुझको पाप तो नहीं लगा। मोहम्मद साहब ने कहा कि कुछ भी नहीं और उपस्थित शिष्यों से कहा कि अब ख़ुदा और रसूल की सेवा करनी हो तो अमीर की याद कर लिया करो।

अमीर की प्रशंसा में हसनान नामी अरबी महाकवि ने एक बहुत बड़ा ग्रन्थ भी रच डाला।

काब की कविता से भी मोहम्मद साहब के प्रति बहुत घृणा उत्पन्न हो गई थी अतः मोहम्मद साहब ने मोहम्मद इब्ने मुस्लिमा से कहा कि जिस तरह हो सके इसको यमपुर भेजदो।

मोहम्मद इब्ने मुस्लिमा अपने कई साथियों को लेकर काब के मारने को रवाना हुआ। वह काब को घर से कुछ आवश्यक बातों के बहाने जङ्गल ले गया और वहां अपने साथियो को, जो पहले से उसकी ताक में बिठा दिये गये थे, इशारा किया। वे सब इशारा पाते ही काब पर टूट पड़े और उसका सिर काट लिया। सिर को लेकर मोहम्मद इब्ने मुस्लिमा मोहम्मद साहब के पास पहुँचा। मोहम्मद सा० ने उसकी प्रशंसा की और कुछ इनाम देकर विदा कर दिया।

६—अबू अफ़क़ का वध।

मदीने का अबू अफक़ १२० वर्ष की उमर का बुड्ढा था, वह आदमियों को मोहम्मदी बनने से रोकता था। बद्र की लड़ाई के बाद इसने भी लूट और डकैती की बुराई में किताबें रची, जो घर-

घर और गली-गली गाई जाने लगीं। मोहम्मद साहब ने इन कविताओं को सुनकर कहा कि क्या कोई .खुदा का प्यारा अबू अफ़क़ का मुँह बन्द नहीं कर सकता। सालिमा इब्ने अमीर ने कहा—"मैं बन्द कर दूंगा।" अस्तु एक दिन रात के समय सालिमा अबू अफ़क़ के घर जा घुसा और सोती दशा में बुड्ढे, अबू अफ़क़ का सिर काटकर मोहम्मद साहब के पास ले गया। मोहम्मद साहब ने उसकी बहादुरी की बड़ी प्रशंसा की।

१०—यहूदियों का निकाला जाना।

मदीने के पास क़ानका नाम का एक गांव था, वहां किसी एक मोहम्मदी स्त्री के साथ एक यहूदी ने ठट्ठा कर दिया, जिसके कारण कई मोहम्मदियों ने उसका सर उतार लिया। यहूदी के मरने का समाचार पाकर उसके कई भाई-बन्द आगये और उन्होंने उस घातक का सिर काट लिया। जब मोहम्मद साहब को इस घटना का हाल मालूम हुआ तो उन्होंने उनके गांव को घेर लिया और उनके माल-असबाब पर क़बज़ा करके उन्हें बाहर निकलने पर विवश किया। जब वे अपना माल-असबाब छोड़कर बाहर निकले तो उनको क़ैद कर लिया और कहा कि या तो मुसलमान हो जाओ या क़त्ल होना स्वीकार करो। यहूदियों ने धर्म छोड़ना स्वीकार नहीं किया और मरने के लिये तैयार हो गये, परन्तु ओबई नामक एक मोहम्मदी की सिफ़ारिश से उनको इस शर्त पर छोड़ दिया गया कि वे अरब से कहीं बाहर जा बसें।

रबाई का युद्ध

सं० ६८२ वि०

यहूदियों की दो जातियां बनी करीज़ा और बनी नज़ीर मदीना के समीप रहती थीं। इनमें से बनी नज़ीर के लोग बड़े धनाढ्य थे,

उनका क़िला मदीना से ३ कोस के फ़ासले पर था। एक दिन आमीर नामी एक मोहम्मदी को किसी ने मार डाला, उसकी बदौलत बनी नज़ीर के लोगों को लूटने का जाल बिछाया गया। मोहम्मद साहब ने बनी नज़ीर के किले को घेर लिया। अधिक काल तक भोजन न मिलने के कारण बनी नज़ीर के लोगों ने हथियार डाल दिये, मोहम्मद साहब ने उनको इस शर्त पर माफ़ी दी कि वे अपना सब माल असबाब छोड़ बिला शस्त्र साथ लिये बनी नज़ीर को खाली करके बाहर चले जायें। जब वे लोग निकल गये, मोहम्मद साहब ने उनके सारे माल पर अपना अधिकार जमा लिया। जब उनके साथियों ने बटवारे की बात छेड़ी तो आपने कहा कि माल वह बांटा जाता है जो लड़ाई में हाथ लगे, बनी नज़ीर के साथ लड़ाई नहीं हुई, इसलिये यह सारा माल ख़ुदा व उसके रसूल का है। अलबत्ता बनी नज़ीर के घर आप लोगों को दिये जाते हैं।
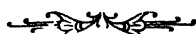
१२—अहद की लड़ाई।

बद्र के युद्धक्षेत्र में क़ुरैश लोगों का सरदार अबू सफ़ियान घायल होकर घर भाग आया। उसकी स्त्री हिन्दा ने अपनी चूड़ी उसके सामने रखदी और कहा कि निर्लज्ज कायर! इनको पहिन ले और अपनी तलवार मुझको दे दे। अबू सफ़ियान ने उसको धैर्य देते हुए कहा कि मेरे घाव भर जाने दो, फिर जो तुम्हारी इच्छा हो सो कहना। दो तीन महीने पीछे जब अबू सफ़ियान के घाव अच्छे हो गये उसने तीन हज़ार योद्धाओं को इकट्ठा किया। हिन्दा ने भी १५-१६ स्त्रियों सहित युद्ध क्षेत्र में पहुँचने की ठानी।

इस ख़बर के पाते ही मोहम्मद साहब ने अपने सरदारों को बुलाया और कहा कि हमारी शक्ति सन्मुख लड़ने की नहीं है। घरों

की छतों पर ईंट पत्थर इकट्ठे कर लिये जांय और स्त्री बच्चों को वहां इस अभिप्राय से खड़ा कर दिया जाय कि जब .कुरैश नगर में प्रवेश करें, वे उनका पत्थर से सिर फोड़ दें, साथ ही साथ मर्द लोग गलियों में युद्ध करें। किन्तु मोहम्मद साहब के सरदारों ने उनकी यह सलाह पसन्द नहीं की, अतः उनकी इच्छानुसार मोहम्मद साहब ७०० आदमियों को साथ लेकर अहद नाम की पहाड़ी पर जो मदीना से ६ मील के फ़ासिले पर है जा डटे। अबू सफ़ियान की सेना भी उसी पहाड़ी के समीप पड़ी थी। थोड़ी देर बाद लड़ाई आरम्भ हो गई, लड़ाई ने भयङ्कर रूप धारण कर लिया, .कुरैश वीरों के आक्रमण को मोहम्मदी लोग सहन न कर सके और भाग निकले। इसी बीच ओवई इब्ने खलक़ नङ्गी तलवार हाथ में लिये हुए ललकार कर कहने लगा कि—"मोहम्मद किधर चला गया, सामने क्यों नहीं आता ?" मोहम्मद साहब ने जो पास ही खड़े थे ओवई की गर्दन में एक बर्छी मारी, जिससे ओवई मुर्दा होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। *

ओवई के गिरते ही इब्ने कुमय्या ने मोहम्मद के सिर पर तलवार मारी परन्तु हाथ ओछा पड़ा, तथापि तलवार के झटके से मोहम्मद साहब एक गड़हे में गिर पड़े। गड़हे में गिरना था कि इब्ने कुमय्या ने पत्थर मार कर उनके दांत तोड़ दिये। कुमय्या गड़हे में जाकर शिर काटने को था कि ख़दीजा का भाई आ पहुँचा और मोहम्मद साहब को गड़हे से निकाल दिया। मोहम्मद साहब ने बहुत कुछ चेष्टा अपने सैनिकों के ठहराने की की और सहायता के लिये फरिश्तों के आने आदि का विश्वास दिलाया, परन्तु किसी

* बहुत से मोहम्मदी लोग कहा करते हैं कि मोहम्मद साहब ने सारी उम्र हथियार नहीं चलाया, उनका यह कथन इस घटना से बिलकुल झूंठ सिद्ध हो जाता है।

ने कुछ न सुना और जिसको जिधर रास्ता मिला भाग निकला। इस युद्ध में .कुरैश ने अद्भुत विजय प्राप्त की और मोहम्मदियों को बहुत नीचा देखना पड़ा।

संवत् ६८४ में मोहम्मद साहब ने बनी मस्तलक़ पर चढ़ाई की। मस्तलक़ का सरदार हारिस इब्ने जरार युद्ध के आरम्भ में ही मारा गया, उसकी बेटी जवैशिया लूट में क़ैद हो गई। लूट का माल बांटते समय जवैशिया सावित इब्ने अनीस के हिस्से में आई, परन्तु मोहम्मद साहब ने रुपया देकर अपने हिस्से में ले लिया। इसी युद्ध के पश्चात् यह दुर्घटना भी हुई, जिससे मोहम्मद साहब की प्रियतमा बीबी आयशा के आचार पर बहुत से लोगो में असन्तोष फैल गया, हज़रत अली व बीबी आयशा में जन्म भर के लिये वैर भाव हो गया और अन्त में .खुदा ने जिबराइल फरिश्ते के द्वारा बीबी आयशा को निर्दोष बतलाया।

१३—पुत्रवधू के साथ मोहम्मद सा० का विवाह

मोहम्मद साहब के घर दो लड़के क़ासिम और तैयब ताहिर खदीजा के पेट से और इब्राहीम मारया कुवतिया के पेट से पैदा हुए थे। परन्तु तीनों बाल्यावस्था में ही मर गये। मोहम्मद साहब की प्रथम स्त्री खदीजा के पास जैद इब्ने हारिस नाम का एक होनहार गुलाम था। जब खदीजा का ब्याह मोहम्मद साहब के साथ हुआ, उसने जैद को अपने पति की सेवा में छोड़ दिया, किन्तु मोहम्मद साहब ने उसकी योग्यता और सेवा से प्रसन्न होकर उसको गोद ले लिया और उस दिन से वह जैद इब्ने मोहम्मद (अर्थात् मोहम्मद साहब का बेटा) कहा जाने लगा। मोहम्मद साहब ने उसका विवाह एक बहुत ही सुन्दर रूपवती युवति के साथ, जिसका नाम जैनब था, कर दिया।

एक दिन मोहम्मद साहब जैद के घर गये, उस समय जैद घर पर नहीं था, केवल उसकी स्त्री जैनब थी, उसको देखते ही मोहम्मद साहब उस पर मोहित हो गये। जब जैनब का पति घर आया उस ने उससे मोहम्मद साहब के आने और उनके वाक्यों को कह सुनाया। जैद यह बात भली प्रकार से जानता था कि रूपवती स्त्री को देखकर मोहम्मद साहब की विषय-कामना बहुत जल्द भड़क उठती है, उसने बड़े विनय के साथ मोहम्मद साहब से कहा- "पिताजी आप हर्ष के साथ जैनब को ग्रहण करलें, मैं उसे तलाक़ देदूंगा"। मोहम्मद साहब ने कहा कि ऐसा करना मर्य्यादा और आचार के विरुद्ध है। परन्तु थोड़े दिनों बाद ही फिर कहा कि— "ख़ुदा ने जैनब का विवाह हमारे साथ मंजूर कर लिया है, गोद लिया हुआ लड़का बेटा नहीं हो सकता, उसकी स्त्री के साथ विवाह करने में कुछ दोष नहीं है"। ख़ुदा की मंजूरी आने पर जैद ने जैनब को तलाक़ दे दिया और मोहम्मद साहब ने उसके साथ अपना विवाह कर लिया। जैनब स्त्रियों से बड़े गर्व के साथ कहा करती थीं कि तुम्हारा ब्याह तो आदमियों ने किया है, मेरा ब्याह ख़ुदा ने किया है, मेरी और तुम्हारी क्या बराबरी।
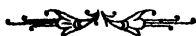
१४—मक्का पर अधिकार।

(सं० ६८५ वि०)

संवत् ६८५ में मोहम्मद सा० ने मक्का जाने का विचार किया। मदीने की रक्षा पर अब्दुल्ला इब्नेकुम् मकतूब को छोड़ा और सत्तर ऊंट बलिदान को साथ लेकर रवाना हुए, उस समय काबे* के मन्दिर में

* नीमर एक जर्मन यात्री ने आज से बहुत दिन पहले अरब की यात्रा की थी, उसने लिखा है कि काबा भारत के प्राचीन मन्दिरों और शामदेश के देवालयों से बहुत कुछ मिलता जुलता है और मुसलमान [illegible]लीन मस-

३६० मूर्तियां रक्खी हुई थीं। मोहम्मद सा० ने अपने अनुयायियों से कहा कि मक्का पहुंचते ही सारी मूर्तियों को खंड २ कर देना। यह खबर मक्का के सरदार अबू सुफियाह को भी मिल गई। उसने कुरैश लोगों से सलाह करके मोहम्मद सा० को मक्का आने से रोकना चाहा, इसी बीच मोहम्मद सा० अपने दल-बल समेत मक्का के पास पहुँच गये, किन्तु सरदार मक्का के साथ संधि होजाने के कारण रास्ते से ही उन्हें मदीना लौटना पड़ा। कुछ काल पश्चात् मक्का के बहुत से लोग मोहम्मद सा० से मिल गये और मोहम्मद साहब ने अपने सैनिकों के साथ मक्का पर चढ़ाई करदी। लड़ाई बड़ी घमासान हुई, किन्तु कुरैश के कुछ लोग मोहम्मद साहब से छुपे छुपे मिले थे, इस कारण मोहम्मद साहब की विजय हुई और अबू सुफयान गिरफ्तार होगया। उसके सामने भी वही "कलमा पढ़ो या गर्दन दो" का प्रश्न रक्खा गया। अबू सुफियान ने अपनी जान बचाने के लिये कलमा पढ़ कर इस्लाम धर्म्म स्वीकार किया।

मोहम्मद सा० बड़ी शान व शौकत के साथ दाखिल हुए। उसके एक साथी खालिक़ इब्ने वलीद ने कत्ले आम शुरू कर दिया और हजारों निर्दोषी तथा असहाय आदमियों का सिर काट डाला। जब मोहम्मद सा० काबे के पास मन्दिर में पहुँचे, ३६० मूर्तियों को टुकड़े २ कर डाला और दिवारों पर जो तस्वीर बनी थीं उन्हें धुलवा डाला और इस तरह हजारों वर्ष की मेहनत व कारीगरी को धूल में मिलवा दिया।

काबा की मूर्तियों को तोड़ने और मार-धाड़ के पश्चात् कई साथी आस पास के गांव में लूटने और मूर्तियां तोड़ने के लिये भेजे गये।

जिदों से कम मिलता है क्योंकि यह भवन चौकोर खुले हुए छत का है, इसके चारों और खम्भे और मीनार हैं इसी घर के भीतर नमाज़ के लिये कई मसजिदें हैं और भीतर ही एक चौकोर स्थान है उसी को वस्तुतः 'काबा' कहते हैं।

जिस समय नखला ग्राम की अज्जा नाम की मूर्ति तोड़ी गई, मन्दिर से एक पुजारिन स्त्री रोती और चिल्लाती हुई निकली। खालिक़ इब्ने वलीद ने उस स्त्री के भी अपनी तलवारसे टुकड़े २ कर डाले *।
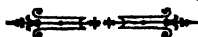
१५—हनीम का युद्ध।

(सं० ६८८ वि०)

प्रधान नगर मक्का और काबे के मन्दिर पर मोहम्मद सा० का अधिकार होने से अरब की अन्य बहुत सी जातियां भी मोहम्मदी बन गईं, किन्तु कुछ वंश ऐसे भी थे जिन्होंने मोहम्मद सा० की प्रभुता स्वीकार नहीं की थी, यह लोग बनीहवाज़िन, सतीफ़, जसर और साद के वंश थे, इनके साथ कई पहाड़ी जातियां भी मिल गईं थीं। मोहम्मदियों के अत्याचार और लूट मार को दिन-प्रति-दिन बढ़ता देख इन जातियों ने संगठित होकर अपनी रक्षा का प्रबन्ध किया। जब मोहम्मद सा० को इनके संगठन का हाल मालूम हुआ, १२०० हज़ार सवार साथ लेकर हनीम की घाटी में जा पहुँचे, परन्तु ऊपर से तीर और पत्थरों की मार से बहुत से मोहम्मदी मारे गये, बहुत से घायल हुए और शेष भाग निकले। मोहम्मद सा० ने ख़ुदा और रसूल को क़सम खिलाई, मदद के लिए फ़रिश्तों के आने का विश्वास दिया, और बिहिश्त (स्वर्ग की) हूरों का लालच भी दिया, परन्तु सैनिकों ने एक बात भी न सुनी और जिसको जिधर को रास्ता मिला भाग निकला, परन्तु मोहम्मद साहब के 'अल्लाहो अकबर' कह कर पुकारने से मोहम्मदी लोग पीछे वापस आये, उधर शत्रुओं ने अपनी जीत समझ कर पहाड़ी से नीचे उतरना आरम्भ

* मुसलमान लोग कहते हैं कि इस्लाम धर्म में स्त्रियों का मारना हराम है किन्तु मो० ख़ालिक को इस काररवाई पर मो० सा० ने नाराज़ होने के बदले यह कहा कि वह स्त्री साक्षात् अज्जा (१०) देवी थी।

किया, उनके साथ स्त्री बच्चे भी थे, जब वे सब नीचे उतर आये, मोहम्मद साहब ने अपने बचे-खुचे सवारों को लेकर फिर आक्रमण किया, इस बार इनको जगह अच्छी मिल गई और शत्रुओं के साथ स्त्री और बच्चे होने से लड़ाई के लिये कई असुविधायें उपस्थित होगई, जसके कारण विजय मोहम्मद सा० को नसीब हुई। इस लड़ाई में जहां शत्रुओं को बहुत क्षति हुई वहां मोहम्मद साहब के भी बहुत से बड़े २ सरदार मारे गये।

जब मोहम्मदी सिपाही लूट का माल इकट्ठा कर रहें थे रबीया इब्ने रफ़ी ने एक डोली जाती हुई देखी। डोली में कोई युवती होगी, ऐसा समझ उसके पीछे अपना घोड़ा दौड़ाया, परन्तु जब निकट पहुँचा तो एक बुड्ढा दिखाई दिया। रबीया ने जाते ही तलवार का वार बुड्ढे पर किया, परन्तु तलवार टूट गई, बुड्ढे ने हंस कर कहा "बेटा दुःख की बात है कि तेरे मां बाप ने तुझे अच्छी तलवार नहीं दी, मेरी काठी से तलवार लटक रही है, उसे ले आ और अपना काम कर।" रबीया ने उसकी तलवार निकाल ली और वार करने लगा। बुड्ढे ने कहा कि "अपनी मां से यह जरूर कह देना कि मैं दुरैव इब्ने सुम्मा को मार कर आया हूँ।" रबीया ने कहा अच्छा कह दूंगा और बुड्ढे का सिर तन से अलग कर दिया। जब घर जाकर उसने अपनी मां से यह बात कही तो मां ने कहा—अरे निर्लज्ज, नीच! मुझको मुँह मत दिखा, दुष्ट! तू ने मां बाप के नाम पर कलंक लगाया, पापी कुत्ते! जिस सज्जन को तूने मारा है, उसने तीन बार मेरी और तेरी दादी की इज्जत दुश्मनों से बचाई थी। रबीया ने मुंह फेर कर कहा, इस्लाम काफ़िर के गुण और एहसान नहीं मानता।

हनीम के युद्ध में जो स्त्री कैद होगई थीं, उनमें से बहुत सी सोहागिन थीं। सोहागिन स्त्री के साथ उस समय भोग-विलास करना व्यभिचार समझा जाता था, अतः मोहम्मद सा० के खुदा ने उनके पास

वही (समाचार) भेज दिया कि सोहागिन स्त्रियों को पहले दासी बना लो, फिर उनको अपने काम में लाओ। इस खुदाई हुक्म के आते ही वह सोहागिन स्त्रियें सिपाहियों में बांट दी गई।

१६—विदेशियों पर आक्रमण।

जब सारे अरब में इस्लाम धर्म स्थापित होगया और अरब की भिन्न २ जातियों ने, जो अब तक एक दूसरे का गला काटती रहती थीं, मोहम्मदी झण्डे के तले राष्ट्रीय रूप धारण कर लिया, तो मोहम्मद सा० ने उनसे कहा कि अरब से बाहर जाकर मेरे धर्म का प्रचार करो। अतएव सब ने मिलकर पहिले शाम देश पर हमला किया, यह देश उस समय ईसाई बादशाह हरकुल के शासन में था, शाम देश के दो एक ग्रामों में उन्होंने लूट मार आरम्भ ही की थी कि हरकुल एक लाख फौज लेकर इन लुटेरों को मार भगाने के लिये चढ़ आया। उसके आने का खबर सुनकर मोहम्मदी लोग पीछे लौट आये और मक्का में निम्न लिखित घोषणा कराई:—

"जिन लोगों ने अरब देश में अब तक इस्लाम धर्म स्वीकार नहीं किया उनको चाहिये कि या तो चार महीने के भीतर मोहम्मदी क़लमा पढ़लें या देश से निकल जांय। चार महीने के बाद यदि कोई काफ़िर अरब में दिखाई देगा तो उसका सिर काट लिया जायगा। तीर्थ स्थानों और मन्दिरों में रहने से भी, जहां अब तक आदमी का मारा जाना हराम समझा जाता था, कोई नहां बच सकेगा। यह आज्ञा खुदा की तरफ़ से है, मुसलमानों को इसका पालन जी जान से करना चाहिये और अपने भाइयों, सम्बन्धियों और मित्रों का भी लिहाज़ नहीं करना चाहिये।"

अरब देश में अब तक यमन प्रान्त मोहम्मदी नहीं बना था, उसको अपना अनुयायी बनाने के लिये मोहम्मद साहब ने अली

इब्ने अबि तालिब को भेजा। यमन देश के विद्वान् लोगों ने हजरत अली से निम्नलिखित पांच प्रश्न किये: —

(१) खुदा ने नेस्त से हस्त कैसे कर दिया अर्थात् अभाव से भाव कैसे होगया ?

(२) आसमान क्या चीज है, उसमें बुर्राक़ पर चढ़ कर मोहम्मद सा० किस तरह खुदा के पास गये ?

(३) जब खुदा शरीरधारी नहीं है तो उसने मोहम्मद साहब से कैसे बात की ?

(४) जब आदमी कर्म करने में स्वतंत्र नहीं है और अच्छा या बुरा कर्म खुदा की आज्ञा से ही करता है तो फिर क़यामत के दिन इन्साफ़ किस बात का होगा और कोई बहिश्त में कोई दोजख में क्यों भेजा जायगा ?

(५) जब ख़ुदा काफ़िरों को पसंद नहीं करता तो उनको पैदा क्यों करता है ?

हजरत अली ने तलवार निकाल कर कहा कि इस्लाम धर्म में जवाब इसी से दिया जाता है। यह कह कर २०, २५ पंडितों का सिर उतार डाला। इस खबर के पाते ही सारा प्रान्त भयभीत हो गया और मोहम्मदी कल्मा पढ़ कर अपनी जान बचाई, यमन प्रान्त को हजरत अली मोहम्मदी बनाकर मदीना चले गये।

१७—मोहम्मद साहब की मृत्यु.

(सं० ६८९ वि०)

मोहम्मद सा० अपनी मृत्यु का समय निकट देखकर एक लाख आदमियों सहित हज के लिये रवाना हुये। मक्का पहुँच कर काबे की परिक्रमा की और अपने अनुयायियों से कहा कि "तुम्हारा धार्मिक कर्त्तव्य है कि एक दूसरे की सहायता करो, एक मुसलमान दूसरे

मुसलमान को मारना हराम समझे और क़ुरान के सिवा किसी धार्मिक पुस्तक को न माने, काफ़िर को या तो देश से निकाल दे या क़त्ल कर डाले। मृत्यु के चार पांच दिन पहले ज्वर ने मोहम्मद सा० के शरीर पर बहुत कोप किया यहां तक कि सन्निपात होगया और तारीख़ ८ जून सन् ६२५ ई० को इस लोक से सिधार गये।

मोहम्मद साहब के जीवन के विषय में मुख्य मुख्य पाश्चात्य इतिहासकारों की सम्मतियां निम्न प्रकार से हैं:—

डा० फ़ाउंडर 'मीज़ानुल हक़' नाम की पुस्तक में लिखते हैं कि "जो आदमी क़ुरान के पढ़ने की चेष्टा करेगा, उसको निश्चय रूप से विश्वास हो जायगा कि मोहम्मद सा० का हृदय विषय भोग और काम इच्छाओं से भरा हुआ था। उसने चार स्त्रियों पर भी संतोष नहीं किया और अपने लिये अधिक रखने को आयत बनाई। ऐसे पैग़म्बर के लिये हम क्या कहें जिसने अपनी विषय वासना को पूरा करने और अपने दुराचारों पर परदा डालने के लिये यह लिख मारा कि ख़ुदा ने मुझको मर्यादा से बाहर जाने की आज्ञा दी है और शपथ का भंग कर देना मेरे लिये अनुचित नहीं है, यहां तक कि पराई स्त्री का भोगना भी मेरे लिये पाप नहीं रक्खा गया। ... ." इन सब बातों से पाया जाता है कि मोहम्मद साहब ने अपने पास ख़ुदा की तरफ़ से समाचार आने की जो डींग मारी है वह झूंठी है। अतएव उसकी अन्य बातों पर भी विश्वास न न करना चाहिये।

डाक्टर मिरचिल लिखते हैं कि—"क़ुरान की बातें अधिकांश में दर्शन ज्ञान और बुद्धि से बाहर की हैं, उनकी शिक्षा केवल ज्ञान और विज्ञान के बाहर ही नहीं है अपितु उससे अवश्यमेव बुराई उत्पन्न होती है। जिस धर्म ने रक्त-पात की आज्ञा दी, जिसका आदि और अन्त अत्यन्त भोग-विलास के साथ हुआ उसी का नाम इस्लाम है।"

डा० फोरमैन लिखते हैं कि "जो आदमी .कुरान को पढ़ कर उसके ऊपर चलते हैं, वे अवश्यमेव निर्दयी और कामी बन जाते हैं, क्योंकि .कुरान आदमियों को नीच समझने, काफ़िरों को मारने, दास दासी बनाने, उनसे भोग करने, चार स्त्रियों से विवाह करने और बिहिश्त में विषय कामनाओं के करने की स्पष्ट शब्दों में आज्ञा देता है।"

डा० स्प्रिन्जर लिखते हैं—"मोहम्मद ने अपने दुराचार, हठ-धर्मी और कपट से सारी धार्मिक शिक्षा को बिगाड़ दिया। .कुरान में जितनी घृणित बातें हैं सब मोहम्मद की बनाई हुई हैं"।

डा० सेल (Sale) लिखते हैं—"जो क्षति बड़े २ मनोहर गिर-जाओंके तोड़ने से हुई और जो मनुष्य-हत्याओं की भयानक घटनायें मोहम्मद की तरफ से की गईं उनको देखते हुये यदि आदमी मोह-म्मद के जीवन चरित्र को बहुत ही बुरा समझे तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है। जो हानि मोहम्मद ने ईसाई धर्म को पहुँचाई वह उसकी मूर्खता के कारण हुई। इसमें कुछ संदेह नहीं कि मोहम्मद की इच्छा दुनियाँ में बड़ा आदमी बनने की थी, इस इच्छा को वह किसी अवस्था में पूरा नहीं कर सकता था, सिवाय इसके कि अपने को .खुदा का रसूल प्रकट करे और वह भी कपट के साथ। मोहम्मद स्त्रियों का बड़ा प्रेमी था, इस विषय में इतिहासकारों ने उसको बहुत बुरा लिखा है। कितनी स्त्रियों के साथ उसने भोग विलास किया, उनकी ठीक गिनती आजतक मालूम नहीं हुई। इन बातों से पाया जाता है कि वह बड़ा बदकार और धूर्त आदमी था"।

डा० इलफ़िंस्टन साहब लिखते हैं—"मोहम्मद अधिकाँश में अपना धर्म फैलाने में कपट से काम लेता था, ऐसा काम करने से कुछ दिनों बाद उसके स्वभाव में कपट और धूर्त्तता आई थी, उस पर भी वह अपना काम हठधर्मी से निकालता था, उसकी हठधर्मी और धार्मिक सिद्धान्तों का अभिप्राय कुछ ही क्यों न हो, किन्तु जिस पक्षपात

से मोहम्मद ने अपने धर्म का प्रचार किया और जो अत्याचार या रक्तपात उसने कराये और जो आगे के लिये सिद्धान्त नियत होगये, उनसे यह बात सिद्ध होती है कि मोहम्मद मनुष्य जाति का महा-भयानक और निर्दयी शत्रु था"।

दर्शनशास्त्र के पंडित टामस कारलाइल लिखते हैं—"जो आदमी कभी नहीं हंसता उसकी सारी उम्र राजद्रोह, जोड़ तोड़ और लूट मार में व्यतीत होती है, मोहम्मद इन गुणों में पूर्ण उतरा"।

मौलवी इम्दाद उद्दीन लिखते हैं कि—"बाल अवस्था में मोहम्मद अंगूठा चूंसता तो उससे दूध निकलता था, यह चिन्ह रक्तपात करने वालों का होता है"।

कप्तान विलियम राबर्टसन लिखते हैं कि "क्या यह क़ुरान ही की गंदी शिक्षा नहीं है जो मोहम्मदियों को यहूदी, ईसाई और मूर्ति-पूजकों को क़त्ल करने के लिये उभारती है और स्त्री बच्चों को दास दासी बनाकर भाग में लाने की आज्ञा देते हुए बिहिश्त में अप्सराओं और लौंडों के साथ मज़ा लूटने का सबक पढ़ाती है ? हम पूछना चाहते हैं कि क़ुरान की गन्दी शिक्षा के सिवाय वह कौनसी बात थी जो मोहम्मदियों को सारे संसार में लूट-खसोट मचाने और रक्त-पात करने को भड़काती है ? हम इन प्रश्नों का उत्तर पाने की मोह-म्मदियों की तरफ़ से आशा रखते हैं"।

आर्थर गिलमैन लिखते हैं कि "क़ुरान के देखने से पाया जाता है कि उसमें बहुत सी ऐसी आज्ञायें हैं जो मोहम्मदियों को काफिरों के साथ मेल नहीं होने देतीं और उनको खून-ख़राबी करने को भड़-काती हैं। कुछ आज्ञायें इस प्रकार हैं:—

१—ख़ुदा की राह में लड़ो और क़ाफिरों को जहां कहीं देखो मार डालो।

२—जब तुम काफ़िरों से मिलो उनका सिर उड़ादो यहां तक कि तुम

सब का नाश करदो या रस्से बांध कर क़ैद करलो। जो मुसल-मान .खुदा की राह में लड़ कर मारे जाते हैं, उनका काम निष्फल नहीं जाता।

३—.खुदा ने तुम्हारे लिये बहुत धन लूट में देने का वचन दिया है, लूट का धन .खुदा और रसूल का है।

४—ऐ मुसलमानो! मेरे और अपने शत्रुओं को मित्र मत बनाओ, यदि तुम काफ़िरों पर दया करोगे तो वे तुम्हारे सच्चे धर्म को ग्रहण नहीं करेंगे, वे तुमको और तुम्हारे रसूल को झुठलायेंगे, क्योंकि तुम्हारा .खुदा पर विश्वास है।

५—जब तुम इस्लाम के निमित्त घर से लड़ने के लिये बाहर जाओगे तो क्या काफ़िर पर दया करोगे? जो कुछ तुम अपने हृदय में छिपाते हो, मैं उसको जानता हूँ और जो तुम प्रकट करते हो, उसको भी जनता हूं जो मुसलमान काफ़िर के लिये ममता करता है वह सत्य मार्ग से भटक जाता है।

६—जहां कहीं काफ़िरों को देखो मार डालो, क़ैद करलो, घेर लो, घात लगा कर बैठ जाओ, काफ़िरों और खुदा के रसूल के साथ मित्रता नहीं हो सकती। यदि तुम पक्के मुसलमान हो ता काफ़िरों को कत्ल करडालो।

७—यदि काफ़िर तुम्हारे बाप और भाई भी हों और तुम्हारे सच्चे धर्म को अङ्गीकार न करें तो भी उनके साथ मेल मत करो।

८—निसंदेह काफ़िर अछूत हैं, उनपर प्रत्येक मास में आक्रमण करो।

९—लड़ो! लड़ो!! लड़ो!!! काफ़िरों को तीर्थयात्रा मत करने दो, उनके साथ विश्वास मत करो, सरल उपायों से उनको मारो, धोखा देकर उनको बहकाओ, सब नियम भङ्ग कर दो, चाहे खून का हो, मित्रता का हो या मनुष्यता का हो, .खुदा और रसूल के नाम पर काफ़िरों का नाम पृथ्वी के पर्दे से मिटादो।

मोहम्मदी लोग कहते हैं कि मोहम्मद सहब ने बहुत सी ऐसी बातें कर दिखाई, जो प्रकृति के विरुद्ध थीं, जैस घोड़े पर चढ़ कर .खुदा से बातें करने के लिये सातवें आसमान पर जाना और बातें करना, उंगली के संकेत से चन्द्रमा के दो टुकड़े कर देना, कङ्कर पत्थरों का कल्मा पढ़ना और मुर्दों का जिलाना इत्यादि, परन्तु यह सब मौलवियों की झूठी बनाई बातें हैं। मोहम्मद सा० में कोई सिद्धि नहीं थीं और न उन्होंने कोई दिखाई, क्योंकि .कुरान में स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि .खुदा ने मोजज़े भेजना बन्द कर दिये और मोहम्मद साहब ने खुद स्वीकार किया है कि मैं तुम्हारे जैसा आदमी हूँ, मेरे में कोई सिद्धि नहीं है।

१८—.कुरान की मुख्य मुख्य बातें

(१) .खुदा सब से बड़ा कपटी है।

(२) काफ़िरों के दिल में बीमारी है, .खुदा उस बीमारी को बढ़ाता रहता है।

(३) .खुदा आदमी को बहका देता है।

(४) .खुदा जिसका बहकाना चाहता है उसकी छाती घोंट देता है।

(५) .खुदा जिसको सुमार्ग दिखाना चाहता है उसकी छाती खोल देता है।

(६) .खुदा ने काफ़िरों की गर्दन में भारी भारी जंजीर डाल रक्खी हैं, जो ठोडी तक लटकती हैं इनसे वे शिर उठाये और आंखें बन्द किये पड़े रहते हैं।

(७) .खुदा ने काफ़िरों के हृदय पर मोहर लगा रक्खी है।

(८) .खुदा ने काफ़िरों की आंखों और कानों पर पट्टी बांध रक्खी है, जिससे न तो वे देख सकते हैं और न सुन सकते हैं।

(९) अगर .खुदा चाहता तो सबको सीधा रास्ता दिखा देता।

(१०) अगर ख़ुदा चाहता तो काफ़िर कुफ्र न करते।
(११) जिसको चाहे ख़ुदा छोड़ देता है और जिसको चाहे सजा देता है।
(१२) ख़ुदा द्वैतवादी (मुशरिक) को नहीं छोड़ता और जिस को चाहे क्षमा कर सकता है।
(१३) ख़ुदा काफ़िरों पर गन्दगी फेंकता रहता है।
(१४) जिसको ख़ुदा बहका देता है, उसको कोई रास्ता नहीं दिखा सकता।
(१५) अगर ख़ुदा चाहता तो सबको एक सम्प्रदाय बना देता मगर जिसको वह चाहे बहका देता है और जिसको चाहे रास्ता दिखा देता है।
(१६) जिस को ख़ुदा बहका देता है, उसको कोई आदमी चेष्टा करके भी सीधा रास्ता नहीं दिखा सकता।
(१७) ख़ुदा ने प्रत्येक नगर में पापियों के सरदार छोड़ रक्खे हैं, ताकि वे लोगों को बहकाते रहें और धोखा देते रहें।
(१८) यह बात निश्चय है कि ख़ुदा ही काफ़िरों पर शैतान भेजता है, जो उनको खूब उछालता और उभारता है।
(१९) शैतान ख़ुदा से कहता है कि जिस तरह तूने मुझको बहकाया है उसी तरह मैं आदमियों को क़यामत तक बहकाऊंगा और मजा चखाऊंगा।
(२०) जिसको तू बहकाना चाहे बहकाले।
(२१) ख़ुदा काफ़िरों को पाक नहीं करना चाहता।
(२२) आदमी न तो अपना कुछ बिगाड़ सकता है और न संवार सकता है, जो ख़ुदा की मर्जी होती है वही होता है।
(२३) आदमी को जो भलाई मिलती है, वह ख़ुदा की तरफ से होती है और जो बुराई मिलती है वह आदमी की तरफ से होती है।
(२५) जब लोगों को भलाई मिलती है तो कहते हैं कि ख़ुदा की

तरफ से हैं और जब बुराई मिलती है तो कहते हैं कि आदमियों की तरफ से हैं, लेकिन यह बात नहीं है, बुराई और भलाई दोनों .खुदा की तरफ से मिलती हैं।

(२६) ऐ .खुदा! तू हमको उन लोगों की सीधी राह दिखा जिस पर तुमने महरबानी की और उन लोगों के मार्ग पर मत डाल जिन पर तूने क्रोध किया।

(२७) काफ़िरों को डराना और न डराना बराबर है, क्योंकि वे कभी नहीं मानेंगे, इसका कारण यह है, कि .खुदा ने उनके हृदय पर मोहर लगादी है और आंखों पर पर्दा डाल दिया है, उनको बुरी मार पड़ेगी।

(२८) .खुदा जिसको चाहता है बादशाही देता है और जिसका राज्य चाहे छीन लेता है, जिसको चाहे मान देता है और जिसको चाहे अपमान देता है, सब चीजें उसी के हाथ में है, वह सर्व शक्तिमान है।

(२९) जो आदमी .खुदा पर यक़ीन रखते हैं और शुभ कर्म करते हैं, उनको अच्छा फल मिलेगा क्योंकि .खुदा को अन्याय पसन्द नहीं है।

(३०) .खुदा ने क़यामत (महाप्रलय) तक के लिये काफ़िरों के दिल में दुशमनी और द्रोह भर दिया है।

(३१) .खुदा ने शैतान को आज्ञा दी है कि क़यामत तक आदमियों को बहकाता फिरे।

(३२) अगर .खुदा चाहता तो आदमी कुकर्म न करते और सब ईमानदार बन जाते।

(३३) .खुदा के हुक्म के बिना पत्ता भी नही हिल सकता।

(३४) जो दुःख आदमी भोगते हैं, वे उन्हीं के कर्मों का फल है।

(३५) कुकर्मों के पीछे मत जाना, क्योंकि विषय वासनायें आदमी

को .ख़ुदा के रास्ते से बहका देती हैं, जो आदमी .ख़ुदा के मार्ग से भटक जाते हैं बहुत दुःख पाते हैं।

(३६) दुनियां में जितना दुःख आदमी को भुगतना पड़ता है वह जन्म से पहले दफ़्तर में लिख दिया जाता है। (अबदुल्लाह इब्ने उमर कहता है कि ५०००० वर्ष पहले लिख दिया था)।

(३७) आदमी चाहे नरक का काम करे परन्तु स्वर्ग में जायगा और चाहे स्वर्ग का काम करे परन्तु नरक में जायगा। बात यह है कि जो .ख़ुदा की इच्छा होगी वही होगा।

(३८) .ख़ुदा क़यामत के दिन जब इन्साफ़ करेगा तब किसी पर एक जौ बराबर भी अन्याय नहीं होगा। .ख़ुदा सब का हिसाब ठीक २ करेगा।

(३९) .ख़ुदा ने आसमान ज़मीन और अन्य चीज़ें छः दिन में बनाईं।

(४०) .ख़ुदा ने सब चीजों से कहा कि 'होजाओ', बस वे तत्काल हो गईं।

(४१) फ़रिश्ते .ख़ुदा के तख़्त को उठाये हुए हैं।

(४२) .ख़ुदा ने मोहम्मद को मोजिज़े (सिद्धियां) इस वास्ते नहीं दीं कि पहले लोगों ने झुठला दिया था।

(४३) .ख़ुदा ने मौत और ज़िन्दगी केवल परीक्षा के वास्ते बनाई है कि देखूं कौन अच्छे काम करता है और कौन बुरे।

(४४) .ख़ुदा ने कुछ आदमियों को तो जन्म से पहले बहिश्त (स्वर्ग) के लिये बनाया और कुछ को नरक के लिये।

(४५) .ख़ुदा काफ़िरों के कर्म मिट्टी में मिला देता है और मुसलमानों के नहीं मिलाता।

(४६) .ख़ुदा किसी मर्द या औरत के कर्म्म नष्ट नहीं करता।

(४७) .ख़ुदा घात में लगा रहता है।

(४८) बहिश्त में शराब पीने को, मांस खाने को, सत्तर सत्तर स्त्रियें भोगने को और लौंडे मजा करने को मिलेंगे।

(४९) बहिश्त वाले भोजन तो करेंगे परन्तु पेशाब और पाखाना नहीं होगा।

(५०) बहिश्त वालों को सौ-सौ आदमियों की काम शक्ति भोग-विलास के लिये दी जायगी।

१६—ख़लीफ़ा अबू बकर का शासन।

(संवत् ६८९-६९१)

मोहम्मद साहब ने अपने जीवन काल में किसी आदमी को अपना उत्तराधिकारी नियत नहीं किया। इस कारण उनके देहान्त होते ही सारे मदीना नगर में हल-चल मच गई। सम्भव था मोह-म्मदी धर्म्म और शक्ति का नाश हो जाता, परन्तु असामा इब्ने जैद ने मोहम्मदी झण्डा आयशा के दरवाज़े पर खड़ा करदिया और जगह जगह शस्त्रधारी सैनिक नियत कर दिये, जिससे शान्ति भङ्ग न हुई। अब यह विचार उपस्थित हुआ कि मोहम्मद साहब को जगह किस को दी जाय। अबू बकर, उमर, उस्मान और अली यह चार आदमी गद्दी के अधिकारी समझे गये। यद्यपि गुण, कर्म्म, और वंश को देखते हुए अली का हक़ सब से अधिक था, किन्तु कुछ लोग अबू बकर को, कुछ उमर को और कुछ उस्मान को दिलाना चाहते थे, अतः इसके निर्णय करने के लिये एक पञ्चायत बुलाई गई, जिसने इस बात का निश्चय किया कि ख़लीफ़ा मक्का के कुरैश लोगों में से बनाया जाया करे और मन्त्री अन्सारी बनाये जाया करें। इस निश्चय के अनुसार अबू अबीदा और उमर में कोई ख़लीफ़ा हो सकता था। जब इस पर फिर झगड़े खड़े होगये तो उमर ने आगे बढ़कर अबू

बकर को सलाम किया, उनका हाथ चूम कर कहा कि आप हम से बड़े व सब से योग्य और बुद्धिमान् हैं, इस लिये आपके रहते हुए कोई आदमी ख़लीफ़ा नहीं बनाया जासकता। उमर की बात को सारी पञ्चायत ने मान कर अबू बकर को ख़लीफ़ा बना दिया। अबू बकर ने, यह विचार कर कि अली और उसके साथी इस निश्चय का विरोध करेंगे, कुछ फ़ौज उमर के साथ कर अली के घर का घिरवा लिया और अली को लूट लेने की धमकी देकर इस बात पर विवश किया कि वह अपना हक़ छोड़ कर उसे ख़लीफ़ा स्वीकार करले।

गद्दीपर बैठते ही अबू बकर को बहुत सी विपत्तियों का सामना करना पड़ा। मोहम्मद साहब की मृत्यु के बाद ही बहुत से आदमियों ने मोहम्मदी धर्म्म छोड़ दिया, सारे अरब में गड़बड़ी मचगई, किन्तु अबू बकर ने अपने कुछ सरदारों की सहायता से सारे फ़सादों को क़त्ल तथा लूट मार द्वारा शीघ्र ही दबा दिया। जब उसको निश्चय होगया कि सारा अरब मोहम्मदी झण्डे के तले मरने मारने को तय्यार है तो उसने सारी दुनियां में मोहम्मदी धर्म फैलाने का विचार किया और इस की पूर्त्ति के लिये उसने एक पत्र शाम तथा अन्य देशों पर चढ़ाई करने और क़ाफ़िरों को मुसलमान बनाने और लूटने मारने के लिये अरब के समस्त सरदारों के नाम लिखा और उनको सेना सहित अपने यहां बुलाया।

इस समाचार के पाते ही प्रत्येक सरदार अपनी अपनी सेना लेकर ख़लीफ़ा अबू बकर के पास पहुँच गये। ख़लीफ़ा ने सब सरदारों की एक कमेटी बनाकर निम्नलिखित नियम तय किये:—

१—मोहम्मद साहब ईश्वर के अन्तिम दूत हैं, अब भविष्य में कोई दूसरा दूत ईश्वर की तरफ़ से धर्म्म-प्रचारार्थ इस दुनियाँ में नहीं आयेगा।

२—क़ुरान ईश्वर की सच्ची और अन्तिम धर्म्म पुस्तक है।

अब भविष्य में दूसरी कोई धर्म्म पुस्तक ईश्वर की तरफ़ से इस दुनियाँ में नहीं भेजी जायगी।

३—मोहम्मद साहब से पहले जितने धर्माचार्य्य और .कुरान से पहले जितनी धर्म्म पुस्तकें ईश्वर की तरफ़ से इस दुनियाँ में भेजी गईं थीं, उन सब को ईश्वर ने रद्द कर दिया है।

४—जो आदमी मोहम्मद साहब के अतिरिक्त किसी अन्य आचार्य्य को धर्म्म गुरु, और .कुरान के अतिरिक्त किसी अन्य पुस्तक को धर्म्म पुस्तक माने या मोहम्मद साहब और .कुरान की बातों पर किसी प्रकार का सन्देह या तर्क करे तो वह क़ाफ़िर है। क़ाफ़िर को मारडालना प्रत्येक मुसलमान का धार्मिक कर्त्तव्य है।

५—उपदेश द्वारा या तलवार की धार पर काफ़िरों को मुसलमान बनाना और न बनने पर उनको यमपुर भेजना मुसलमानों का धार्मिक कर्त्तव्य है।

६—जो आदमी ऊपर से इस्लाम धर्म्म का मानने वाला और भीतर से न मानने वाला हो उसको 'मुनाफ़िक़' कहते हैं, जो आदमी मुसलमान बनकर उसके सिद्धान्तों से फिर जाय उस को 'मुरतिद' कहते हैं। मुसलमानों को चाहिये कि मुनाफ़िक़ और मुरतिद का सिर काटलें।

७—इस्लाम धर्म्म के फैलाने में जो मुसलमान काफ़िर को मारता है वह 'ग़ाज़ी' कहा जाता है और जो काफ़िर के हाथ से मारा जाता है वह 'शहीद' कहलाता है। दोनो अवस्थाओं में ग़ाज़ी हो या शहीद मुसलमान बहिश्त (स्वर्ग) में भेजा जाता है।

८—काफ़िरों को मारना, उनके मन्दिर और धर्म्मस्थानों को ढाना, मूर्तियों को तोड़ना, पुस्तकों को जलाना, काफ़िरों की स्त्री और बच्चों को दास दासी बनाकर काम में लाना, और उनके धन दौलत

को लूटना मुसलमानों के लिये 'जिहाद' कहा जाता है, जिहाद का करना प्रत्येक मुसलमान का सब से बड़ा धार्मिक कर्तव्य है।

९—जिहाद में काफिरों का जो माल या स्त्री बच्चे मुसलमानों के हाथ लगें उनमें से पाँचवाँ भाग मोहम्मद साहब या खलीफ़ा का और बाक़ी लूटने वाले मुसलमानों का होता है।

१०-महाप्रलय के दिन जब ईश्वर आदमियों का इन्साफ़ करेगा, तो मोहम्मद साहब ईश्वर से मुसलमानों की सिफ़ारिश करेंगे यह कह कर कि यह मेरे अनुयायी हैं। ईश्वर मोहम्मद साहब की ख़ातिर सब मुसलमानों को स्वर्ग में और अन्य धर्मानुयायिओं को नरक में भेज देगा।

मदीना में इकट्ठे हुए मुसलमानों को चार दलों में बाँटा गया और दमिश्क, शाम, फ़िलस्तीन और इराक़ पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी गई।

२०—शाम देश पर चढ़ाई।

यज़ीद इब्ने अबि सफ़यान सेना लेकर शाम देश की तरफ़ बढ़ा और बसरा नगर के समीप, जो अरब और शाम देश की सीमा है, शाम देश की सेना पर आक्रमण किया। इस युद्ध में शाम देश के सेनापति और १२०० सैनिक काम आये। उनका सारा माल और युद्ध सामग्री मोहम्मदियों ने लूट लिया। यह सब माल और सामग्री यज़ीद ने ख़लीफ़ा के पास मदीना भेज दी। ख़लीफ़ा ने इस सारे लूट के माल को देखने के लिये अरब के लोगों को बुलाया, जिसको देख कर अरबी लुटेरों के मुँह में पानी भर आया और उन्होंने ख़लीफ़ा से प्रार्थना की कि हमको भी युद्ध क्षेत्र में जाने की आज्ञा दीजिये। ख़लीफ़ा ने इनकी प्रार्थना स्वीकार करते हुए कहा "सन्तोष करो, काम पड़ने पर आप लोगों को भी भेजा जायगा।"

खलीद इब्ने वलीद दूसरे सेनापति ने, जो रक्तपात का बड़ा प्रेमी और कठोर हृदय का पुरुष था, १०००० आदमियों को साथ लेकर हीरा नगर पर आक्रमण किया और वहाँ के ईसाई बादशाह को मार गिराया। बादशाह के मरने पर नगर वालों ने सत्तर हज़ार सुवर्ण मुद्रिका वार्षिक कर मुसलमानों को देना स्वीकार किया। हीरा नगर पर अधिकार जमाकर खलीद ने फ़िरात नदी के किनारे छावनी डाली और ईरान के बादशाह को लिखा कि या तो मोहम्मदी कलमा पढ़ो या जज़िया दो, किन्तु इसे शीघ्र ही यज़ीद की सहायता के लिये बसरा की ओर जाना पड़ा, क्योंकि शाम देश के हरीकुलेश, ईसाई बादशाह ने लुटेरों को अपनी सीमा पर आने व लूटमार करने के समाचार पाकर एक विशाल फ़ौज उनको मार भगाने के लिये भेज दी। इधर से यज़ीद की मदद के लिये खलीद १५०० घुड़-सवार लेकर पहुँचा, उधर से खलीफ़ा अबूबकर ने भी कई हज़ार लूट और क़तल के अभिलाषी अरबियों का रवाना कर दिया।

यज़ीद को एक तरफ़ से नई सेना की सहायता मिलगई, दूसरी तरफ़ शाम देश का सेनापति रोमन्स (Romans) अपने देश और स्वामी से द्रोह करके यज़ीद से गुप्त रीति से मिल गया, जिसके कारण हज़ारों योद्धाओं के रक्तपात के पश्चात् ईसाइयों की सेना पर मोहम्मदियों ने विजय प्राप्त की और उसी देशद्रोही रोमन्स की गुप्त सहायता से ये लुटेरे क़िले के भीतर घुसगये और हज़ारों नर नारियों का रक्त वहाकर अपना अधिकार जमा लिया।

२१—दमिश्क पर आक्रमण।

शाम देश में दमिश्क बड़ा विख्यात और धनाढ्य नगर है। रेशम, गुलाब का इत्र और अर्क़ यहां का दुनियाँभर में मशहूर है।

बसरा पर अधिकार जमा कर ख़लीद अपने १५०० सवारों सहित दमिश्क की ओर रवाना हुआ और शरजील तथा अबू अबीदा, जिन्हें वह फ़रात नदी के पास छोड़ आया था, को लिखा कि वे भी अपनी सेना सहित उस से मिल जावें, अतः वे दोनों भी ३७००० फ़ौज के साथ उस से मिल गये और इस प्रकार से एक फ़ौज तैयार करके ख़लीद ने दमिश्क पर हमला कर दिया।

हरीकुलेश ने, जो इस समय शाम देश की राजधानी अन्ताकिया में था, ख़लीद के १५०० सवारों का ही आक्रमण समझकर उनके मुकाबले के लिये केवल ५००० सवार जनरल केल्लूस के साथ भेज दिया। जनरल केल्लूस इनको लेकर खलीद से पूर्व ही दमिश्क पहुँच गया, किन्तु वहाँ के शासक अज़राइल से उसका मत न मिला, इधर खलीद अपनी ४०,००० सेना सहित आ पहुँचा और दमिश्क को घेरलिया। केल्लूस इतनी भारी सेना को देखकर भयभीत होगया और उसकी इच्छा न थी कि वह ख़लीद के मुकाबले आवे, परन्तु अज़राइल के कहने पर वह लड़ाई के लिये आगे बढ़ा। ख़लीद उसकी निर्बलता को ताड़गया और तुरन्त उसपर आक्रमण करके क़ैद करलिया।

कैल्लूस ने भी रोमन्स की तरह विश्वास घात किया और ख़लीद से कहा कि अज़राईल को किसी प्रकार मार डालिये, उसके मारते ही नगर पर क़ब्जा हो जावेगा। ख़लीद कैल्लूस को क़ैद करके फिर युद्ध क्षेत्र में पहुँचा और अज़राईल को ललकारने लगा। अज़राईल यद्यपि बुड्ढा था फिर भी वह अपनी तलवार लेकर सामने आ गया और बड़ी बहादुरी से लड़ा, किन्तु ख़लीफ़ा ने अपने घोड़े से उतर कर उसके घोड़े की टाँग पर गदा मारी जिससे उसका घोड़ा गिर पड़ा और वह पकड़ा गया। उसे पकड़ कर ख़लीद कैल्लूस के पास लाया और दोनों को मुसलमान होने को कहा, किन्तु दोनों के इन्कार करने पर मोहम्मदियों ने उनकी गरदनें तलवार से उड़ादीं।

इन दोनों सेनापतियों के पकड़े और मारे जाने के समाचार ने नगर में हाहाकार मचा दिया। नगर निवासियों ने क़िले का फाटक बन्द कर लिया और रात को चुपके से रस्सी द्वारा उतार कर एक मनुष्य को हरीकुलेश बादशाह के पास भेज दिया। उससे सारे समाचार सुनकर बादशाह ने १००,००० फ़ौज मुक़ाबले के लिये भेजी। यह फ़ौज कई हिस्सों में विभक्त थी। ख़लीद ने अपने सरदारों द्वारा रास्ते में ही उनका मुक़ाबला कराया और छल तथा कपट के साथ उन पर विजय प्राप्त किया, हरीकुलेश की बहुत सी सेना मारी गई और उसकी सारी युद्ध सामग्री भी ख़लीद के अधिकार में आगई।

किन्तु पीटर और पाल दो ईसाई भाइयों ने अपने कुछ सिपाहियों की मदद से सैंकड़ों मोहम्मदी लुटेरों को तलवार के घाट उतारा और उनके माल असबाब पर क़ब्ज़ा कर लिया। जब ख़लीद के पास यह ख़बर पहुँची, वह आग हो गया और ज़रार व रहमान आदि अपने सेनापतियों को भेजा, जिन्होंने पाल को गिरफ़्तार कर लिया और पीटर को भाले से छेद कर मार डाला। पीटर के शिर को पाल के सामने रख कर पाल से कहा कि मुसलमान हो जाओ अन्यथा तुम्हारी भी यही दशा की जावेगी। पाल कहने लगा "मैं लुटेरों और खूनी डाकूओं के धर्म को अंगीकार करने की अपेक्षा प्राण देना अच्छा समझता हूँ"। इतना कहना था कि घातक की तलवार उसी वीर धर्मात्मा ईसाई के शिर पर गिरी और शिर को तन से जुदा कर दिया।

हरिकुलेश ने फिर ७०,००० सेना मदद के लिए भेजी, किन्तु ये सब नये रंगरूट थे, इन्होंने लड़ाई कभी देखी नहीं थी, ये सब जनरल बारडन के अधीन थे जनरल बारडन ने पहिले एक पादरी को ख़लीद को समझाने और लड़ाई से बाज़ आने के

लिए उसके पास भेजा। जब उस पादरी के समझाने का कुछ फल न हुआ, तब संधि के लिए एक दूत भेजा किन्तु उस दूत ने ख़लीद से बारडन की सारी गुप्त बातें बता दीं और कहा कि वह तुम को सन्धि के लिए बुलावेगा और अपने छुपे हुए दस सिपाहियों, जो दर्बान के भेष में हैं, द्वारा मरवा डालेगा। ख़लीद ने यह भेद मालूम करके ईसाइयों के भेष में जाकर उन दसों दर्बानों को रात को मार डाला और सन्धि के लिए नियत समय पर पहुँच गया। बारडन को अपने सिपाहियों के मारे जाने का पता न लगा, इसलिए उनके भरोसे सन्धि नियमों पर ख़लीद से कड़ी २ बातें करने लगा। ख़लीद ने उसी समय उसकी गर्दन पकड़ ली और उसके साथी ज़रार ने तलवार के एक वार से उसके सिर को धड़ से जुदा कर दिया।

ख़लीद ने बारडन के शिर को उसकी सेना में फेंक दिया। अपने सेनापति का शिर देख कर ईसाई लोग बहुत भयभीत हो गये। वे अभी कुछ सोचने भी न पाये थे कि ख़लीद की सेना ने उस पर आक्रमण कर दिया और रक्तपात होने लगा, सहस्रों निर्दोष नर नारी तलवार के घाट उतार दिये गये और उनका धन दौलत लूट लिया गया। कहा जाता है कि इस लूट में मोहम्मदियों को इतना माल मिला जो इससे पहिले किसी लूट में नहीं मिला था। इस लूट के माल को देख कर अरब के लोगों में और भी अधिक इच्छा प्रबल हो गई और विना किसी प्रयत्न करने या वेतन के लिये धन की चिन्ता करने के, अरब निवासी ख़लीफ़ा से युद्ध में जाने के लिये आग्रह करने लगे।

दमिश्क वालों ने अपने सेनापति के शिर कटने की ख़बर पाकर भी भरसक अपनी रक्षा का प्रयत्न किया। टामस को अपना सेनापति बनाकर क़िले की रक्षा करने लगे। टामस ने बड़ी बहादुरी से

मोहम्मदी लुटेरों के आक्रमण को रोका। यह तीर चलाने में बहुत निपुण था। इसने तीरों से सैकड़ों मोहम्मदियों को छेद डाला। अब्बास इब्ने ज़ैद भी उसके तीर का निशाना बना। अब्बास की स्त्री अपने पति की मृत्यु के समाचार सुन मैदान में आई और अपने एक निशाने से टामस की एक आँख फोड़ दी, फिर भी टामस लड़ता ही रहा और बुरी तरह से घायल हो जाने पर भी शरजील से मुक़ाबला करता रहा। वह शरजील को मारना चाहता ही था कि लड़ाई के नियम विरुद्ध पीछे से ख़लीद और अबदुल रहमान शरजील की मदद करने लगे। इस प्रकार से ७० दिन तक मोहम्मदी दमिश्क को घेरे रहे, परन्तु टामस ने शहर पर कब्ज़ा नहीं होने दिया।

७० दिन बाद टामस की इच्छा के विरुद्ध नगर के १०० प्रतिष्ठित आदमी और पादरियों ने मोहम्मदियों से सन्धि कर सन्धिपत्र पर हस्ताक्ष कर दिये। जिसके अनुसार नगर मोहम्मदियों के अधीन कर दिया गया। बाहर जाने वाले निवासियों को अपने माल व असबाब सहित बाहर जाने की शर्त भी तय होगई, यह भी सन्धिपत्र में लिखा गया कि जो रहना चाहें, उन्हें जज़िया देना होगा और ईसाइयों की पूजा के लिये ७ गिरजे न गिराये जावेंगे। इधर अबू अबीदा और नगर निवासियों के बीच यह शर्तें लिखो जा रही थीं उधर एक देशद्रोही पादरी जोसिस (Josic) ख़लीद के पास गया और अपनी रक्षा का वादा ले १०० मोहम्मदियों को गुप्त रास्ते से क़िले के भीतर ले आया। इन १०० मोहम्मदियों ने क़िले का पूर्वीय फाटक खोल दिया और मोहम्मदी सेना को अन्दर लाकर नगर में लूट और क़त्ल प्रारम्भ करा दिया। जब अबू अबीदा ने ख़लीद के यह पाशविक कृत्य देखे तो उसने ख़लीद को बहुत कुछ समझा बुझा कर रोका और टामस इत्यादि बाहर जाने वाले नागरिकों को बाहर जाने की

आज्ञा दिलादी। इस प्रकार से विजय प्राप्त कर खलीद ने मोहम्मदी झण्डा दमिश्क के क़िले पर खड़ा कर दिया और सारे समाचार खलीफ़ा अबू बकर के पास भेज दिये, किन्तु उनके पहुँचने के पूर्व ही खलीफ़ा की मृत्यु होगई और वह दमिश्क़ की विजय के समाचार अपने जीवनकाल में न सुन सका।

जिन लोगों ने मुसलमान धर्म स्वीकार न किया था वे सब टामस के साथ नगर छोड़कर बाहर चले गये। खलीद भला यह कब देख सकता था, किन्तु अबू अबीदा के वचन को तोड़कर उस से शत्रुता भी यह करना न चाहता था, अतः उस समय तो वह कुछ न बोला। पीछे उसने ४००० सवार तैयार किये और विकट मार्गों को लांघता हुआ उन बेचारे आफ़त के मारे हुए राहगीरों को जा पकड़ा। वे एक नदी के किनारे ठहरे हुए थे, स्त्रियां भोजन बना रही थीं, बच्चे इधर उधर खेल रहे थे और पुरुप अपने २ कपड़े सुखा रहे थे। खलीद ने अपनी सेना को चार भागों में बांट कर पहिले एक भाग को उनके लूटने को भेजा। जब देखा कि लड़ाई का सामान न होते हुए भी टामस और उनके साथ के स्त्री पुरुष अपने पुराने व टूटे फूटे हथियारों और पत्थरों से मुक़ाबला कर रहे हैं, तो उसने तीन भागों को भी एक के पीछे एक करके भेज दिया। उन्होंने बड़ी क्रूरता से मारकाट आरम्भ कर दी और शीघ्र ही सैकड़ों निःसहाय तथा निःशस्त्र पुरुषों को भेड़ बकरी की तरह काट कर उनका माल अस्बाव लूट लिया और स्त्री बच्चों को क़ैद कर लिया। केवल एक आदमी बचा जो छिप कर भाग निकला और सारे समाचार हरीकुलेश तक पहुंचा सका। हरीकुलेश की पुत्री भी क़ैद हो गई थी, जिसे खलीद ने उसके बाप के मांगने पर यह कहकर छोड़ दिया कि अपने पिता से कहना कि वह इस्लाम धर्म स्वीकार करले, अन्यथा शीघ्र ही मैं उसका शिर उतारने के लिये आता हूं।

ख़लीद हरीक़ुलेश के पीछा करने के भय से दमिश्क़ वापस आया और सारा लूट का माल इकट्ठा करके पांचवां भाग ख़लीफ़ा के पास भेज दिया, शेष सारा आपस में बांट लिया। ख़लीफ़ा का भाग अभी उसके पास तक पहुंचा भी न था कि उसकी मृत्यु हो गई। कुछ लोगों का कहना है कि उसे चावलों के साथ विष दे दिया गया था, किन्तु उसके पुत्र और मोहम्मद सा० की स्त्री आयशा का कहना है कि शीतकाल में ठण्डे पानी से स्नान करने से सन्निपात होगया। उसने अपनी मृत्यु के पूर्व मदीना के बड़े-बड़े लोगों को बुलाया और उनके सामने अपना उत्तराधिकारी इब्ने ख़त्ताब को नियत करके उसके नाम वसीयत लिख दिया और ६३ वर्ष की आयु में इस असार संसार से अपनी यात्रा पूरी करके कूंच कर गया।

२७—ख़लीफ़ा उमर इब्ने खत्ताब का शासन।

(संवत ६९१ विक्रमी से ७०२ वि० तक)

जिस समय उमर ख़लीफ़ा बनाया गया उसकी आयु ५३ वर्ष की थी। यह वही उमर है जो २५ वर्ष की आयु मे मोहम्मद साहब का शिर काटने के लिए घर से निकला था, किन्तु अपनी बहिन के समझाने से वह बड़ा कट्टर मोहम्मदी बन गया। वह बायें हाथ से भी वैसा ही काम लेता था, जैसा कि दायें हाथ से। धार्मिक बातों में जब कोई तर्क करता तो वह उसका उत्तर तलवार की धार से देता था और तर्क करने वाले का शिर उसी दम काट देता था। डील डौल बहुत भारी था। कहते हैं कि बैठे हुए भी खड़े हुए पुरुष के बराबर नाप थी। शरीर, काला आँखें लाल और शिर बिलकुल सफ़ाचट था। एक चमड़े का कोड़ा अपने पास रखता था, उससे बदमाशों तथा उन कवियों को जो मोहम्मदी धर्म की निन्दा की कविता रचते, पिटवाता था। ख़लीफ़ा होने पर उसने अपना नाम अमीरुल मोमनीन

रक्खा। यह पदवी सूचक नाम बाद को सारे ख़लीफ़ों के नाम के आगे लगाया जाने लगा और अबतक लगाया जाता है। अली इब्ने-अबी तालिब ने इस बार भी बहुत धैर्य्य से काम लिया और अपना हक़ होते हुए भी उमर के ख़लीफ़ा बनाये जाने पर कुछ झगड़ा न किया अपितु उसे ख़लीफ़ा मान लिया।

उमर यद्यपि अपने धर्म में बहुत कट्टर था तथापि वह लूट मार का काम बहुत कम पसन्द करता था। उसने ख़लीद के अत्याचारों की बहुत निन्दा की, उसे मुख्य सेनापति के पद से उतार कर अबू-अबीदा को मुख्य सेनापति बनाने का हुक्म जारी कर दिया। अबूअबीदा ने, जो अबतक ख़लीद के अधीन काम करता था, यह पत्र छिपा लिया। फिर दुबारा ख़लीफ़ा का हुक्म आने पर उसने मुख्य सेना-पति का पद ग्रहण कर लिया और ख़लीद उसके अधीन होकर काम करने लगा।

२३—ईसाई मेले की लूट

अबू अबीदा ने किसी दुष्ट आदमी के प्रलोभन देने पर अबीला नाम के गांव में ईसाइयों के एक मेला लूटने के लिये ५००० सवारों को अब्दुल्ला इब्ने जफ़ार के अधान भेज दिया। अबीला में एक ईसाई महात्मा रहते थे, जो अपने तप और संयम के कारण दूर दूर तक विख्यात हो गये थे। वहां प्रत्येक वर्ष एक मेला लगता था जिसमें दूर-दूर के व्यापारी माल बेचने और यात्री उन महात्मा के दर्शन करने आया करते थे। उस वर्ष त्रिपुली के सरदार की बेटी का विवाह भी यहां ही होना निश्चय हुआ था, जिससे मेले की रौनक़ और अधिक होगई थी और लाखों का माल व अस्बाव यहां मौजूद था।

जब अब्दुल्ला को गांव के समीप पहुँचने पर ज्ञात हुआ कि त्रिपुली के सरदार के साथ ५००० सवार आये हैं, उसने सामने होकर लड़ना उचित न समझा और गांव के बाहर पड़ा रहा, जब रात को सब

सोगये उसने अपने ५०० सवारों की पांच टोलियां बनाईं और प्रातः-काल, ठीक उस समय जब कि सैकड़ों लोग सो रहे थे और कुछ लोग उस ईसाई महात्मा का उपदेश सुन रहे थे, उन्हें चारों ओर से घेर लिया और अल्लाहो अकबर कहता हुआ आश्रम पर टूट पड़ा। ईसाई यह समझ कर कि सभी मोहम्मदी सेना उनपर आ पड़ी, भाग निकले, किन्तु तुरन्त ही त्रिपुली के सरदार के सवार तैयार होकर मुकाबले पर डट गये। दोनों ओर से तलवारें चलने लगीं और सैंकड़ों शिर कट कट कर पृथ्वी पर लोटने लगे।

अब्दुल्ला ने दुशमन की फ़ौज अधिक देखकर एक आदमी अबुअबीदा के पास और मदद भेजने को भेज दिया। इस बार अबुअबीदा ने ख़लीद के साथ कई हज़ार सवार करके अब्दुल्ला की मदद के लिए भेजा। ख़लीद के पहुँचने के पूर्व ही त्रिपुली का सरदार मारा जा चुका था और उसके बचे खुचे सवार भाग गये थे तथा सरदार की बेटी कुछ स्त्रियों सहित आश्रम में रह गई थी। ख़लीद के पहुँचते ही उन्होंने दरवाज़े बन्द कर लिए, जिन्हें ख़लीद ने तोड़ डाला और उस ईसाई महात्मा का शिर काट कर स्त्री बच्चों को क़ैद कर लिया और सारे मेले को लूटने का हुक्म दे दिया। अपना निश्चित् कार्य्य करके ख़लीद लूट के माल और क़ैदियों सहित दमिश्क पहुँचा, जहां पाँचवां भाग निकाल कर शेष सब में बाँटा गया। अबू अबीदा ने पाँचवां भाग ख़लीफ़ा के पास भेजते हुये खलीद के काम की बहुत प्रशंसा की, किन्तु ख़लीफ़ा ने उसके उत्तर में एक शब्द न लिखा।

२४—शाम देश पर विजय

दमिश्क की रक्षा के लिये कुछ फौज छोड़ कर अबू अबीदा शाम देश की चढ़ाई के लिये रवाना हुआ। उसने ख़लीद को अग्रभाग का सेनापति बना कर सन्तोष दिया। रास्ते में जायशा के हाकिम ने

४०० मोहर और रेशमी थान देकर संधि करली । हुमस का हाकिम उन्हीं दिनों मरा था, अतः वहां की प्रजा ने भी १०,००० मोहर और २०० रेशमी थान देकर मोहम्मदी लुटेरों से अपना पीछा छुड़ाया ।

अबू अबीदा की प्रबल इच्छा थी कि इसी प्रकार सारे शाम देश को भाई बन्दी करके अपने अधीन करलें, किन्तु इतने में खलीफ़ा के यहां से हुक्म आया कि मुसलमान धर्म का प्रचार बड़ी सुस्ती से होरहा है, शीघ्रता करनी चाहिये, अतः उसने संधि की अवधि पूरी होने के पूर्व ही चढ़ाई आरम्भ करदी । खलीद को हुमस में छोड़ खुद बालबक को जा घेरा, वहां सुलेमान का बनवाया हुआ सूर्य्य का एक बहुत मनोहर मन्दिर था । ईसाई लोगों ने बड़ी बहादुरी से मुक़ाबला किया, अबू अबीदा की फ़ौज भागने को ही थी, कि उसके अन्य भाग जो दूर रह गये थे पहुंच गये, उनकी मदद से नगर पर उसने विजय पाई और लूट मार कर हुमस को वापिस चला गया ।

हुमस वालों को मोहम्मदी बनने या जज़िया देने का कहा, किन्तु उन्होंने स्वीकार न किया, तब उनसे कहा यदि ५ दिन के खाने के लिये सामान दे दो तो हम आगे चले जावें । उन्होंने ५ दिन का सामान दे दिया । फिर कहा - हम को बहुत दूर जाना है हम से दाम लेकर और सामान दो । उन्होंने दाम लेकर अपने यहां की शेष रसद भी बेच दी । जब उसने देखा कि अब इनके पास रसद नहीं है कुछ दूर जाकर फिर पीछे लौट आया और नगर को घेर लिया । रसद न रहने से ईसाइयों के हाथ पैर फूल गये । उन्होंने अपनी भूल का अनुभव किया फिर भी बिना लड़ाई क़िला लुटेरों को सौंप देना उचित न समझ कर वहां का सेनापति ५००० सवारों सहित बाहर निकल आया और मोहम्मदी सेनापति खलीद के चचा को मार गिराया । उसके मरते ही मोहम्मदी सेना भाग निकली, किन्तु खलीद के पहुंचते ही लड़ाई फिर आरम्भ होगई । ईसाई सेनापति मारा गया,

उसके साथ १६०० ईसाई वीर युद्ध में काम आये। जब लड़ने वाला कोई न रहा, मोहम्मदियों ने क़िले पर अपना अधिकार जमा लिया।

२५—यरमूक की लड़ाई।

(संवत ६९३)

जब बादशाह हरीकुलेश को ख़बर मिली कि बाल-बक व हुमस उसके हाथ से निकल गये, उसने ८०,००० सेना भर्ती की और मैनुअल (Manual) को उसका सेनापति बनाया। जिबला ने, जो गस्सान नाम की ईसाई जाति का सरदार था ६०,००० सेना तैयार की और मैनुअल से आ मिला। इस प्रकार १,४०,००० सेना के साथ यरमूक के निकट ईसाइयों ने मोहम्मदियों से मुक़ाबला किया। यह लड़ाई कई दिन त० ०ही, किन्तु एक ईसाई देशद्रोही, जिसे अपने साथियों से कुछ हा।ि पहुँची थी, मैनुअल को एक ऐसे स्थान पर ले गया जहां कई मोहम्मदी पहले से ताक में बैठे थे, वहां पहुँचते ही मैनुअल इब्न अलकम के हाथ से मारा गया। सेनापति के मरते ही सेना भाग निकली, बहुत सी नदी में डूब मरी और बहुत सी जंगल और पहाड़ों में भटक कर नाश हो गई। इस लड़ाई के पश्चात् लगभग सारे शाम देश पर मोहम्मदियों का कब्ज़ा हो गया।

२६—यरोशलम की चढ़ाई [सम्वत ६९४ वि०]

यरमूक की लड़ाई के पश्चात् अबू अबीदा ने ख़लीफ़ा को लिखा कि अब क्या आज्ञा है। ख़लीफ़ा ने लिख भेजा कि यरोशलम * पर चढ़ाई करो। इस हुकम के पाते ही अबू अबिदा अपनी फ़ौज के साथ यरोशलम को रवाना हो गया और वहां पहुँचते ही नगर को घेर लिया। नगर निवासी अत्यन्त भयभीत हो गये और उनके पादरी ने डरकर कह दिया कि यदि ख़लीफ़ा स्वयं आकर नगर पर

अधिकार के लिये कहे तो हम बिना लड़ाई के दे देंगे। अबू अबीदा ने पत्र लिख कर ख़लीफ़ा को बुला लिया। उसके आने पर नगर वालों ने बिना किसी उज्र के नगर उसके हाथ में सौंप दिया। ख़लीफ़ा ने निम्न लिखित शर्तों पर ईसाइयों को यरोशलम में रहने की आज्ञा दी।

(१) ईसाई नये गिरजे न बनावें। (२) गिरजों के दरवाज़े रात दिन मुसलमान मुसाफ़िरों के लिये खुले रहा करें। (३) गिरजों में घण्टे न बजाये जावें। (४) सलीब न तो गिरजों पर लगाई जावे और न बाज़ारों में दिखाई जावे। (५) अपने बच्चों को क़ुरान न पढ़ावें। (६) अपने धर्म का प्रचार न करें। (७) अपने किसी भाई को मुसलमान होने से न रोकें (८) मुसलमानों के समान कपड़े, जूते और पगड़ी न धारण करें (९)कमर में पटका बांधा करें। (१०) अरबी भाषा में पत्र व्यवहार न करें। (११) मुसलमानों के आने पर खड़े हो जाया करें और जब तक बैठने की आज्ञा न मिले न बैठें। (१२) तीन दिन तक मुसलमान मुसाफिर को मुफ़्त अपने घर में रक्खा करें। (१३) शराब न बेचें। (१४) घोड़ा पर काठी न रक्खें। (१५) शस्त्र धारण न करें। (१६) किसी आदमी को जो मुसलमान के पास नौकर रह चुका हो, नौकर न रक्खें।

२७—अरस्ता के क़िले पर अधिकार

ख़लीफ़ा उमर यरोशलम में दस दिन रह कर मदीना वापस चला गया। जाते समय शाम देश को दो भागों में बांट कर उत्तरी भाग का शासन यज़ीद इब्ने अबुसफ़यान और दक्षिण भाग का अबू-अबीदा को अधीन कर गया तथा अमर इब्ने आस को मिसर और

साद इब्ने अबि बिकास को ईरान पर चढ़ाई करने की आज्ञा करता गया।

ख़लीफ़ा के चले जाने पर अबू अबीदा हलब पर अधिकार करने के लिये रवाना हुआ। मार्ग में अरस्ता का क़िला पड़ा और उसके सरदार के मुसलमान बनने या जज़िया देने से इन्कार करने पर वहां के सेनापति से दोस्ती करके आगे जाने का विचार प्रगट किया, साथ ही यह भी कहा कि हमारे २० संदूक अपने यहां रख लो लौटती वार वापस लेलेंगे। बेचारे सेनापित ने मोहम्मदी मित्र का विश्वास करके उन संदूकों को अपने गोदाम में रख लिया, उसे क्या मालूम था कि इन सन्दूक़ों में विश्वासघाती भित्र के चुने हुये साथी घुसे हैं।

जब सन्दूक रख गये अबू अबीदा प्रकट रूप से आगे को रवाना होगया, किन्तु वह अपनी फ़ौज समेत इधर उधर छिपा रहा। वह दिन रविवार का था, जब सेनापति और अन्य ईसाई ईश्वर-स्तुति करने के लिये गिरजे में गये, सन्दूक के भीतर के आदमी बाहर निकल आये और गिरजे बाहर के दरवाज़े बन्द कर दिये, फिर अल्लाहो अकबर चिल्लाने लगे। उनकी आवाज़ सुनकर मोहम्मदी लोग, जो बाहर छुपे हुये थे, क़िले में घुस आये और उस पर अपना अधिकार कर लिया।

२८—हलब पर आक्रमण

अरस्ता को जीतने के पश्चात् मोहम्मदी लोगों ने हलब को जा घेरा। यह क़िला सारे शाम देश में सब से अधिक मज़बूत था और यहां धनी व्यापारी भी बहुत रहते थे। यहां का गढ़पति मर गया था। उसके दो पुत्र युकन्ना और युहन्ना थे। युहन्ना साधु स्वभाव का था, उसने लड़ाई करना पसन्द न करके सन्धि के लिए आदमी

भेज दिये, किन्तु युकन्ना, जो वीर व युद्ध प्रकृति का आदमी था, उसने अपने भाई की बात न मानकर युद्ध की तैयारी करदी तथा अपने रास्ते में भाई को विघ्न डालते देख उसका सर काट डाला और रणभूमि में जा पहुंचा। मोहम्मदी शक्ति प्रबल होने के कारण उसके ३००० आदमी मारे गये। लड़ाई पांच मास तक रही, किन्तु फिर भी मोहम्मदी लोग क़िले पर क़ब्जा न कर सके। एक दिन एक ईसाई टामस इब्ने हील अबू अबीदा से मिला और कुछ लेकर उसके आदमियों को रात्रि के समय चुपके से क़िले के भीतर पहुंचा दिया। इन आदमियों ने पहरे के संतरियों को, जो सोये पड़े थे, मार डाला और फाटक खोल दिया, जिसके द्वारा मोहम्मदी लोग क़िले में घुस गये और लोगों को गाजर मूली की तरह काटने लगे। मरता क्या न करता, अन्त में क़िले वालों ने युकन्ना समेत मोहम्मदी कलमा पढ़ लिया और अपनी जान बचाई, युकन्ना का नाम अब्दुल्ला रक्खा गया।

२६—ऐजाज किले पर अधिकार

युकन्ना ने अपने चचा के बेटे थियोडस को जो ऐजाज के क़िले का अधिकारी था, अपने जैसा बनाने की सोची, अतः उसने अबू अबीदा से कहा कि मेरे साथ एक सौ आदमी दे दीजिये तो मैं ऐजाज पर आपका अधिकार करा दूं, अतः सौ आदमी साथ लेकर फाटक पर पहुंचा, किन्तु उसके षड्यन्त्र को एक भेदी ने लिखकर कबूतर द्वारा थियोडस के पास भेज दिया, जिससे थियोडस ने युकन्ना और उसके साथियों को क़िले के भीतर क़ैद कर दिया, इस कारण अबू अबीदा और अन्य मोहम्मदी लोगों को भीतर से कुछ मदद न मिल सकी और बाहर इधर उधर ताक में फिरने लगे। भावी बड़ी प्रबल होती है, थियोडस को यह न मालूम था कि मेरे घर में

मेरा पुत्र ही मेरा शत्रु है, उसका पुत्र युकन्ना की पुत्री पर मोहित था, वह युकन्ना को अपने बाप के क़ैद में देख कर अपने मतलब की बात सोचने लगा और उसके पास जाकर कहने लगा कि यदि आप अपनी पुत्री का विवाह मेरे साथ करदें तो मैं आप को क़ैद से छुड़ा दूंगा और शस्त्र भी देदूंगा साथ ही साथ मैं मुसलमान भी हो जाऊँगा । युकन्ना ने अपनी लड़की देना स्वीकार कर लिया, अतः देश द्रोही पुत्र ने उसे उसके साथियों समेत क़ैद से छोड़ दिया और उन्हें शस्त्र दे कर लड़ने के योग्य बना दिया और खुद मोहम्मदी बन गया। उधर अबू अबीदा ने बाहर एक नई चाल चली। थियोडस के उस आदमी को, जो बाहर लूकस से मदद मांगने जारहा था, पकड़ लिया और सारा भेद जान लिया। जब लूकस अपने ५०० सवार लिये हुए थियोडस की मदद के लिये आरहा था, मोहम्मदियों ने घेर लिया, अपनी संख्या थोड़ी देखकर उसने हथियार डाल दिये। अबू अबीदा ने इतने पर ही बस न किया, उन्हें अपनी ओर करके थियोडस के पास भेज दिया और कहला भेजा कि लूकस अपने सवारों सहित तुम्हारी मदद के लिया आया है। थियोडस ने उसके आगमन के लिए फाटक का दरवाज़ा खोल दिया, जिससे उन ५०० के साथ २ मोहम्मदी सिपाही भी क़िले में घुस गये। उसी बीच थियोडस के पुत्र ने अपने बाप का वध कर डाला, जिससे क़िले वाले और भी शक्ति-हीन होगये और मोहम्मदियों का उन पर अधिकार होगया।

३०—अन्ताकिया पर अधिकार सं० ६९५ वि० में

अबू अबीदा ने विचार किया कि जब तक राजधानी पर अधिकार नहीं, शाम देश पर पूरी विजय नहीं कही जा सकती, अतः अन्ताकिया पर धावा बोल दिया। पहिले एक जाल यह रचा कि

युकन्ना अपने सौ साथियों समेत ईसाइयों का भेष बना अन्ताकिया पहुंचा और वहां के बादशाह हरीकुलेश से कहा कि मुझे मोहम्मदियों ने लूट लिया और मेरे क़िले पर अधिकार कर लिया है, इसलिये अपनी जान बचाकर आपकी शरण आया हूं। बादशाह ने कहा कि तुम तो मोहम्मदी बन गये थे, उसने उत्तर दिया कि केवल अपनी रक्षा के लिए मैंने ऐसा किया था और मौक़ा पाकर मैं अपने १०० आदमियों समेत यहां भाग आया हूं। बादशाह को उसकी बातों पर विश्वास आगया। अतः उसको उसके साथियों समेत अपने यहां रख लिया। धीरे २ युकन्ना ने बादशाह पर अपना विश्वास खूब जमा लिया, यहां तक कि बादशाह ने उसे अपना मन्त्री बना लिया।

अबू अबोदा के कुछ साथी पकड़े जाकर बादशाह के सामने लाये गये, बादशाह ने मारने का हुक्म देदिया, किन्तु युकन्ना की सिफ़ारिश पर उन्हें क़त्ल के बदले क़ैद में डाल दिया गया। यह भी एक चाल थी, जिस के द्वारा कुछ और मोहम्मदी क़िले में प्रवेश कर गये।

इस प्रकार से क़िले के भीतर काफ़ी तादाद मोहम्मदियों की करके अबू अबीदा ने क़िले पर हमला कर दिया। क़िले के रास्ते में एक लोहे का पुल था और बुर्ज में बादशाह की सेना थी, जिसने युकन्ना के मना करने पर मोहम्मदी फ़ौज से लड़ाई न करके रास्ता दे दिया और इस प्रकार से अबू अबीदा की सारी फ़ौज पुल पार करके क़िले के सामने आगई, किन्तु अब भी बादशाह हरीकुलेश को होश न आया, उसने युकन्ना से पूछा अब क्या करना चाहिये। युकन्ना ने कहा पादरी और महात्माओं से अपनी विजय के लिये प्रार्थना करिये "विनाशकाले विपरीतबुद्धिः" बादशाह ने वैसा ही किया। कुछ देर के लिये फाटक पर लड़ाई होती रही, किन्तु युकन्ना

के साथियों और उन मोहम्मदी क़ैदियों ने, जो क़िले के भीतर थे, क़िले का फाटक खोल दिया और सबों ने मिलकर शहर और क़िले पर अधिकार कर लिया। अब हरीकुलेश को युकन्ना का असली रूप दिखाई दिया, पर अब पछताये होता क्या जब चिड़ियां चुग गईं खेत, बेचारा रोता पीटता क़िले से बाहर निकला और एक जहाज़ पर सवार होकर कुसतुनतुनिया चला गया। बादशाह के जाते ही शहर वालों ने जज़िया देना स्वीकार करके क़िले को मोहम्मदियों के हाथ में दे दिया।

३१—त्रिपुलि और काहर की चढ़ाई

देश द्रोही युकन्ना अन्ताकिया पर मोहम्मदियों का अधिकार करा कर ईसाई भेष में अपने साथियों समेत त्रिपुली जा पहुंचा। वहां के लोगों को इसके मोहम्मदी बनने और बादशाह के साथ नमक हरामी करने का मालूम नहीं था, उन्हों ने इसको बादशाही सेनापति समझ कर बड़े आदर-सत्कार से क़िले में रखा। युकन्ना ने किले में पहुंच कर अपने एक दूत द्वारा अबू अबीदा को बुलावा भेजा और उसके आने पर क़िले का फाटक खोल दिया और त्रिपुली को मोहम्मदियों के अधिकार में कर दिया।

फिर युकन्ना अपने साथियों समेत जहाज़ पर बादशाह हरीकुलेश का झंडा लगा कर काहर को रवाना हुआ। वहां के हाकिम ने भी उसके असली रूप को न पहचान कर बड़ा आदर-सत्कार किया और क़िले में लेगया, परन्तु शीघ्र ही एक जासूस ने सारा भांडा फोड़ दिया, जिससे युकन्ना अपने साथियों समेत क़ैद होगया।

युकन्ना ने जेल के रक्षक को घूंस देकर अपनी ओर मिला लिया और उसे मोहम्मदी भी बना लिया, जिसने युकन्ना और उसके साथियों को ठीक उस समय जेल से निकाल दिया, जब कि क़िले

की फ़ौज क़िले के बाहर अबू अबीदा की फ़ौज से लड़ रही थी। युकन्ना ने अपने साथियों को क़िले के दरवाज़े पर खड़ा कर दिया, जिन्होंने दरवाज़े के रक्षकों को मार कर फ़ाटक खोल दिये, फिर क्या था, मोहम्मदी फ़ौज अल्लाहो अकबर पुकारती हुए क़िले में घुस गई और मारकाट आरम्भ करदी। हरीकुलेश का बेटा, जो इस क़िले का अधिपति था, अपनी जान लेकर भाग निकला और अपने बाप के पास चला गया।

३२—क़ैसरिया आदि स्थानों पर चढ़ाई

खलीफ़ा ने यरोशलम से जाते समय अमर इब्नेआस को मिश्र देश पर आक्रमण करने की आज्ञा दी थी। अमर ने कुछ दिन फ़िलस्तीन में ठहर कर उन नगरों पर अधिकार करने की चेष्टा की जो अभी मोहम्मदी अधिकार में नहीं आये थे। अपने अभिप्राय की सिद्धि के लिये एक विशाल सेना के साथ क़ैसरिया जा पहुंचा और वहां के अधिपति को मोहम्मदी बनने या जज़िया देने के लिये कहा। अधिपति ने दोनों बातों से इनकार किया और लड़ाई के लिये मैदान में आ डटा। सायं-काल तक खूब घमासान लड़ाई हुई, किन्तु सूर्यास्त होने पर एक मोहम्मदी, ने जो ईसाई भेप में ईसाइयों की सेना में था, पीछे से आकर ईसाई वीर का सिर काट लिया। उसके कटते ही मोहम्मदी अल्लाहो अकबर पुकारते हुए नगर में घुस गये और उस पर अपना अधिकार कर लिया।

जब मोहम्मदियों के अत्याचार और रक्तपात से सारा शाम देश बिलबिला उठा, परमात्मा की ओर से महामारी ने उनसे बदला लेना आरम्भ कर दिया। इस महामारी ने बड़ा विकराल रूप धारण कर लिया और धीरे २ क़ैसरिया तक पहुंच गई। वहां

मोहम्मदियों का मुख्य सेनापति अबू अबीदा, तथा उसके और बड़े २ योधा, नमकहराम युकन्ना और पच्चीस हज़ार मोहम्मदी इस महामारी के चंगुल में फंस गये और अपनी कीर्ति को यहां ही छोड़ कर इस दुनियां से सदा के लिये चले गये।

खलीद भी, जिसने मोहम्मदी बन कर किसी पर दया नहीं की, तलवार के सिवा दूसरी चीज़ से जिसने काम नहीं लिया और जिसका हृदय 'दया करो' पुकारने वाले अनाथ और निर्दोष ईसाइयों पर भी नहीं पसीजा, काल से न बच सका। ख़लीफ़ा ने उसको अपनी प्रशंसा की कविता के उपलक्ष में कवि को तीस हज़ार रुपये इनाम दे डालने के अभियोग में मुख्य सेनापति के पद से उतार दिया और उसको उसी की पगड़ी से बांध कर अपने सामने लाने की आज्ञा दी। उसने अपने निर्दोष होने के बहुत से प्रमाण दिये, फिर भी ख़लीफ़ा ने उसे कोई पद न देकर अपने घर चले जाने की आज्ञा दी, जहां बहुत कष्ट भोग कर वह मर गया। कहते हैं मृत्यु के पश्चात् उसके घर में केवल एक घोड़ा और शस्त्र के सिवाय कुछ नहीं निकला।

जब सारा शाम देश मोहम्मदियों के अधिकार में आगया, अमर इब्ने आस पांच हज़ार सवारों का लेकर मिश्र की तरफ़ बढ़ा और उस देश में घुसते ही फरवान नामक स्थान, जो रोम समुद्र और लाल समुद्र के बीच में था और जहां इस समय स्वेज़ नहर है, पर अधिकार कर लिया। फिर आगे बढ़ कर मेमफ़िस नगर को, जहां का क़िला बहुत मज़बूत था, जा घेरा। वहां के सेनापति ने क़िले के खजाने को हड़प करने की नियत से अमर को कहला भेजा कि यदि आप सारा ख़ज़ाना मेरे लिए छोड़ दें तो मैं क़िले पर आपका अधिकार करा दूं। उमर को इससे अधिक और क्या चाहिये था, उसने तत्काल मकोकस सेनापति की बात मानली

और उसको मिलाकर क़िले पर मोहम्मदी झंडा गाड़ दिया। नगर वालों ने अपने को अरक्षित समझ कर जज़िया देना और उन नियमों पर, जो ख़लीफ़ा ने यरोशलम के लिए बनाये थे, चलना स्वीकार कर लिया।

यहां से छुट्टी पाकर उमर सकंदरिया की ओर रवाना हुआ और वहां पहुंचते ही किले को घेर लिया, किन्तु शीघ्र ही उमर, उसका चाकर और एक नायक पकड़े गये, जब यह तीनों हाक़िम के सामने लाये गये, हाकिम ने उनके सिर काटने का हुकुम दे दिया, किन्तु उनमें से एक ने हाकिम से कहा कि खलीफ़ा ने उमर को संधि करने के लिये आज्ञा दी है, यदि आप हम लोगों को छोड़दें तो हम लोग उमर से कह कर जल्दी ही संधि कराने की चेष्टा करेंगे। हाकिम ने, जो यह न जानता था कि इन तीन क़ैदियों में उमर भी है, तीनों को छोड़ दिया। उनके पहुंचते ही मोहम्मदी सेना में आनन्द के बाजे बजने लगे और उन्हों ने चारों तरफ़ से नगर को घेर लिया तथा खाने पीने की सामग्री भीतर जानी बन्द करदी। लगभग चौदह मास तक युद्ध होता रहा, जिस में तेईस हज़ार मोहम्मदी मारे गये।

ईसाइयों को भी बड़ी क्षति हुई उनको बाहर से कोई सहायता न मिल सकी, किन्तु उमर को मदीने से नई २ फ़ौजों की मदद मिलती रही। अन्त में खाना और पानी पास न रहने के कारण ईसाइयों का धैर्य्य छूट गया और उन्होंने आत्मसमर्पण करके संवत् ६९७ वि० में सिकंदरिया का अद्भुत नगर मोहम्मदियों के अधिकार में दे दिया। इस नगर में चार हजार महल, पांच हज़ार स्नान घर, चार सौ नाट्यशाला, बारह हज़ार बाग़ और ईसाइयों के अतिरिक्त चालीस हज़ार यहूदी साहूकार रहते थे। जिस समय बादशाह हरीकुलेश को मकोकस की नमक हरामी के कारण मिश्र

देश के हाथ से निकल जाने का हाल मालूम हुआ, उसके हृदय की गति बंद हो गई और मर कर पृथ्वी पर गिर पड़ा।

इसी सिकंदरिया नगर में एक विशाल सरस्वती भवन (पुस्तकालय) था, जिस में हिन्दुस्तान, फ़ारस, मिश्र और यूनान देश के बड़े २ विद्वानों को लिखी हुई दस लाख पुस्तकों का संग्रह था। जब उमर के अधिकार में मिश्र देश का राज्य आगया, उसने पत्र द्वारा ख़लीफा से पूछा कि इन पुस्तकों को क्या करना चाहिये, ख़लीफ़ा ने उत्तर में लिखा कि पुस्तकों का विषय या तो .कुरान के अनुकूल होगा या प्रतिकूल, यदि अनुकूल है तो उनके रखने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि उनका विषय कुरान में आ चुका है, यदि प्रतिकूल है तो उनको इस लिये रखने की आवश्यकता नहीं है कि उन में कुफ़ भरा है, अतएव हमारी आज्ञा है कि पुस्तकों को नष्ट कर दिया जाय। उमर ने ख़लीफा की आज्ञा पालन करते हुए नगर के पांच हज़ार हम्माभो (स्नानानागार) में लकड़ी की जगह जलाने के लिये इन पुस्तकों को बांट दिया। कहा जाता है कि छः मास तक इन पांच हज़ार हम्मामों में ये पुस्तकें ईंधन का काम देती रहीं।

३३—ईरान (पर्शिया) देश पर आक्रमण

एशिया महाद्वीप के मध्य में अरब और हिन्दुस्तान के बीच फ़ारस नामक देश है, जिसे ईरान भी कहते हैं। भाषा विज्ञान (Philology) और शरीर विज्ञान (Etnrology) के विद्वानों का मत है कि ईरानी और हिन्दू सहोदर भाई हैं, यहां के लोग अग्निहोत्र करते थे। बम्बई प्रान्त के पारसी किसी समय ईरान से ही यहां आये थे, अब इस देश के लोग मोहम्मदी मत की एक 'शाखा' शिया सम्प्रदायी हैं। आज से अनुमान २५०० वर्ष पूर्व ईरानियों का राज्य बड़ा शक्ति शाली था। इनके राज्य की सीमा पश्चिम में यूनान और पूरब में

हिन्दुस्तान तक थी। ईसा से ३२८ वर्ष पहले यूनान देश के अन्तर्गत मक़दूनिया प्रान्त के बादशाह सिकन्दर आज़म ने इस देश पर आक्रमण करके इसकी शक्ति खंड २ कर डाली। रोमियों के लगातार आक्रमणों ने इनकी शक्ति को बहुत कुछ घटा दिया, इसी कारण मोहम्मदियों को इस देश को लूटने और अपने अधिकार में लाने के लिये बहुत परिश्रम नहीं करना पड़ा।

संवत् ६८५ के लगभग मोहम्मद साहब ने ईरान देश के बादशाह ख़ुसरो के पास अब्दुल्ला को भेज कर मोहम्मदी धर्म स्वीकार करने के लिये कहलवाया था। ख़ुसरो ने उसको निकाल कर अपने हाकिम हुरमुज़ को लिखा कि पागल मोहम्मद का या तो शिर कटवा दो या क़ैद कर दो, परन्तु हुरमुज़ ने मोहम्मदियों से मिल कर अपने स्वामी की आज्ञा पालन न की। मोहम्मद सा० की मृत्यु के पश्चात् ख़लीफ़ा अबू बकर ने ख़लीद इब्ने वलीद को ईरान देश पर चढ़ाई करने के लिये नियत किया, किन्तु शीघ्र ही शाम देश पर जाने के लिये वापस बुला लिया।

संवत् ६८७ में ईरान देश के सरदारों ने राजकुमार शेरूया से मिलकर द्वितीय ख़ुसरो या परवेज़ को गद्दी से उतार दिया और क़त्ल कर डाला, शेरूया ने गद्दी पर बैठते ही, उसकी बेगम शीरीं, जो अपने रूप और चतुराई के कारण सारे ईरान देश में विख्यात थी, को अपनी स्त्री बनाना चाहा, किन्तु शीरीं अपने पति के पुत्र के इस घृणित विचार से सहमत न हुई और अपने धर्म रक्षा के लिए अपने हृदय में कटार भोंक कर आत्महत्या कर डाली। शीरीं को न पाकर शेरूया पागल हो गया और थोड़े ही दिनों में मर गया। उसकी जगह उसका नाबालिग़ बेटा अरदशे गद्दी पर बिठाया गया, जो शीघ्र ही शहर यार के हाथ मारा गया। शहर यार अभी गद्दी पर बैठने भी न पाया था कि किसी

ने उसके प्राण लेलिये। शहरयार के मारे जाने पर तूरां दुख्त राज की मालिक हुई, परन्तु १८ महिने के बाद शिनानी देह ने उस को गद्दी से उतार दिया। शिनानी देह को भी सरदारों ने मिलकर गद्दी से हटा दिया और .खुसरो की दूसरी बेटी आरज़म दुख्त को रानी बनाया। इस समय ईरान की राजधानी मदाईन नगरी थी, जो फ़रात नदी के किनारे आबाद थी।

आरज़म दुख्त ने अपने सरदारों की नीचता को समझकर विना मंत्री के शासन करना आरंभ कर दिया, जिससे उसके सरदार उस से असंतुष्ट रहने लगे, इस कारण मोहम्मदियों को धावे मारने के लिये अच्छा अवसर प्राप्त हुआ। जब उमर ख़लीफ़ा हुआ, उसने अबू अबीदा को एक हज़ार सवार देकर ईरान की ओर भेजा, जिस ने ईरान की सीमा पर पहुंचते ही लूट-मार मचादी, इनके मुक़ाबिले के लिये महारानी ने ३० हज़ार सवार रुस्तम इब्ने फ़रुख़ज़ाद के साथ भेजे, पीछे से बहमन सहदेव के साथ तीन हज़ार सवार और ३० जंगी हाथी रुस्तम की मदद के लिये भेजे। जिस समय अबू अबीदा अपनी फ़ौज सहित फ़रात नदी पर पुल बांध कर पार होने लगा, रुस्तम के धनुषधारियों ने, जो नदी के किनारे खड़े थे, बाण-वर्षा आरंभ करदी, इस से बहुत से मोहम्मदी मारे गये, उनका सेनापति अबुअबीदा घोड़े की ठोकर खाकर गिर पड़ा, जिसे एक हाथी ने अपने पांव तले पीस डाला। सेनापति के मरते ही उसकी बची हुई सेना भाग निकली।

ख़लीफ़ा उमर ने अपनी हार के समाचार सुन कर एक बड़ी सेना मदीने से मस्ना के अधीन भेजी। महारानी ने भी उनके मुकाबिले के लिये १२ हज़ार सवार भेजे, जिन्होने हीरा नगर के पास इन लुटेरों का मुक़ाबिला किया और तुरन्त ही मार भगाया, किन्तु मस्ना के धिक्कार देने पर मोहम्मदी लोग फिर वापस

आगये और लड़ाई आरम्भ करदी, जब सूर्यास्त होने लगा, मस्ना ने इस के सेनापति से कहा कि ग़रीब सिपाहियों के कटवाने से क्या लाभ, हम और आप आपस में ही लड़ कर फ़ैसला करलें, जिसे उसने स्वीकार कर लिया और दोनों युद्धक्षेत्र में निकल पड़े और अपने २ तलवार के हाथ दिखाने लगे, मस्ना ने चालाकी से ईरानी सेनापति पर क़ाबू कर लिया और तलवार से उसकी गर्दन उड़ादी। उस के मरते ही ईरानी सेना भाग निकली और राजधानी में पहुंच कर दम लिया।

ईरानियों के भागने पर मोहम्मदी लोग ने पास ही के बग़दाद नगर में, जहां उस समय एक बड़ा भारी मेला लगा हुआ था, घुस पड़े और बेचारे निर्दोष व्यापारियों को लूट कर रोती और चिल्लाती अबलाओं को क़ैद कर लिया। इस लूट के समाचार सुन कर ईरानी सरदारों को अपनी महारानी के विरुद्ध जनता में घृणा उत्पन्न कराने का और भी मौक़ा मिल गया।

फ़रुख़ज़ाद नाम का एक सरदार, जो महारानी के प्रेम में आसक्त था और जिससे महारानी ने विवाह करना अस्वीकार कर दिया था, एक रात महारानी के महल में घुस गया, किन्तु महारानी के रक्षकों के हाथ से मारा गया। फरुख़ज़ाद का बेटा रुस्तम अपने बाप के मारे जाने का हाल सुनकर बदला लेने के लिये एक बड़ी फ़ौज के साथ राजधानी में घुस आया और उसने बड़ी निर्दयता के साथ महारानी का वध कर डाला, तब ख़ुसरो परवेज़ का बेटा, जो बाक़ी रह गया था, गद्दी पर बिठाया गया, परन्तु चार ही दिन बाद उसको किसीने विष देकर मार डाला, इसलिये सरदारों ने ख़ुसरो परवेज़ के पोते यज़्दगुर्द को राजसिंहासन पर बैठाया, उसकी उम्र अभी केवल १५ वर्ष की थी, उसने गद्दी पर बैठते ही सेना भरती करना आरम्भ कर दिया और उसके संचालन का भार

फरुख़ज़ाद के बेटे रुस्तम को सौंपा। रुस्तम ने अरबी लुटेरों को निकालने के लिये अपनी फ़ौज लेकर फ़रात नदी के किनारे छावनी डाल दी।

इधर ख़लीफ़ा उमरने भी यह समाचार सुन कर जेहाद की घोषणा कर दी और कुछ फ़ौज इकट्ठी करके साद इब्ने अबि विकास को उसका अफ़सर बनाया और ईरानियों के मुक़ाबिले के लिये भेज दिया।

३४—क़ादसिया की लड़ाई (सं० ६६२ वि०)

साद इब्ने अबि विकास केवल ६ हज़ार सवारों को लेकर मदीना से निकला था, किन्तु मार्ग में मोहम्मदियों के दल के दल लूट और स्त्रियों के लालच तथा स्वर्ग में शराब और हूरों की इच्छा से उसके साथ मिलते गए, यहां तक कि जब वह मस्ना के पास पहुंचा, उसके साथ ३० हज़ार सवार थे। साद के पहुंचने के तीन दिन बाद मस्ना मर गया। मस्ना के साथ उसकी जवान रूपवती स्त्री थी, जिसे साद ने, जो इस समय ६० वर्ष का था, अपनी स्त्री बना लिया। तत्पश्चात् उसने बादशाह यज्दगुर्द से कहला भेजा कि या तो कलमा पढ़ो या जज़िया दो। यज्दगुर्द ने दूतों की पीठ पर मिट्टी के बोरे लदा कर निकलवा दिया। साद ने यह समाचार सुन अपनी फ़ौज को लड़ने के लिए हुक्म दे दिया। घमासान युद्ध होने लगा और मोहम्मदियों के पांव डगमगाने लगे इतने ही में शाम देश से नई सेना उनकी सहायता के लिये आ गई। जिससे साद और उसकी सेना को सुस्ताने का अवसर मिल गया। इधर ईरानी फ़ौज लगातार कई दिन लड़ाई करते रहने के कारण थक गई थी। इसी बीच काली पीली आंधी चल पड़ी, जिससे रुस्तम का तम्बू गिर पड़ा और उसकी आंखों में भी रेत पड़ गई। इस

घटना को देख कर उसके नमक हराम बाडीगार्ड हुरमुज़ ने उसका साथ छोड़ दिया और सवारों को लेकर दूसरी तरफ़ चला गया, जिससे रुस्तम अकेला रह गया, वह शत्रुओं को अपनी तरफ़ बढ़ता देख कर नहर में कूद पड़ा, परन्तु मोहम्मदियों ने बाल पकड़ कर उसे निकाला और उसका शिर काट कर भाले पर लटका दिया। सेनापति के शिर को देखते ही ईरानी सेना भाग निकली। इसी लड़ाई में ३० हज़ार ईरानी और ७ हज़ार मोहम्मदी मारे गये।

क़ादसिया का युद्ध समाप्त होने के पश्चात् फ़रात और दजला नदी के संगम पर ख़लीफ़ा उमर की आज्ञा से बसरा नाम का नगर बसाया गया जो अब तक विद्यमान है

क़ादसिया से सादा नव्वे हज़ार सवारों के साथ मदाईन राजधानी की तरफ़ बढ़ा। बादशाह यज्दगुर्द ने सरदारों से पूछा कि अब क्या करना चाहिये। ईरानियों में यह बात प्रसिद्ध थी कि जिस दिन उनका राष्ट्रीय झंडा उनके हाथ से निकल जायगा उसी दिन उनका राज्य भी चला जायगा और चूंकी क़ादसिया के युद्धक्षेत्र में यह राष्ट्रीय झंडा मोहम्मदियों के हाथ में चला गया था, जिससे सारे ईरानियों का यह विश्वास होगया कि अब राज्य भी उनके हाथ से चला जायगा, इसके अतिरिक्त उनमें आपस में फूट भी पड़ गई। अतएव सरदारों ने बादशाह यज्दगुर्द को भागने की सम्मति दी। यद्यपि सरदारों की यह दशा पसंद नहीं आई, किन्तु उन नमक हराम सरदारों के साथ न देने पर उसे अपनी बेगमों और बहु मूल्य रत्नों को साथ लेकर राजधानी से भागना पड़ा। उसके निकल जाने पर अरबी लुटेरे नगर में बिना किसी रोकटोक के घुस गये और जिस प्रकार से उसका नाश किया उसकी वर्णन करना शक्ति से बाहर है।

यज्दगुर्द मदाईन से भागकर हलदान पहुंचा, वहां भी मोहम्मदी लुटेरों ने उसका पीछा किया और जलूला नामक नगर में उसकी सेना से मुक़ाबला किया। यह लड़ाई छः मास तक बारबर होती रही, अन्त में पारसियों के पास खाने पीने की सामग्री न रही और उनका सेनापति भी मारा गया, जिससे मोहम्मदियों का जलूला पर अधिकार होगया। यज्दगुर्द ने जलूला शत्रुओं के हाथ में जाने के कारण हलदान छोड़ दिया और रै नामक शहर में चला गया, शत्रुओं को जलूला को अधिकार में लाकर हलदान पर चढ़ाई की और अपने अधिकार में कर लिया।

इसी बीच साद के विरुद्ध बहुतसी शिकायतें ख़लीफ़ा के पास पहुंची, जिसके कारण ख़लीफ़ा ने उसके एक मकान को जलवा दिया। यज्दगुर्द यह समाचार सुन कर बहुत खुश हुआ और १॥ लाख पारसी फ़ौज इकट्ठी कर के अपनी मातृभूमि से म्लेच्छों को निकालने के लिये कटिबद्ध हुआ। उधर मदीना से नेमान सेनापति की अध्यक्षता में एक विशाल सेना पारसियों के मुक़ाबले के लिये रवाना हुई जिसने नहांवंद को जा घेरा। पारसियों का सेनापति फ़ीरोज़ बहुत बूढ़ा और कमजोर था, यह आक्रमण करने के बदले अपने बचाव की युक्तियां करता रहा। मोहम्मदियों ने कूच की तयारी करदी। यह ख़बर पाकर फ़ीरोज़ अपनी सेना सहित क़िले से बाहर निकला, मोहम्मदी लोग, जिन्होंने कूच करने का एक ढोंग रचा था, लौट कर पारसी सेना पर टूट पड़े, मोहम्मदियों की सेना बहुत अधिक थी, फिर भी फ़िरोज़ के एक तीर ने नेमान को सदा के लिये ठंढा कर दिया। नेमान के मारे जाने पर हज़ीफ़ सेनापति बनाया गया, जिसने पारसियों को परास्त कर फ़ीरोज़ को मार डाला। कहा जाता है कि इस युद्ध में एक लाख पारसी मारे गये थे। जो पारसी सेना बच गई वह

हमदान के क़िले में चली गई। कहते हैं कि नहांवंद की लूट में एक डब्बा जवाहिरात का, जिसे बादशाह यज्दगुर्द ने भागते समय अपने पुरोहित को दिया था, मोहम्मदियों के हाथ लगा, जिससे उन्होंने ख़लीफ़ा के पास भेज दिया, किन्तु ख़लीफ़ा ने उन जवाहरात को यह कह कर लौटा दिया कि यह कंकड़ पत्थर हमारे काम के नहीं हैं, इनको बेचकर जो धन मिले मोहम्मदियों में बांट दिया जावे। हज़ीफ़ ने उन जवाहारत को ३ अरब २० करोड़ रुपये में बेचा। मोहम्मदी सेना चालीस हज़ार थी, इसलिये प्रत्येक आदमी को अस्सी २ हज़ार रुपया मिला। हमदान पर भी मोहम्मदियों ने आक्रमण किया और उस पर अपना अधिकार जमा लिया फिर रै नगर की तरफ़ रवाना हुए, परन्तु वहां यज्दगुर्द नहीं मिला, मोहम्मदी लोग एक विश्वासघाती पारसी की मदद से उस नगर में घुस गये, और सारे शहर को लाशों से पाट दिया, जिससे खून की नदियां बहने लगीं। वहां का सेनापति मारा गया और मोहम्मदियों ने अपना झंडा गाढ़ दिया, फिर आजुर बाय जान जा पहुंचे, इस नगर में पारसियों का सबसे बड़ा मंदिर था, उसे भी इन्होंने ज़मीन के बराबर कर दिया। वाशिंगटन इरविंग साहब लिखते हैं कि अरब वालों को यदि 'राक्षस' कहा जाय तो कुछ अनुचित नहीं है। जिस समय साद ने फ़ारस की राजधानी मदाईन में प्रवेश किया यज्दगुर्द बादशाह की तीन जवान बेटियां पकड़ी गईं, साद ने उन तीनों को ख़लीफ़ा के पास मदीना भेज दिया, जब यह देवियां ख़लीफ़ा के सामने लाई गईं, ख़लीफ़ा ने एक मोहम्मदी को इनके आभूषण उतारने की आज्ञा दी, किन्तु उन देवियों में से एक ने डांट कर कहा 'ख़बरदार हमारे शरीर को हाथ मत लगाना, हम आभूषण स्वयं उतार देंगीं, राजकुमारी की यह बात सुनकर निर्दयी ख़लीफ़ा की आंखों में खून उतर आया, उसने दो तीन मोहम्मदियों

को हुक्म दिया कि इसके कपड़े उतार लो और कोड़ों से खाल उड़ा दो, किन्तु अली के समझाने पर ख़लीफ़ा ने अपना हुक्म वापिस ले लिया और उसकी जान बच गई। अली ने इस लड़की का अपने बेटे हसन की साथ विवाह कर दिया, दूसरी बेटा अब्दुल रहमान इब्ने अबू बकर और तीसरी अब्दुल्ला इब्ने उमर को दी गई।

जो क़ैदी ईरान से पकड़ कर मदीना लाये गये थे, उनमें फ़ीरोज़ नाम का एक खाती भी था, वह एक मोहम्मदी को गुलाम के तौर पर दिया गया, जो दो रुपये उससे जज़िया रोज़ लिया करता और आठ आने के लगभग उसे देता था। इस बात की शिकायत फ़ीरोज़ ने ख़लीफ़ा से की, किन्तु ख़लीफ़ा ने उत्तर दिया कि तेरे लिये आठ आने बहुत हैं और तेरा मालिक जो दो रुपये रोज़ ले लेता है उसके लिये उचित है। इस बात से फ़ारोज़ जला हुआ बैठा ही था कि एक दिन हसन की पत्नी (यज़्दगुर्द की लड़की) ने खिड़की पर से फ़ीरोज़ को जाते हुए देख कर कहा कि "डूब मर तुझको अपने देश, धर्म और बादशाह की इज्ज़त का कुछ भी विचार नहीं है, यदि तू कुछ भी नहीं कर सकता तो डूब मर" फ़ीरोज़ के दिल में यह बात चुभ गई। एक दिन वह काम पर न जाकर मसजिद में चला गया, जहां ख़लीफ़ा नमाज़ पढ़ रहा था, जब ख़लीफा ने प्रार्थना के लिए शिर झुकाया उसने गर्दन और कमर पर तीन हाथ छुरे के मारे। यह देख कई मोहम्मदी उस पर टूट पड़े, परन्तु उसने पांच सात को मार कर उसी छुरे से अपना आत्म-घात कर डाला। ख़लीफ़ा के घावों के भरने की बहुत चेष्टा की गई किन्तु कुछ लाभ नहीं हुआ और सातवें दिन उसके प्राण पखेरू उड़ गये। उसकी आयु उस समय ६३ वर्ष की थी। उसके शासन-काल में शाम, मिश्र, फ़िलेस्ताहीन और ईरान मोहम्मदियों के हाथ में आये। कहा जाता है कि ख़लीफ़ा उमर के शासन काल में ३६

हज़ार नगर और क़िले क़ाफ़िरों से छीने गये, चालीस हज़ार मन्दिर या गिर्जे ढाहे गये और कई लाख क़ाफ़िर क़त्ल किये गये।

३५—ख़लीफ़ा उस्मान इब्ने अफ़ान
[संवत् ७०१–७१२ वि०]

ख़लीफ़ा उमर की मृत्यु के पश्चात् ६ आदमियों की कमेटी ख़लीफ़ा चुनने के लिये बनाई गई, जिसने अली को इस शर्त पर ख़लीफ़ा बनाना मंजूर किया कि वह क़ुरान और हदीस को क़ानून मान कर अबू बकर और उमर के मार्ग पर चले। अली ने कहा कि मैं क़ुरान हदीस को तो क़ानून मान लूंगा, किन्तु इस बात पर पाबंद नहीं हूंगा कि जो कुछ अबू बकर और उमर ने किया है मैं भी वैसा ही करूं, मैं तो अपनी स्वतंत्र बुद्धि से काम लेकर जो कुछ मुझे ठीक मालूम होगा करूंगा। कमेटी ने फिर उस्मान से पूछा कि आप उपरोक्त शर्तें स्वीकार करते हैं या नहीं। उस्मान ने सारी शर्तें स्वीकार करलीं। अतएव कमेटी ने उस्मान को ख़लीफ़ा बना दिया। इस समय उसकी उम्र ७० वर्ष की थी।

ख़िलाफ़त की गद्दी पर बैठते ही उस्मान ने अब्दुल्ला इब्ने उमर पर कई निर्दोष पार्सियों को क़त्ल करने का अभियोग लगाया, किन्तु वे सारे उसके शासन काल के पूर्व के थे, इसलिये उसे कोई दण्ड न दे सका, फिर उसने पार्सियों के बादशाह यज्दगुर्द के पीछे अपनी फ़ौज रवाना की, क्योंकि ख़लीफ़ा उमर अपनी मृत्यु के समय कह गया था कि यज्दगुर्द को जिन्दा मत छोड़ना और उसका नामो-निशान दुनियां से मिटा देना। यज्दगुर्द कभी कहीं और कभी कहीं छिपता फिरा। मोहम्मदियों ने, यह सुनकर कि यज्दगुर्द असतख़र में छिपा है, उसे जा घेरा और उस पर अपना अधिकार कर लिया।

जब यज्दगुर्द वहाँ भी न मिला तो यह लोग .खुरासान की तरफ़ बढ़े । यज्दगुर्द ने चीन और तुर्किस्तान से भी सहायता मांगी, किन्तु वहां से उसे उचित सहायता न मिली, उसके साथियों ने भी मोहम्मदियों से मिलकर उसे उनके हाथ में दे देने की मन्त्रणा की । यज्दगुर्द को जब यह हाल मालूम हुआ, वह रात को अपनी पगड़ी के सहारे मर्व के क़िले से नीचे उतरा और अंधेरी रात में अकेला भाग निकला । मार्ग में एक नदी आई, उससे पार उतरने के लिये मल्लाह ने ४) मांगे । यज्दगुर्द के पास एक पैसा भी न था, वह अपनी रत्नजड़ित लाखों रुपये की अंगूठी मल्लाह को देने लगा, परंतु उसने न ली । इतने ही में कुछ मोहम्मदी वहां पहुंच गये और उन्होंने उसे पकड़ कर टुकड़े २ कर डाला । यज्दगुर्द के मरते ही पारसियों के भाग्य का मारतण्ड, जा ४००० वर्षों से बड़ी तीव्रशक्ति के साथ चमक रहा था, सदा के लिये अस्त हो गया ।

ख़लीफ़ा उस्मान ने अमर इब्ने यास को मिश्र की हुकूमत से उतार कर उसकी जगह अब्दुल्ला इब्ने साद को भेज दिया । अब्दुल्ला युद्ध प्रेमी था, किन्तु शासन करने की योग्यता उसमें न थी, जिससे मिश्र देश में बहुत गड़बड़ मच गई थी । जब यह हाल बादशाह कान्स्टेन्टीन को मालूम हुआ, उसने जल और थल दोनों मार्गों से सिकन्दरिया पर चढ़ाई कर दी और मोहम्मदियों को वहां से मार भगाया । ख़लीफ़ा ने जब यह समाचार सुने तो उसने अमर इब्ने यास को फिर सूबेदार बनाकर भेजा । अमर ने जाते ही नमक हराम ककूकस की सहायता से सिकन्दरिया को ईसाइयों के हाथ से छीन लिया । ख़लीफ़ा उस्मान ने अमर को फिर वहां से हटाकर अब्दुल्ला को भेज दिया । अब्दुल्ला ने अपनी योग्यता दिखाने के लिये इस बार उत्तरीय अफ्रीका पर आक्रमण करने की तैयारी करदी और चालीस हज़ार सवारों को लेकर त्रिपुली के तले छावनी डाल दी ।

कुछ यूनानी सेना शहर वालों की सहायता के लिये आई, परन्तु मोहम्मदियों ने उसे मार भगाया। जिस समय रोमन लोगों को मोहम्मदियों के आक्रमण का हाल मालूम हुआ, उन्होंने एक लाख बीस हज़ार सेना जनरल ग्रेगरस के आधीन कर के मुक़ाबिले के लिये भेजा। कई दिन तक लड़ाई घमासान होती रही, एक दिन, जब कि फ़ौज लड़ाई में लगी थी, अब्दुल्ला और ज़बीर उसके साथी ने पीछे से जाकर ग्रेगरस, जो कि अरक्षित बैठा हुआ था, का सिर काट लिया और उसकी युवा कन्या को, जो उसके साथ थी, क़ैद कर लिया। ग्रेगरस के मरते ही रोमी फ़ौज भाग निकली और मोहम्मदियों ने विजय प्राप्त कर के शहर अपने अधिकार में कर लिया।

मोहम्मद साहब पढ़े लिखे न होने के कारण अपनी चांदी की अंगूठी, जिस पर 'मोहम्मदुल रसूल अल्लाह' ख़ुदा था, से मोहर लगाया करते थे। यह मोहर उनकी मृत्यु के पश्चात् अबू बकर और अबू उमर काम में लाते रहे, किन्तु ख़लीफ़ा उस्मान से यह अंगूठी खो गई। ख़लीफ़ा उस्मान के समय तक क़ुरान की प्रतियां, जो लोगों के पास थीं, एक दूसरे से न मिलती थीं, अतएव उस्मान ने, यह विचार कर कि इस मतभेद के कारण भविष्य में झगड़ा होगा, आज्ञा दी कि जिन जिन लोगों के पास क़ुरान की प्रतियां हों हमारे सामने लाओ। जब सब इकट्ठी हो गई, तो उनका मोहम्मद साहिब की स्त्री हफ़सा के पास वाले क़ुरान से मुक़ाबला किया गया। जिन जिन में भेद मिला वे जला दिये गये और जो हफ़सा के पास था उसकी ६, ७ नक़लें उतार कर शाम, मिश्र और फ़ारस आदि देशों में भेज दिया। आज कल जो क़ुरान प्रचलित है यह उसी हफ़सा वाले क़ुरान की नक़ल हैं।

ख़लीफ़ा उस्मान मेम्बर की उसी सीढ़ी (पैड़ी) पर खड़े होकर वाज़ करता था, जिस पर कि मोहम्मद सा० करते थे। दूसरे उसने

कई लाख रुपये अपने सम्बन्धियों और अपने मुंशी मरवान को दे डाला था, जिससे मोहम्मदियों में बहुत असंतोष फैल गया और प्रत्येक देश से बहुत से मोहम्मदी प्रतिनिधियों ने मदीना पहुंच कर उसे खेद प्रकट करने के लिये विवश किया। मिश्र के प्रतिनिधियों ने खलीफ़ा से अपने हाकिम अब्दुल्ला की बड़ी शिकायत की और उससे अब्दुल्ला को हाकिम के पद से हटाने और मुहम्मद इब्ने अबू बकर को उसकी जगह नियत करने की आज्ञा भी प्राप्त करली, किन्तु मिश्र लौटते समय इन प्रतिनिधियों को मार्ग में एक शुतर सवार मिला, जिसकी तलाशी लेने पर उन्हें ख़लीफ़ा की तरफ़ से लिखा हुआ एक पत्र अब्दुल्ला के नाम का जूते के भीतर से मिला। उस पत्र में लिखा था कि मोहम्मद को मार डालो या क़ैद कर लो। इस पत्र के देखते ही मोहम्मद तथा मिश्र के प्रतिनिधि बहुत क्रुद्ध हुए और मदीना वापिस जाकर इस पत्र को अली इत्यादि के सामने पेश किया। जब इन लोगों ने यह बात ख़लीफ़ा से कही। ख़लीफ़ा ने कहा कि यह पत्र मेरा लिखा हुआ नहीं है और मुझे इसका कुछ भी पता नहीं। उन लोगों ने कहा कि यदि अपाका लिखा हुआ नहीं है तो आपके मुंशी मरवान का होगा, अतः या तो आप उसे दंड दो या गद्दी छोड़ दो। ख़लीफ़ा ने दोनों बातों से इनकार किया, इससे मिश्र वालों का क्रोध बहुत बढ़ गया और लोग ख़लीफ़ा के मकान में घुस गये। उनमें से एक आदमी ने घुसते ही ख़लीफ़ा के सिर पर लट्ठ मार दिया और दूसरे ने अपनी तलवार से कई वार किये। मोहम्मद ने भी अपनी बर्छी उसकी छाती में घुसेड़ दी, जिससे उसकी जान निकल गई। उस समय उसकी आयु ८२ वर्ष की थी। कहा जाता है कि यह सब कारवाई जान बूझकर मरवान ने की थी, क्योंकि जब विद्रोही मदीना में आ घुसे तो मरवान उनका साथी

बन गया था। उस्मान की लाश तीन दिन तक वैसे ही पड़ी रही, जब सड़ने लगी तो बिना नहलाये और नये कपड़े पहनाये वैसे ही गाड़ दी गई।

३६—ख़लीफ़ा अली इब्ने अबि तालिब

[सम्वत् ७१२—७१७ वि०]

उस्मान की मृत्यु के पश्चात् ख़िलाफ़त का प्रश्न फिर उपस्थित हुआ। अधिकार और योग्यता को देखते हुए अली का हक़ था, परन्तु मोहम्मद सा० की विधवा स्त्री आयशा पुरानी शत्रुता के कारण नहीं चाहती थी। तलहा, ज़बीर, और मुआविया भी ख़िलाफ़त के इच्छुक थे। कई दिन तक ख़िलाफ़त की जगह ख़ाली रहने के कारण बहुत कुछ फ़साद होने की आशंका होगई थी। इसलिये कुछ लोगों ने अली को बिना किसी शर्त के ख़लीफ़ा बना दिया। तलहा और ज़बीर प्रगट में कुछ न कर सके, इसलिये उन्होंने उस्मान के घातकों को अली से दण्ड देने के लिये कहा। अली ने उत्तर दिया कि थोड़े दिन संतोष कीजिये ख़िलाफ़त का काम पक्का करने के पश्चात् घातकों को नियमानुसार दण्ड अवश्य दिया जायगा। फिर तलहा ने कोफ़े की, ज़बीर ने बसरे की हुकूमत अपने हाथ में लेने की आज्ञा मांगी, किन्तु अली ने कहा कि अभी आप लोगों को मेरे पास रह कर विद्रोह को शांत करने में मुझे मदद देनी चाहिये। इस पर वे कुछ रुष्ट से होगये और हज का बहाना कर के मक्का चले गये। आयशा पहले ही मक्का चली गई थी। उस्मान ने मिस्र आदि देशों में अपने सम्बंधियों को हाकिम बना दिया था, जो शासन करने के बिल्कुल अयोग्य थे, जिससे सारे देशों में विद्रोह फैल गया था, अतः अली ने इस विद्रोह को दूर करने के लिये सब से पहला काम उन अयोग्य हाकिमों को हटा कर अच्छे

हाकिमों के रखने का किया। उधर मुआविया ने उस्मान के खून में रंगा हुआ कुरता बांस पर लटका कर दमिश्क़ की मसजिद में खड़ा कर दिया, जिसे देख कर शाम देश वाले आपे से बाहर होगये और .कुरान हाथ में लेकर खूनी को दण्ड देने के लिये प्रण किया। अली के विरोधियों में से कुछ लोगों का ख़याल था कि उस्मान के खून करने में किसी न किसी प्रकार से अली का भी कुछ लगाव है।

अली ने जिन जिन नये हाकिमों को कोफ़ा, शाम तथा मिश्र आदि देशों में भेजा था उनमें से लगभग सारों को ही निराश होकर लौटना पड़ा, क्योंकि सभी देशों में विद्रोहाग्नि प्रचंड हो गई थी और वहां के लोगों ने अपने पुराने हाकिमों की सहायता से नये हाकिमों को टिकने न दिया, साथ ही साथ शाम की ६००० सेना मुआविया की अध्यक्षता में उस्मान के खून का बदला लेने के लिये शाम देश की सीमा पर तैयार खड़ी थी। अली ने मदीना में बहुत से प्रतिष्ठित मुसलमानों के सामने .खुदा और रसूल की क़सम खाकर कहा कि उस्मान की हत्या में मेरा कुछ भी सम्बंध नहीं है, इसलिये विद्रोह को दबाने और शांति स्थापित करने में मुसलमानों का मेरा साथ देना चाहिये। अली के इस प्रकार विश्वास दिलाने से मुसलमानों के दो दल होगये एक दल अली का सहायक बना, दूसरा आयशा, तलहा और ज़बीर आदि के भड़काने से शाम वालों का साथी हुआ। यह देख आयशा ने एक ढिंढोरा पिटवा कर कहलाया कि मैं .खुदा और रसूल के नाम पर तलहा और ज़बीर के साथ बसरा जाती हूं, जो मुसलमान इस्लाम का साथ देना और उस्मान के खून का बदला लेना चाहें मेरे पास चले आओ मैं भोजन, वस्त्र, शस्त्र और सवारी हर एक को दूंगी। आयशा की इस घोषणा से उसके साथ हज़ारों की फ़ौज होगई, जिसे लेकर वह बसरे पहुंची, किन्तु

बसरे के क़िले का फाटक बंद पाया। उसने वहां के हाकिम उस्मान इब्ने हनीफ़ को दरवाज़ा खोलने और साथ देने के लिये कहला भेजा, किन्तु हाकिम ने दरवाज़ा खोलने और साथ देने से इनकार कर दिया और मुक़ाबिले के लिये अपनी फ़ौज भेज दी। आयशा ऊंट पर सवार होकर दरवाज़े के पास गई और बसरे के लोगों को भड़काने लगी। कुछ देर दोनों दलों में गाली गलौज और मार पीट भी हुई, अन्त में यह निश्चय हुआ कि जब तक बात का अनुसंधान न हो लड़ाई बंद रक्खी जावे। एक दिन रात का ज़बीर और तलहा कुछ आदमियों को लेकर शहर में घुस गये और हाकिम का क़ैद कर लिया। आयशा ने उसका सिर काटने की आज्ञा दे दी, किन्तु अपनी एक सखी के मना करने पर उसने उसकी डाढ़ी और भौं का एक एक बाल उखाड़ कर उसे बाहर निकाल दिया। बसरा पर आयशा का अधिकार होजाने से उसने लोगों को धन दे देकर अपनी तरफ़ मिला लिया।

अली ने यह सारे समाचार सुन कर मदीना के लोगों से विद्रोहियों पर चढ़ाई करने के लिये कहा, किन्तु जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है यहां भी कुछ लोगों का यह ख़याल था कि उस्मान के खून में अली का जरूर हाथ है। इसलिये अली की बात सुनी अनसुनी करदो। फिर भी अली ९०० आदमियों का साथ लेकर बसरे की ओर रवाना हुआ और अपने अन्य हाकिमों को लिख भेजा कि अपनी २ फ़ौज लेकर मुझे रास्ते में मिलो, रास्ते में कई देशों से लगभग ३० हज़ार सेना आकर अली से मिली और अली इस बड़ी विशाल सेना के साथ बसरे के दरवाज़े पर जा पहुँचा। तलहा और ज़बीर इतनी बड़ी फ़ौज को देख कर घबड़ा गये और सन्धि के लिए प्रार्थना की, किन्तु आयशा ने नहीं माना। इसलिये कलीबा नामक स्थान

में दोनों ओर से युद्ध के लिये व्यूह रचा गया।

लड़ाई आरंभ होते ही मरवान के तीर से तलहा घायल हो गया। घायल होते ही उसने कहा कि उसमान के ख़ून का कलंक मेरे ही सर पर है और अब मैं अली को ख़लीफ़ा मानने की हलफ़ उठाता हूं, केवल इतने ही शब्द उसके मुंह से निकलने पाये थे कि उसका दम निकल गया। उसके मरने पर आयशा का दूसरा साथी ज़बीर युद्ध में समाने आया, किन्तु वह तुरन्त ही रणभूमि से निकल कर मक्का की तरफ़ प्रस्थान कर गया और रास्ते में अमर इब्ने यरमूज़ के हाथ से मारा गया। ज़बीर के मैदान छोड़ देने पर आयशा लड़ती रही, किन्तु अपने ऊंट के घायल होने पर क़ैद होगई आयशा का ख़याल था कि अली उसका सर कटवा देगा, किन्तु अली उसके साथ बड़े शिष्टाचार से पेश आया और चालीस दासियों को साथ करके उसे मदीना भेज दिया।

आयशा के क़ैद होने तथा तलहा और ज़बीर के मारे जाने के पश्चात् ख़लीफ़ा अली का केवल एक शत्रु बच रहा। ख़लीफ़ा ने बहुत कुछ चेष्टा की कि मुआविया समझ जावे और व्यर्थ रक्तपात न हो, किन्तु वह नहीं माना और कुछ लोगों को अपनी ओर मिला कर विद्रोह फैलाने लगा। अली लाचार हो कर नब्बे हज़ार सैनिकों के साथ शाम देश की तरफ़ बढ़ा, उधर मुआविया भी अस्सी हज़ार योद्धाओं को साथ लेकर मुक़ाबले पर आ डटा। लगभग ४५ हज़ार आदमी मुआविया के और २० हज़ार ख़लीफ़ा के मारे गये, अन्त में दोनों ओर से एक पंचायत सन्धि करने के लिए नियत की गई। जिसमें अली की ओर से मूसा और मुआविया की ओर से अमर इब्ने यास पंच बनाये गये। मूसा बहुत ही सीधा और निष्कपट आदमी था, किन्तु अमर बहुत ही चालाक और कपटी था, उसने इधर उधर की बात बना कर मूसा को इस बात पर राजी कर

लिया कि जब तक अली या मुआविया में से कोई खलीफा रहेगा फ़िसाद नहीं मिटेगा, इसलिये किसी तीसरे को खलीफा बना लेना चाहिये। जब फ़ैसला सुनाने का समय आया, अमर ने मूसा से कहा पहले आप अपना मत प्रकट करें बाद में जो कुछ आप कहेंगे मैं अनुमोदन कर दूंगा। मूसा ने उसके कपट को अब भी न समझ कर अपना फ़ैसला सुना दिया कि मैं अली और मुआविया दोनों को खिलाफ़त से अलग करता हूं। इसके बाद अमर ने कहा कि मूसा ने अली को खिलाफ़त से उतारने के लिये राय दी है, मेरी भी यही राय है कि अली खिलाफ़त से अलग कये जांय और उनकी जगह मुआविया खली। बनाये जायें। यह फ़ैसला सुन कर अली के अनुयायी क्रोध से भर गये। मूसा ने भी अमर को विश्वासघाती और कपटी बताया। इसके पश्चात् अली और मुआविया के बीच युद्ध तो नहीं हुआ, तथापि अली के अनुयायी मुआविया को, और मुआविया के अनुयायी अली को गाली देने लगे, यहां तक कि इस प्रकार से गाली देने का रिवाज सा पड़ गया। धीरे धीरे जुम्म को नमाज़ के पीछे इस प्रकार की गालियां निकाली जाने लगीं और कहा जाता है कि यह रिवाज अब तक चला आता है।

कुछ लोगों ने, जो पहले अली के पक्षपाती थे और बाद में फ़ैसला सुन कर बिगड़ गये थे अपना एक अलग सम्प्रदाय बना कर उसका नाम खार्जी रक्खा, और अब्दुल्ला इब्ने वहब को अपना खलीफ़ा बना कर बग़दाद से थोड़ा दूर नहरवां नामक गांव में अपना डेरा जमाया। थोड़े ही दिनों में इनकी संख्या २५ हज़ार होगई। जब यह समाचार अली को मिला उसने अपनी छावनी के आगे एक झंडा खड़ा कर के घोषणा कर दी कि अमुक समय तक जो आदमी इसके नीचे चला आयगा क्षमा कर दिया जायगा।

इस घोषणा को सुन कर २१ हजार आदमी अली के पास चले आये और केवल चार हजार अब्दुल्ला के पास रहे जो बड़ी वीरता के साथ लड़कर मारे गये। कहा जाता है कि उनमें से केवल ९ आदमी जिन्दा बच गये।

मुआविया ने मिश्र देश में भी विद्रोह फैला दिया और वहां ऐसे ऐसे षड़यंत्र रच कर जनता को उभारा कि मिश्र देश की सारी जनता खलीफ़ा अली से बिगड़ गई और उसके खून की प्यासी होगई। उसने अली के चचेरे भाई को बहुत बड़ी जागीर देकर अपनी ओर मिला लिया। यह सब होते हुये भी अली ने हिम्मत नहीं हारी और ६० हजार सेना इकट्ठी करके शाम देश के विद्रोह को दबाने के लिये रवाने हुये।

जो नौ खार्जी बच गये थे उनमें से तीन ने एक दिन एक मसजिद में सलाह की कि मुसलमानों में साराफ़साद अली, मुआविया और अमर के कारण होता है, यदि ये तीनों आदमी मार दिये जायें, तो परस्पर को खून खराबी मिट जाय। यह मंत्रणा करके अब्दुल रहमान ने अली के, बारक ने मुआविया के और अमर इब्ने याहि ने अमर के मारने का काम अपने अपने ऊपर लिया। यह भी निश्चय किया कि तीनों आदमी तीनों को एक ही दिन और एक ही समय क़त्ल करें। बारक ने दमिश्क़ पहुंच कर मुआविया पर नमाज पढ़ते समय वार किया, किन्तु उसका वार हलका लगा और मुआविया थोड़े दिनों बाद अच्छा हो गया। बारक पकड़ा गया और उसका सर काट लिया गया। अमर इब्ने यासी मिश्र पहुंचा, भूल से उसने अमर के बदले इमाम कारिजा का सर काट लिया, वह भी पकड़ा जाकर क़त्ल कर दिया गया। अब्दुल रहमान ने कोफ़ा पहुंच कर अली को भी नमाज पढ़ते समय मारा जिससे अली की खोपड़ी फट गई, अब्दुल रहमान मस-

जिद के भीतर छिपा हुआ पकड़ा गया और अली की आज्ञानुसार मारा गया। अली के सर पर चोट बहुत गहरी लगी थी, इसलिये तीन दिन के पश्चात् ६३ वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई। उसके घर पन्द्रह लड़के और अठारह लड़कियां पैदा हुईं। कहा जाता है कि अली का जन्म काबे के मंदिर में हुआ। शिया लोग मोहम्मद सा० के बाद अली को ही सच्चा ख़लीफ़ा मानते है, उनका कहना है कि अबू बकर, उमर और उस्मान ने अली के अधिकार छीन लिये थे, यथार्थ में हक़ अली का था और इसलिये वे लोग इन तीनों को अपना ख़लीफ़ा नहीं मानते।

३७—ख़लीफ़ा हसन इब्ने अली

अली की मृत्यु के पश्चात् लोगों ने सहमत हो कर उसके बेटे हसन को ख़लीफ़ा बना लिया। हसन की उम्र उस वक्त ३७ वर्ष की थी, हसन शांति स्वभाव और महात्मा वृत्ति का था, किन्तु इसका छोटा भाई हुसेन वीर प्रकृति का आदमी था। हुसेन ने ६० हज़ार सवार लेकर हसन को शाम देश पर चढ़ाई करने के लिये तैयार किया। उधर से मुआविया भी एक विशाल सेना लेकर मुक़ाबले के लिये मैदान में आया। इतने में हसन की फ़ौज के लोग आपस ही में लड़ पड़े, जिसमें हसन भी घायल हो गया और उसे मैदान छोड़कर मदाइन के क़िले में जाना पड़ा, वहां से उसने मुआविया के पास दूत भेज कर कहला भेजा कि ख़िलाफ़त आपको मुबारक हो. मैं इतना ही चाहता हूं कि जो कुछ रुपया कोफ़े के ख़ज़ाने में मौजूद ह वह मेरे लिये छोड़ दिया जाय और रोटी कपड़े के लिए थोड़ी सी जगीर दे दी जाय, साथ ही इस बात को घोषणा कर दी जाय कि मेरे पिता को कोई आदमी गाली न दे। मुआविया

ने पहिली दो बातें तो मानलीं, किन्तु तीसरी के लिये कहा कि यह मेरी शक्ति से बाहर है।

हसन की मृत्यु संवत् ७१८ में ४७ वर्ष की आयु में हो गई। मोहम्मदी इतिहासकार लिखते हैं कि यज़ीद ने हसन की एक स्त्री को बहका कर उसे विष पिला दिया था और उसको यह लोभ दिया था कि हसन के मरने पर मैं तेरे साथ विवाह कर लूंगा। जैसा कि ऊपर बयान किया जा चुका है, हसन बहुत ही शान्त और साधु स्वभाव का आदमी था, उसने ख़िलाफ़त अपने हाथ में आई हुई दूसरे को दे दी। अपने भाई हुसेन के बार बार पूछने पर ज़हर देने वाले का नाम न बताया और कहा कि यह दुनियां सराय के तुल्य है, आदमी भी मुसाफिर है, एक न एक दिन सब को जाना है, मैं किसी का नाम लेना नहीं चाहता, ख़ुदा के सामने मेरा और उसका न्याय होगा। इतना कहा और उसके प्राण निकल गये। उसने मरते समय कहा था कि मुझको मेरे नाना (मोहम्मद सा०) के पास दफ़न करना, परन्तु आयशा ने यह कह कर कि यह ज़मीन मेरे निज की है, हसन को वहां गाड़ने न दिया।

यज़ीद ने उसकी स्त्री को यह कह कर क़त्ल करवा दिया कि जिसने अपने पति को मार डाला वह दूसरे के साथ क्या भलाई करेगी।

३८—ख़लीफ़ा मुआविया

(संवत् ७१७–७१६)

हसन इब्ने अली के त्याग करने पर मुआविया निर्विघ्न रूप से ख़लीफ़ा हो गया। उसने शासन की बागडोर हाथ में लेते ही देशों पर विजय प्राप्त करने के लिये सेना इकट्ठी की और अपने बेटे यज़ीद को उस सेना का सञ्चालक बना कर कुस्तुन्तुनिया पर

चढ़ाई करने के लिये भेजा। फ़ौज के साथ उसने इब्ने अली को भी कर दिया, किन्तु युद्ध में मोहम्मदियों की बड़ी हार हुई और मुआविया ने ३० हज़ार मोहर, ५० दास, दासी और ५० अरबी घोड़े वार्षिक कर के तौर पर कुस्तुन्तुनिया के ईसाई बादशाह को देना स्वीकार करके तीस वर्ष के लिये सन्धि कर ली। इसके बाद मुआविया ने दस हज़ार सवार अक़बा के आधीन करके अफ़्रीका पर चढ़ाई करने के लिये भेजा। उसने जङ्गल और बन काट कर किरवान नाम का शहर आबाद किया। अभी यह शहर अच्छी तरह बसने भी न पाया था कि खलीफ़ा ने अक़बा को उसके विरुद्ध कुछ शिकायतें होने के कारण वापस बुला लिया, किन्तु अकबा के आने पर जब उसको वास्तविक परिस्थित का ज्ञान हुआ तो उसने उसको फिर वापस कर दिया। अक़बा ने रास्ते में अलजीरस और मराकू पर अधिकार कर लिया, परन्तु ईसाई और मूर लोगों के आने पर उनके हाथ से मारा गया।

मुआविया ने अपने जीवन काल में ही अपने बेटे यज़ीद को ख़िलाफ़त का उत्तराधिकारी बना दिया और सब हाकिमों को बुला कर दमिश्क़ में यज़ीद की भक्ति के लिये शपथ ले ली। उसने अपने मरते समय एकान्त में यज़ीद से कहा कि तुमको चार आदमियों से भय है।

पहला–हुसेन इब्ने अली से किन्तु यह न्याय का प्रेमी और तुम्हारे चचा का बेटा है, इसके साथ अच्छा बर्ताव करना।

दूसरा–अब्दुल्ला इब्ने उमर से, यह साधु प्रकृति का आदमी है, तेरी प्रभुता स्वीकार कर लेगा।

तीसरा–अब्दुल रहमान से, यह मूर्ख और कानों का कच्चा है, साथ ही जुआरी भी है, इसलिये वह तेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकता। अलबत्ता

चौथा-अब्दुल्ला इब्ने जबीर लोमड़ी की तरह धूर्त और शेर की तरह वीर है, यदि वह तेरे मुक़ाबिले पर आवे तो वीरता के साथ लड़ना, यदि मेल चाहे तो संधि कर लेना और किसी तरह से अपने अधिकार में लाकर क़त्ल करवा देना।

इसके बाद उसकी जबान बंद हो गई और लगभग २० वर्ष शासन कर के इस दुनिया से कूच कर गया।

३६—ख़लीफ़ा यज़ीद इब्ने मुआविया

यज़ीद जब खिलाफ़त की गद्दी पर बैठा उसकी आयु केवल ३४ वर्ष की थी, उसको मक्का और मदीना के सवा सारे प्रान्तों ने अपना ख़लीफा मान लिया। गद्दी पर बैठते ही यज़ीद ने मदीना के हाकिम वलीद को लिखा कि हुसेन इब्ने अली और अब्दुल्ला इब्ने ज़बीर से नियम पूर्वक हलफ़ नामा लेकर भेजो। वलीद ने मरवान की सलाह से हुसेन और अब्दुल्ला को अपने पास किसी बहाने से बुलाने और क़त्ल कर देने की मंत्रणा, की, किन्तु यह ख़बर किसी न किसी प्रकार से हुसेन और अब्दुल्ला को भी मालूम हो गई, इसलिये वे मक्का की तरफ़ भाग गये और उन्होंने खुल्लम-खुल्ला यज़ीद के विरुद्ध झंडा खड़ा कर दिया। कोफ़े के लोगों ने इनकी मदद की और इन्हें सच्चा ख़लीफ़ा मानने के लिये बचन दिया। हुसेन ने अपने चचेरे भाई मुसलिम को कोफे भेज कर यज़ीद के विरुद्ध वहां की जनता को और अधिक भड़का दिया। यहां तक कि एक लाख चालीस हज़ार मोहम्मदी हुसेन की मदद के लिये तैयार हो गये।

जब यज़ीद ने यह समाचार सुने उसने बसरे के हाकिम को लिखा कि कोफ़ा पहुंच कर वहां के हाकिम नेमान को निकाल दो और नगर पर अधिकार करलो, बसरे का हाकिम अब्दुल्ला बड़ा

चालाक आदमी था, वह केवल २० आदमी लेकर कोफ़े पहुंचा, कोफ़े वाले उसे हुसेन समझ कर क़िले में ले गये, ज्यों ही वह क़िले में पहुंचा, उसने वहां के हाकिम का सिर काट लिया और यजीद के पास भेज दिया। जा सेना हुसेन के पक्ष में इकट्ठी हुई थी, अपने हाक़िम के मारे जाने का हाल सुन कर इधर उधर चली गई। हुसेन को सब बातों की ख़बर नहीं थी, वह कोफ़े वालों की फ़ौज की तैयारी की ख़बर सुन कर मय अपने बाल बच्चों के कोफ़े के लिये रवाना हागया। सीमा प्रान्त पर सरदार हुर कुछ सवारों के साथ सामने आया, हुसेन ने यह समझा कि यह मेरे लेने के लिये आया है, परन्तु निकट आकर हुर ने कहा कि मुझको कोफ़े के हाकिम अब्दुला ने भेजा है कि मैं आपको कोफ़े ले चलूं। हुसेन ने उसको बहुत कुछ अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न किया, किन्तु वह नहीं माना।

जब हुसेन को यह पता लग गया कि कोफ़े पर यजीद ने अपना हाक़िम भेज कर मेरे विरोध में सेना खड़ी करदी है, वह क़ादसिया की तरफ़ रवाना हागया। रास्ते में उमर अपने चार हज़ार सवारों सहित मिला, उसने हुसेन से कहा कि कोफ़े के आदमी आप से फिर गये हैं। आप मक्के की तरफ़ वापस चले जाँय, साथ ही उसने अब्दुल्ला से कहला भेजा कि हुसेन को मक्के की तरफ़ जाने को आज्ञा देदी जाय, परन्तु अब्दुल्ला ने नामंजूर कर दिया और उमर को लिखा कि हुसेन के पास पानी जाना बंद करदो और उससे यजीद को प्रभुता स्वीकार कराओ फिर जैसा उचित होगा किया जायगा।

अब्दुल्ला की आज्ञानुसार हुसेन के यहां पानी बंद कर दिया गया, जिससे हुसेन और उसके आदमी मारे प्यास के तड़पने लगे, फिर भी हुसेन ने यजीद को खलीफ़ा नहीं माना। जब अब्दुल्ला

को हुसेन के हठ का हाल मालूम हुआ तो उसने उमर को लिखा कि यदि हुसेन और उसके साथी यज़ीद को ख़लीफ़ा न मानें तो उनके सिर काट लो और उनके शरीरों को घोड़ों की टापों से रौंदवा डालो। अब्दुल्ला के इस हुक्म आने पर उमर ने फिर हुसेन को समझाया कि आप यज़ीद को ख़लीफ़ा मान लें, परन्तु हुसेन ने फिर भी अपने विचार को न बदला। उसने अपने साथियों से आकर कहा कि आप लोग मुझे मेरे भाग्य पर छोड़ कर अपने घर चले जाओ, किन्तु उन लोगों ने जवाब दिया कि अपने जीवन काल में हम आपको छोड़ कर वापस नहीं जायेंगे। हुसेन के साथ केवल ३२ सवार और ४० प्यादे थे, उन सबों ने स्नान करके कपड़े बदले और इत्र लगा कर वीर गति प्राप्त करने के लिये तैयार हो गये। इतने में ३० सवार शत्रु की सेना से निकल कर हुसेन के साथ आ मिले।

लड़ाई आरंभ हो गई, शुमर नामी अफ़सर ने हुसेन के तम्बुओं में आग लगाने को कहा, जिसे सुन हुसेन की स्त्री और बच्चे चिल्लाने लगे। उनके रोने और चिल्लाने को देख कर शुमर का हृदय भी भर आया और वह वापस चला गया। थोड़ी देर बाद फिर युद्ध छिड़ा, हुसेन के बहुत से सिपाही और परिवार के लोग मारे गये, फिर भी हुसेन ने हिम्मत नहीं हारी और अपना धनुष हाथ में लेकर शत्रु का संहार करने लगा, परन्तु घाव पर घाव लगने और अधिक खून निकल जाने के कारण मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा, इतने में शुमर की आज्ञा से एक दुष्ट ने उसका सिर काट दिया।

यह लड़ाई करबला में हुई थी, जिसमें हुसेन के ७२ और शत्रु के ८८ आदमी मारे गये। हुसेन के मारे जाने पर उसका सारा माल व असबाब लूट लिया गया और स्त्री बच्चों को क़ैद कर लिया गया। शुमर हुसेन का सिर लिये रात के समय कोफ़ा पहुँचा, उसकी स्त्री

ने हुसेन का सिर देखकर कहा "पाजी कुत्ते मुझे मुंह मत दिखा" इतना कह कर वह घर से बाहर निकल गई और उसने सारी उमर शुमर का मुंह न देखा। दूसरे दिन हुसेन का सिर अब्दुल्ला के सामने रक्खा गया, उस दुष्ट ने पहले तो सिर पर थूका और फिर जूतियों से ठोकर मार कर एक तरफ़ को फेंक दिया।

फिर अब्दुल्ला के सामने सारे क़ैदी लाये गये, जिनमें सब स्त्री बच्चे ही थे, अब्दुल्ला ने उनके क़त्ल का हुक्म दे दिया, किन्तु सरदारों के मना करने पर उसने अपना हुक्म वापस ले लिया और उन सबों ने हुसेन को सिर सहित ख़लीफ़ा यज़ीद के पास भेज दिया।

यज़ीद ने उन सब क़ैदियों को बड़े आदर सत्कार से लिया, और कुछ दिन अपने यहां रखकर, उन्हें उनकी इच्छानुसार मदीना पहुँचा दिया।

यज़ीद एक शत्रु को नष्ट करके अपने दूसरे शत्रु अब्दुल्ला इब्ने ज़बीर को नष्ट करने का उपाय सोचने लगा, क्योंकि अब्दुल्ला को मक्का और मदीना वालों ने अपना ख़लीफ़ा बना लिया था। अब्दुल्ला और उसके साथियों ने मक्के और मदीने मे तरह २ की बातें फैलाकर वहा के लोगों में यज़ीद के प्रति बहुत घृणा उत्पन्न करा दी थी, यहां तक कि सारा अरब यज़ीद के विरुद्ध हो गया। जब यज़ीद को यह समाचार मिला तो उसने अपने कई सेनानायकों को मदीना पर चढ़ाई करने के लिये कहा, परन्तु किसीने मंजूर न किया, अन्त में मुसलिम इब्ने अक़बा ने मंजूर कर लिया और बारह हज़ार सवार तथा पांच हज़ार पैदल साथ लेकर मदीने की तरफ़ बढ़ा, जब उसके निकट पहुँचा तो उसने बहुत कुछ इस बात की चेष्टा की कि किसी तरह रक्तपात न हो, परन्तु मदीने वाले लोग न माने, और लड़ाई आरम्भ कर दी, जिसमें दोनों तरफ़ के बहुत से आदमी मारे गये। अन्त में मदीने वाले भाग निकले, और

मुसलिम नंगी तलवार लेकर शहर में घुस गया। सबसे पहले अली इब्ने हुसेन को एक ऊंट पर सवार कर कुछ सिपाहियों सहित बाहर भेज दिया। और बनी ऊम्या के एक हजार आदमियों को जो मरवान के घर में थे, अपने पास बुला लिया। जब यह हो चुका तो अपने सैनिकों को शहर लूटने का हुक्म दे दिया। लूट के समय हजारों आदमी मारे गये और हजारों क़ैद हो गये। इस प्रकार से मदीने में ईंट से ईंट बजाकर मुसलिम मक्का की तरफ़ गया, परन्तु रास्ते में ही मारा गया, उसकी जगह हसीन इब्ने हमीर सेनापति बना। जब वह मक्का पहुँचा अब्दुल्ला इब्ने ज़बीर मुक़ाबिले पर आया, परन्तु परास्त हुआ। हसीन ने नगर में घुसते ही काबे पर हाथ साफ़ किया, और उसे मिट्टी में मिला दिया। इतने में एक सवार सरपट घोड़ा दौड़ाते हुए आया और कहा कि यज़ीद मर गया। अब्दुल्ला ने मसजिद में जाकर यज़ीद के मरने की घोषणा करदी, साथ ही हसीन से कहा कि किसके लिये लड़ते हो, संधि कर लो, हसीन ने वैसा ही किया और दमिश्क़ चला गया।

मोहम्मदी इतिहासकारों ने यज़ीद को बहुत बुरा भला कहा है, और उसको लुच्चा, शोहदा, बदमाश, शराबी, कबाबी, कामी, अन्यायी और अत्याचारी सिद्ध करने का प्रयत्न किया है, किन्तु जब हम एक निष्पक्ष लेखक की दृष्टि से उसे देखते हैं तो हम को यज़ीद में वे सारी खराबियां दिखाई नहीं देतीं, क्योंकि उसने अपने सरदारों के कहने पर भी हुसेन * के पुत्र अली को

* भारतवर्ष के मुसलमान मोहर्रम के दिनों में इन्हीं हुसेन की मृत्यु का दस दिन तक शोक मनाते और ताज़ियेदारी करते हैं। इसी करबला की लड़ाई को यह लोग बहुत बड़ा महत्व देकर धार्मिक लड़ाई बताते और यज़ीद को काफ़िर कहकर गालियां सुनाते हैं, परंतु यथार्थ

क़त्ल नहीं कराया, उसने हुसेन के स्त्री बच्चों को, जो उसके सामने क़ैदी के रूप में लाये गये थे, बड़े आदर सत्कार से लिया और उन्हें राह खर्च देकर मदीने भेज दिया तथा उसने हुसेन के लड़के का निज पुत्र के समान पालन-पोषण किया।

४०—ख़लीफ़ा मुआविया द्वितीय

यज़ीद के मरने के पश्चात् उसका बेटा मुआविया द्वितीय गद्दी पर बैठा। उस समय उसकी आयु केवल २१ वर्ष की थी। इसकी दृष्टि बहुत निर्बल थी, जिससे उसने केवल ६ मास हुकूमत करके गद्दी त्याग दी और मर गया।

४१—ख़लीफ़ा मरवान इब्ने हिकम

मुआविया द्वितीय के मरने के पश्चात् सब ने मिल कर मरवान को ख़लीफ़ा बनाया, परन्तु उससे यह शर्त ले ली कि उसके बाद ख़लीद इब्ने यज़ीद ख़लीफ़ा बनाया जाय। उधर मक्का और मदीने में अब्दुल्ला इब्ने ज़बीर ख़लीफ़ा बना लिया गया था, साथ ही साथ अब्दुल्ला इब्ने ज़याद भी ख़िलाफ़त के लिये प्रयत्न कर रहा था। जब ईसाईयों ने देखा कि मोहम्मदी आपस में लड़ रहे हैं, उन्होंने अफ़्रिक़ा के अन्तर्गत किरवान नगर को मोहम्मदियों

में न तो यज़ीद ही काफ़िर था और न यह लड़ाई धार्मिक थी। यह लड़ाई केवल मुसलमान देशों पर राज्याधिकार प्राप्त करने के लिए थी, यह लड़ाई मुसलमानों मुसलमानों ही में आपस में हुई थी। मोहम्मद सा० की मृत्यु के पीछे ख़िलाफ़त के लिए लगातार झगड़ा ही बना रहा, जिसमें उन हज़ारों मुसलमानों का उसी प्रकार खून हुआ, जिस प्रकार इन्होंने दूसरे निःसहाय धर्मावलम्बियों का खून बहाया था।

से छीन लिया। यद्यपि मरवान ने खलीफ़ा बनते समय यह वचन दिया था कि मेरे बाद खलीद खलीफ़ा होगा, तथापि अधिकार पा जाने पर उसकी नियत बदल गई और अपने बेटे अब्दुल मलिक को उत्तराधिकारी बनाने का षड़यंत्र रचने लगा, जब खलीद को यह पता लगा, उसने अपनी मां के द्वारा मरवान को भाजन में विष दिला दिया, जिससे मरवान केवल एक वर्ष खिलाफ़त का सुख भोग कर इस दुनियां से कूच कर गया।

४२—खलीफ़ा अब्दुल मलिक इब्ने मरवान

अब्दुल मलिक अपने पिता मरवान के मरने के बाद चालीस वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठा। अब्दुल्ला इब्ने जबीर अभी मक्का और मदीना में खलीफ़ा माना जाता था, अतः अब्दुल मलिक ने मक्का की जगह बैतुल मुक़द्दस फिलस्तीन (Palestine) को हज की जगह बनाया। इधर अली के अनुयायियों, जिनको शिया कहते हैं, ने मुखतार, जिसको इतिहास में मुन्तक़िम लिखा है, को अपना खलीफ़ा बना कर उससे प्रतिज्ञा कराली कि वह उससे हुसेन के खून का बदला लेगा और अली के शत्रुओं का नाश कर देगा। मुखतार ने शुमर के क़त्ल से श्री गणेश किया, फिर उमर और उसके दोनों बेटों का सिर अपने हाथ से उतारा, फिर अबी इब्ने हातिम की तरफ़ बढ़ा और उसका सिर धड़ से जुदा कर दिया, यहां तक कि जिस जिस पर हुसेन के खून का धब्बा था, एक को भी जिन्दा न छोड़ा। कहा जाता है कि उसने लगभग ५० हजार आदमियों को यमपुर पहुंचाया। उसने अली के अनुयायियों की सहायता से कोफ़े और फिलस्तीन को अपने अधिकार में कर लिया। उसके इस प्रकार के आक्रमणों को रोकने के लिए एक तरफ़ से खलीफ़ा अब्दुल मलिक और

दूसरी तरफ़ से अब्दुल्ला खड़े हुए। मुख़तार ने अब्दुल्ला से सन्धि करके उसकी मदद के लिए अब्दुल मलिक के मुक़ाबले पर अपनी ३ हज़ार सेना भेज दी, किन्तु रास्ते में अब्दुल्ला के सरदार ने मुख़तार के ४०० सिपाही मय उनके सेनापति के मरवा दिये। जब मुख़तार को अब्दुल्ला से सन्धि की आशा न रही, उसने शिया लोगों को भड़काया और ७५० योधा लेकर मक्के में घुस गया, किन्तु इब्ने ज़बीर के साथ सन्धि हो जाने से मक्का की जनता रक्त-पात और लूटमार से बच गई।

मुख़तार की शक्ति दिन प्रतिदिन बढ़ते देख ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक ने इब्न ज़याद को कोफ़े पर अधिकार करने के लिये भेजा। यद्यपि इब्ने ज़याद के साथ फ़ौज बहुत अधिक थी, तथापि मुख़तार के सामने न ठहर सका और परास्त होकर भाग निकला। इब्ने ज़याद अपने बहुत से साथियों के साथ मारा गया, परन्तु शीघ्र ही मुख़तार भी ६३ वर्ष की आयु में अपने सात हजार आदमियों सहित इब्ने ज़बीर के भाई मसाअब के हाथ से मारा गया। मुख़-तार के मरने के पश्चात् मसाअब कोफ़ा का हाकिम बना और अपने पुत्र सहित अब्दुल मलिक से लड़ाई करने में मारा गया। इसके बाद कोफ़े और बबलिस्तान पर अब्दुल मलिक का अधिकार हो गया जिस समय उसके सामने मसाअब का सिर लाया गया, उसने जल्लाद को एक हज़ार अशर्फी इनाम देने का हुक्म दिया, परन्तु जल्लाद ने इनकार करके कहा 'मेरी उम्र ५० वर्ष की है, मैंने समय का बहुत परिवर्तन देखा है, इसी कोफ़े के क़िले में हुसेन का सिर अब्दुल्ला इब्ने ज़याद के सामने लाया गया, इब्न ज़याद का मुख़तार के सामने रक्खा गया, मुख़तार का मसाअब के सामने पेश किया गया और अब मसाअब का सिर आपके सामने लाया गया है, बुड्ढे की बात सुनकर वह बहुत शरमाया और उसने किले को तुड़वा कर

मिट्टी में मिलवा दिया। अब्दुल मलिक कोफ़े और बबलिस्तान पर अधिकार करके दमिश्क़ की तरफ़ रवाना हुआ, इस तरफ़ मैदान खाली देख कैसर रूम ने शाम देश पर आक्रमण कर दिया, किन्तु अब्दुल मलिक ने कर देना स्वीकार कर के संधि करली।

अब्दुल्ला इब्ने ज़बीर अब भी मक्का मदीना में ख़लीफ़ा बना बैठा था, इसलिये अब्दुल मलिक ने उधर चढ़ाई करना निश्चय किया और हज्जाज के अधीन एक बड़ी सेना रवाना कर दी। हज्जाज ने मक्का पहुँच कर युद्ध आरंभ कर दिया और अब्दुल्ला को, जो बड़ी वीरता के साथ कई दिन तक लड़ता रहा, परास्त कर के क़त्ल कर डाला। उसके क़त्ल होते ही मक्का और मदीना अब्दुल मलिक के अधिकार में आगये, अब केवल खुरासान ही अकेला रह गया, जिसने अब्दुल मलिक को ख़लीफ़ा स्वीकार नहीं किया, अतः अब्दुल मलिक ने उसके पास दूत और इब्ने ज़बीर का सिर भेज कर कहलाया कि हमारी खिलाफ़त स्वीकार करो नहीं तो तुम्हारा भी सिर इसी तरह काटा जायगा। हाकिम खुरासान ने इब्ने ज़बीर का सिर बड़े आदर से दफ़्न करने के लिये मदीना भेज दिया और दूत को निकलवा दिया। अब्दुल मलिक ने उसकी यह कारवाई सुनकर हज्जाज को चढ़ाई करने की आज्ञा दी। हज्जाज ने खुरासान पहुँचते ही वहां हाकिम का सिर काट डाला।

जब अब्दुल मलिक सारे मोहम्मदी राज्य का स्वामी हो गया। उसने हुसेन इब्ने नेमान को चालीस हज़ार आदमियों के साथ अफ्रीक़ा पर अधिकार करने के लिए भेजा। हुसेन कारथेज जा पहुंचा और उसको उजाड़ कर मिट्टी में मिला दिया, साथ ही हज़ारों जवान और अनाथ स्त्रियों को पकड़ लाया, फ़िर पोटीका नामक गाँव के पास ईसाई फ़ौज से मुक़ाबला हुआ, जिसमें जॉन ईसाईयों का सेनापति हार गया, अतएव सेना का संचालन

मलिका काहिना ने अपने हाथ में लिया, इसने बड़ी बहादुरी से मोहम्मदी सेना का मुक़ाबला किया, परन्तु अन्त में पकड़ी जा कर हुसेन के सामने लाई गई और मोहम्मदी बनने से इनकार करने पर उस वीर स्त्री का सिर हुसेन के हुक्म से काट डाला गया। इस प्रकार से उत्तरीय अफ्रीक़ा पर अधिकार जमा कर हुसेन अब्दुल मलिक के पास लूट का माल और काहिना का सिर साथ लेकर दमिश्क गया, जहाँ उसका बड़ा आदर सत्कार किया गया और अब्दुल मलिक ने उसको बारका का हाकिम बना दिया। यह बात अब्दुल मलिक के भाई अब्दुल अज़ीज़ को बहुत बुरी लगी, उसने मार्ग में हुसेन से वह हुक्मनामा छीन कर फाड़ डाला, जिससे हुसेन बहुत दुखित हुआ और थोड़े ही दिनों में घुल घुल कर मर गया।

हुसेन के बाद मूसा अफ्रीक़ा का हाकिम बना, जिसके शासन काल में मोहम्मदियों ने सारे देश को लूट घसूट कर मिट्टी में मिला दिया। उनके अत्याचार का अनुमान इसी से कर लेना चाहिये कि उन्होंने तीन लाख स्त्री और बच्चों को बलात् पूर्वक उनके घर से पकड़ कर भेड़ बकरी तरह नीलाम कर दिया और हज़ारों स्त्री बच्चों को, जिन्हों ने मोहम्मदी बनना स्वीकार न किया, तलवार के घाट उतार दिया। मूसा ने बहुत सा लूट का माल और सैंकड़ों दास दासियें खलीफ़ा अब्दुल मलिक के पास भेजा, किन्तु यह चीजें अभी उसके पास पहुँचने भी न पाई थीं कि वह ६० वर्ष की आयु में इस दुनियाँ से कूच कर गया। यह अली और उसके वंशधरों से बहुत घृणा करता था।

४३—ख़लीफा वलीद इब्ने अब्दुल मलिक

[सम्वन् ७६२ -७७२ वि०]

अब्दुल मलिक के मरने पर उसका बेटा वलीद गद्दी पर बैठा वह शरीर का लम्बा, मोटा और कृष्ण वर्ण था। दासियों के अतिरिक्त उसके ६३ स्त्रियां थीं, उसने दमिश्क़ में मसजिद बनाने के लिये ईसाईयों का सेन्ट जोन नामी गिरजा, जो बहुत ही पुराना और सुन्दर बना हुआ था, बलात्कार तुड़वा दिया। वलीद के शासन काल में उसके भाई मुसलिमा ने एशियाये कोचक (एशिया माइनर- Asia Minor) पर आक्रमण किया और लूट मार मचाता हुआ योरप तक जा पहुंचा। वहां से हज़ारों स्त्रियों को पकड़ लाया और उनको दासी बनाने के लिये बेच दिया इधर मुसलिमा का बेटा तुर्किस्तान में घुसा, और समरक़ंद, बुख़ारा तथा .खुवारिज़म (प्रचीन मारकंड) पर अधिकार कर लिया। उधर मूसा इब्ने नसीर ने स्पेन पर आक्रमण किया और जूलियन को जो स्पेन के बादशाह रोडरिक का बड़ा विश्वास पात्र सेनापति था, मिला लिया, जिसके कारण स्पेन वालों को परास्त होना पड़ा और उनका मुख्य सेनापति राजकुमार मारा गया, बादशाह रोडरिक ने अपनी सेना के परास्त होने व राजकुमार के मारे जाने का समाचार सुन कर अपनी प्रजा के नाम घोषणा जारी की कि पन्द्रह और पचास वर्ष को आयु के बीच के लोग देश और धर्म की रक्षा के निमित्त राजधानी में लड़ाई के लिये आ जावें। जब राजधानी में एक विशाल सेना तैयार होगई और बादशाह ने कूच के लिये नक्कारा बजवाया, उसी समय सिर से पैर तक श्वेत वस्त्र धारण किये और हाथ में माला लिये हुये एक बुड्ढा छावनी में आया, उसने कहा-'हाय स्पेन का

भाग्य फूट गया, ख़ुदा का कोप अब हमारे ऊपर शीघ्र ही पड़ने वाला है, मुझे ख़ुदावंद मसीह के दर्शन हुये हैं, उन्हां की आज्ञानुसार मैं यहां आया हूं, उन्हां ने कहा है कि रौडरिक के पापों से ख़ुदा को क्रोध अग्नि भभक उठी है, जिसमें शीघ्र ही उसका नाश होगा, ख़ुदावंद मसीह ने मुझसे यह भी कहा है कि तू शीघ्र जाकर अपने देश भाइयों से कहदे क केवल वही आदमी ईश्वर के कोप म बचेंगे, जा रौडरिक का साथ छोड़ देंगे'। यह कह कर बुड्ढा चुप चाप चल दिया, जिससे सिपाहियों के हृदय पर सन्नाटा छागया। कहा जाता है कि यह बुड्ढा बड़ी चालाकी के साथ तैयार कर के रौडरिक के सिपाहियों में भय उत्पन्न करने के लिये भेजा गया था और उसने बड़ी होशियारी के साथ अपना पार्ट अदा किया। दूसरे दिन दोनों ओर से युद्ध छिड़ गया। एक ओर से ख़ुदावंद मसीह और दूसरी ओर से अल्लाहो अकबर के के हृदय विदारक शब्दों ने आकाश और ज़मीन हिला दिया, किन्तु स्पेन के कई ईसाई हाकिमों और सेनापति के मोहम्मदियों से मिले होने कारण रौडरिक को परास्त होना पड़ा। कहा जाता है कि उसके सम्बंधियों ने ही उसके सिर को काट दिया था, जो कई दिनों के बाद एक मोहम्मदी घुड़सवार को मिला था। कुछ का कथन है कि वह नदी में डूब मरा और उसकी लाश बह कर समुद्र में चली गई। बादशाह के मरने और उसकी सेना परास्त होने के पश्चात् मोहम्मदियों ने अपना झंडा गाड़ दिया और जहां पहले सुख और शांति था, वहां रक्तपात और अत्याचार राज करने लगा।

सेनापति जूलियन और पादरी ओपस विश्वासघात कर के जब रौडरिक का पतन कराने के लिये मूसा इब्ने नसीर और तारिक इब्ने ज़याद से मिले थे, उस समय यह शर्त ठहरी थी कि रौडरिक के मारे जाने पर विटोजा का पुत्र गद्दी पर बैठेगा और

खलीफ़ा को कर देता रहेगा, परन्तु रौडरिक के परास्त होने पर जब मोहम्मदियों का स्पेन पर अधिकार होगया, उन्होंने उस शर्त को तोड़ डाला और जूलियन के कारण पूछने पर उत्तर दिया कि काफ़िर के साथ मेल करने की इस्लाम में आज्ञा नहीं है। यह सुन कर जूलियन को बहुत दुःख हुआ। उधर स्पेन के ईसाईयों ने भी उस पर देश द्रोह का कलंक लगा कर अपमानित किया, जिससे वह स्त्री पुत्र और पुत्री समेत एक बाग़ में एकान्त रहने लगा, फिर भी उसे शांति न मिली, क्योंकि चारो ओर से वह और उसका परिवार धिक्कारा जाता, लड़के लड़कियां उस पर खाक फेंकते और पुकार पुकार कर कहते कि इसो के कारण देश और धर्म का सत्यानाश हुआ। खलीफा वलीद ७७२ मे मर गया।

३०—खलीफा सुलेमान

वलीद के मरने के बाद सुलेमान गद्दी पर बैठा। उसने शासन की बागडोर हाथ में लेते ही मूसा और उसके परिवार का नाश कर दिया, साथ ही अब्दुल अज़ीज़ इब्ने मूसा की जगह हुर को स्पेन का सूबेदार बनाकर भेजा उसने जब देखा कि बहुत से ईसाई भी इस सेना में भरती हैं तो उसकी इच्छा हुई कि या तो उनको मोहम्मदी बनालें या क़त्ल करवा डालें, इस अभिप्रय से उसने क़ाज़ी को ईसाइ सेना में भेजा, किन्तु ईसाईयों ने अपना धर्म छोड़ना स्वीकार न करके क़त्ल होना पसंद किया।

एक दिन हुर ने जूलियन को बुला भेजा। जूलियन को किसी न किसी प्रकार उसे यह मालूम हो गया था कि हुर से ज़िन्दा न छोड़ेगा, वह १५ सवारों को साथ लेकर भाग निकला। जब हुर को यह पता लगा, उसने एक फ़ौज भेज कर उसके मकान को घिरवा लिया, जहां जूलियन की स्त्री अपने छोटे बच्चे अलबर्ट के साथ

अपनी आयु व्यतीत कर रही था। उसने अपने बच्चे अलबर्ट को मुर्दों की क़बर में छिपा दिया और हुर के मांगने पर कह दिया कि वह मर गया, परन्तु हुर और उसके काज़ी के तलाश करने पर जब अलबर्ट मिल गया और उसके कत्ल के लिये तैयार हुआ, जूलियन की स्त्री उसके पांव पर गिर पड़ी और 'रहम करो' पुकार ने लगी, हुर ने उसको उत्तर दिया कि काफिर के लिए इस्लाम में रहम नहीं है, यह कह कर उसने क़ाज़ी से कहा कि इस लड़के को क़िले के बुर्ज पर ले जाओ, क़ाज़ी हुर का हुक्म पाते ही उसे सब से ऊंचे बुर्ज पर ले गया, उस समय बच्चा क़ाज़ी से चिपट गया और रोकर कहने लगा 'मुझे छोड़ो मत, मुझे इतने ऊंचे पर भय लगता है', परन्तु क़ाज़ी का पत्थर का दिल ज़रा भी न पसीजा और उसने जन्नत की हूर और लौंडों के ख़ातिर 'ला इलाह इलल्ला, मोहम्मद उल रसूलिल्ला' कह कर बच्चे को बुर्ज से नीचे ढकेल दिया, जहां वह गिरते ही टुकड़े २ हो गया। फिर क़ाज़ी ने हुर से पूछा कि अन्य काफिर क़ैदी और अलबर्ट की पागल मां, जो कल क़ैद किये गये थे, उन्होंने इस्लाम क़बूल किया या नहीं? हुर ने उत्तर दिया कि 'नहीं' इस पर क़ाज़ी ने उन सबों को अपने सामने बुलाया और उनको कलमा पढ़ने के लिए कहा, किन्तु उन्होंने फिर भी इनकार किया, अतएव उन सबों को एक खाई में खड़ा किया और उनके बीच जूलियन की स्त्री को रक्खा, फिर मोहम्मदियों को सम्बोधन करके कहा कि "कौन जन्नत की हुर और ग़िलमाओं के साथ शराब पीने और क़बाब खाने की इच्छा रखता है"? सब मोहम्मदी लोगों ने एक स्वर से चिल्ला कर कहा-हम सब रखते हैं, इस पर काजी ने कहा अच्छा बिसमिल्लाह करो और खाई को मिट्टी से पाट दो। जन्नत में उपरोक्त चीज़ों के पाने के इच्छुक मोहम्मदियों ने क़ाजी की आज्ञा पालन करके उन सब क़ैदियों को जूलियन की स्त्री

समेत खाई में पाट कर सदा के लिये सुला दिया। इस प्रकार से उस देशद्रोही जूलियन और उसके परिवार का सर्व नाश हो गया, जिसने बादशाह रौडरिक के विरुद्ध मोहम्मदियों पर विश्वास करके अपने देश को दासता के बन्धन में डाला था।

४५—मुसलमानों का भारतवर्ष में आगमन

ख़लीफ़ा वलीद के शासन काल में, जिस समय तारिक इब्ने जयाद स्पेन पर लूट मार और आक्रमण कर रहा था, उसी समय मोहम्मद इब्ने क़ासिम सिन्ध पर चढ़ाई करने के लिये रवाना हुआ। उस समय महाराजा दाहिर सिन्ध पर राज करते थे, उन्होंने कुछ मोहम्मदियों को, जो अपने देश से भागकर उनकी शरण में आये थे, रखकर अपनी सेना में भरती कर लिया, किन्तु जब मोहम्मद वारिस नामी सरदार से मोहम्मद इब्ने क़ासिम का मुक़ाबिला करने के लिये कहा, मोहम्मद वारिस ने, जो मोहम्मद इब्ने कासिम से मिला हुआ था, राजा से कहा कि सीमा पर मुसलमानों को रोकने की कुछ जरूरत नहीं है, जब वे राजधानी तक आ जायंगे हम उनका एक दम सफाया कर देंगे। महाराज दाहिर अपने इस सरदार के विश्वास में आगये और सीमा प्रान्त पर मोहम्मदियों के रोकने का कुछ प्रबन्ध नहीं किया। जब मोहम्मदी लोग राजधानी तक निर्विघ्न चले आये और चारों ओर से घेर लिया तो महाराज दाहेर ने सरदार मोहम्मद वारिस से कहा कि अब आप इनका मुक़ाबिला करें, किन्तु उस नमक हराम ने उत्तर दिया कि "चढ़ाई करने वाले मुसलमान हैं, मैं उनके साथ नहीं लड़ सकता, क्योंकि मोहम्मदी धर्म एक मोहम्मदी को दूसरे मोहम्मदी के विरुद्ध लड़ने की आज्ञा नहीं देता है।" यह कह कर वह अपनी मुसलमान सेना सहित अल्लाहो अकबर के नारे लगाता हुआ मोहम्मद इब्ने क़ासिम

से जा मिला। इस संयुक्त सेना ने क़िले पर चढ़ाई की और उसे अपने अधिकार में लाकर नारायण कोट की तरफ बढ़ी। नारायण कोट का हाकिम समनी मोहम्मदियों से मिल गया था, इस लिये मोहम्मद इब्ने क़ासिम को नारायण कोट पर अधिकार जमाने में कुछ भी बिलम्ब न लगा। इस प्रकार से उसको अपने अधिकार में लाकर मोहम्मदी लोग सिंध के दूसरे किनारे पर जा पहुँचे। उस किनारे पर जो दुर्ग था, उसका सेनापति मोका को भी लालच देकर मोहम्मद कासिम ने अपनी तरफ मिला लिया, जिसने बिना लड़ाई किये हो क़िले की चाबी मोहम्मद इब्ने क़ासिम के हाथ में दे दी। यद्यपि सेनापतियों के विश्वासघात करने से दाहिर के हाथ पांव कट गये थे, तथापि वह दस हज़ार सवार, २० हज़ार पैदल और बहुत से जंगली हाथी लेकर अपने बुढ़ापे की अवस्था में भी शत्रु से लड़ने के लिये क़िले के बाहर निकला। जिस समय तलवार दोनों तरफ के योद्धाओं का खून चाट रही थी और मार काट के सिवा कुछ भी सुनाई न देता था, एक तीर के लगने से दाहेर गिर कर मर गया उसके मरते ही मोहम्मदियों ने उसका शिर काट लिया और भाले पर लटका कर हिन्दुओं को दिखलाया। राजा का शिर देखते ही हिन्दुओं के पैर उखड़ गये और सिंध देश पर मोहम्मदी झंडा लहराने लगा, किन्तु शीघ्र ही सुमरा राजपूतों ने लगभग सारे ही मोहम्मदियों को मार भगाया, केवल कुछ फ़क़ीरों को शांति पूर्वक देश में रहने की आज्ञा देदी, जिससे तुर्किस्तान, फ़ारस, अफ़ग़ानिस्तान और बिलोचिस्तान के मोहम्मदियों के आने जाने का सिलसिला क़ायम हो गया। उसी समय कई मोहम्मदी फ़क़ीर हिन्दू बनकर मंदिरों के पुजारी भी बन गये थे। इन्हीं फ़क़ीरों के भेद देने और उकसाने से सुबक्तगीन नाम के तुर्की गुलाम ने, जो खुरासान और ग़ज़नी का हाकिम बन गया था, संवत् १४०५ में हिन्दुस्तान

पर हमला किया। महाराजा जयपाल को जब उसकी चढ़ाई का पता लगा, वह मुक़ाबिल पर आ डटे, किन्तु सुबक्तगीन ने लड़ाई उस समय आरंभ की, जब कि सर्दी खूब कड़ाके की पड़ रही थी और बरफ़ भी पड़ रही थी, आगे की तरफ सुबक्तगीन की फ़ौज थी, ऊपर से बरफ़ पड़ रही थी, पीछे की तरफ़ महाराज जयपाल के एक मोहम्मदी हाकिम शेख़ हमीद, जिसको महाराजा जयपाल ने पेशावर खैबर का इलाका देकर नवाब बना दिया था और आड़े वक्त पर अपनी मदद के लिये शपथ ले लिया था, ने अपने मजहबी बादशाह से मिल कर अपने ऊपर किये एहसान और शपथ की कुछ परवाह न करके महाराज का मार्ग रोक दिया, जिससे उनको सुबक्तगीन से संधि करके वापस लौटना पड़ा। तब मोहम्मदियों ने पेशावर के समीप हमला किया, महाराज जयपाल हाथी से कूद कर घोड़े पर सवार होगये और हाथ में भाला लेकर सुबक्तगीन पर झपटे, इसी बीच हिन्दुओं ने राजा के हाथी को खाली देख कर यह समझ लिया कि राजा मारा गया, इसलिये उन्होंने युद्धस्थल को छोड़ दिया, राजा चिता में जलकर जीवत जल मरा और उसका सारा माल वा असबाब मोहम्मदियों ने लूट लिया। महाराज जयपाल के मरने के पश्चात् पंजाब देश पर मोहम्मदियों का अधिकार होगया और महमूद नामक लुटेरे ने हिन्दुस्तान को १७ वार लूटा, यहां तक कि हिन्दुओं की स्त्री और बच्चों को गुलाम बनाकर चार चार आने में अपने देशों में ले जा कर बेच दिया। यह प्रत्येक बार हिन्दुओं के मंदिरों को तोड़ कर और शहरों में लूट मार करके अपने साथ बहुतसा द्रव्य भी ले गया। इसने संवत १०७७ में पंजाब का थोड़ासा हिस्सा अपने राज्य में मिला लिया और लाहोर में अपना सूबेदार नियत कर दिया। उसका अंतिम हमला संवत १०८२ में गुजरात में सोमनाथ के मंदिर पर हुआ, जहां से मूर्ति

को तोड़ कर अरबों रुपये के बहु मूल्य रत्न और सोना चांदी अपने साथ ले गया। संवत १०८७ में आखिरकार अपनी जिन्दगी के बहुत से कारनामे इतिहास के पन्नों में लिखे जाने के लिये छोड़ कर इस दुनिया से कूच कर गया। कहा जाता है कि मृत्यु के समय लूट का सारा माल उसने अपने सामने मगवा कर रक्खा था और उसे देख कर रोते हुये शरीर का त्याग किया।

महमूद की मृत्यु के पश्चात् थोड़े ही दिनों में उसके वंश से राज्य छिन गया और एक दूसरे वंश के हाथ में चला गया। मुहम्मद ग़ोरी इस वंश का मुख्य बादशाह हुआ। इसने पठानों की सेना लेकर अफ़गानिस्तान को जीतने के पश्चात् महमूद की तरह हिन्दुस्तान पर हमला करना शुरु किया। इस समय भारतवर्ष में तीन मुख्य महाराजे थे। अनंगपाल तोमर दिल्ली का राजा था, पृथ्वीराज चौहान अजमेर और जयचन्द राठौर क़न्नौज में राज्य करते थे। यह तीनों महाराजे आपस में नातेदार थे। पृथ्वीराज अनंगपाल के कोई संतान न होने के कारण, दिल्ली का स्वामी बना और महाराजा जयचन्द की राजकुमारी संयोगिता को राजसूयज्ञ से हर लाने के कारण वह तथा जयचन्द एक दूसरे के शत्रु बन गये, जिससे मोहम्मद ग़ोरी ने पहले जयचन्द को मिला कर महाराज पृथ्वीराज को परास्त किया, पीछे जयचन्द पर हमला करके क़न्नौज को अपने अधिकार में कर लिया। इसने १० बार हिन्दुस्तान पर हमला किया और अरबों की सम्पत्ति तथा हजारों स्त्री पुरुषों को गुलाम बनाकर अपने देश को ले गया। केवल क़न्नौज में इसने १००० मंदिर तुड़वाये थे और लूट का सोना और चांदी ४००० ऊंटों पर लाद कर अफ़ग़ानिस्तान ले-गया था। इसी की लूट मारों और क्षत्रिय राजाओं का आपस के फूट के कारण राजपूत राज्यों का भारत में नाश हुआ और संवत १२५७ से मोहम्मदी बादशाहों ने हिन्दुस्तान का एक एक राज्य अपने आ-

अधीन करना आरंभ कर दिया। यहीं से भारतवर्ष के इतिहास का नया कांड आरम्भ होता है।

यद्यपि मोहम्मद ग़ोरी ने लाहोर, दिल्ली और कन्नौज आदि पर अधिकार जमा लिया था, तथापि वह भारतवर्ष में चिरस्थायी रूप से नहीं ठहरा। वह लूट का माल और स्त्री पुरुषों को गुलाम बनाने के लिये लेकर आया और वापस चला गया, साथ ही साथ भारतवर्ष में अपने सेनापति क़ुतुबुद्दीन को छोड़ता गया, जिसने नियम पूर्वक यहां पर राज स्थापित कर दिया। क़ुतुबुद्दीन तथा उसके पश्चात् जिन जिन मोहम्मदी वंशों ने भारतवर्ष पर राज किया है उनका विवरण इस प्रकार से है:—

४६—हिन्दुस्तान के मोहम्मदी बादशाहों की सूची संवत् १२५० से १६१४ विक्रमी तक

गुलामवंश १२५० से १३४७

क़ुतुबुद्दीन ऐबक (१२४०–१२६७,) २ शम्सुद्दीन अलतमश (१२६८–१२९३), ३ रज़िया बेगम (१२९४–१२९७), ४ मौज़ुद्दीन बहराम (१२९८,), ५ अलाउद्दीन मसऊद (१२९९–१३०३), ६ नासिरुद्दीन महमूद (१३०४–१३२३), ७ गायासुद्दीन बलबन (१३२४–१३४३) और ८ मौजूद्दीन क़ैक़ुबाद (१३४३–१३४७)

ख़िलजी वंश १३४८ से १३७७ तक

१ जलालुद्दीन फ़िरोज़शाह (१३४८–१३५३), २ अलाउद्दीन सिकन्दर (१३५४–१३७३), ३ क़ुतबुद्दीन मुबारक (१३७४–१३७७)

तुग़लक़ वंश १३७८ से १४७० तक

१ ग़ायासुद्दीन तुग़लक (१३७८–१३८२), मोहम्मद तुग़-

लक (१३८३-१४०८), ३ फ़िरोज़शाह तुग़लक (१४०९-१४४५) ४ मोहम्मद शाह (१४४६-१४५१), ५ नुसरत शाह (१४५२-१४५५) और ६ मोहम्मदशाह (१४५६-१४७०)

सय्यद वंश १४७१ से १५०८ तक

१ खिज़र खां (१४७१-१४७८), मौजुद्दीन मुबारक (१४७९-१४९१), ३ मोहम्मद शाह (१९९२-१५०२), ४ अलाउद्दीन आलमाशाह (१५०३-१५०७)

लोदी वंश १५०८ से १५८३ तक

१ बहलोल लोदी (१५०८-१५४६), २ सिकन्दर लोदी (१५४७-१५७४) और ३ इब्राहीम लोदी (१५७५-१५८३)

सूर वंश १५६७ से १६१२ तक

१ शेर शाह (१५९७-१६०२), २ सलीम शाह (१६२३-१६११) और ३ आदिल शाह (१६१२)

मुगल वंश १५८४ से १९१४ तक

१ बाबर (१५८४-१५८७), २ हुमायूं (५१८८-१६१३), ३ अकबर (१६१४-१६६२), ४ जहांगीर (१६६३ १६८४), ५ शाह जहां (१६८५-१७१४) ६ औरंगज़ेब (१७१५-१७६४), ७ शाह आलम बहादुर शाह (१७६५-१७६९), ८ फ़रुख़ सियर (१७६९-१७७६), ९ मोहम्मद शाह (१७७७-१८०५), १० अहमद शाह (१८०६-१८११), ११ आलमगीर दूसरा (१८१-२ १८१६), १२ शाह आलम दूसरा (१८१७-१८६३), १३ अकबर दूसरा (१८६४-१८९४), और १४ बहादुर शाह दूसरा (१८९५-१९१४).

४७—मोहम्मदी बादशाहों के कुछ कारनामे

गुलाम वंश में कुतबुद्दीन ऐबक ने हाँसी, दिल्ली, मेरठ, कोयल रणथम्बोर, अजमेर, ग्वालियर, कालिजर और गुजरात की ईंट से ईंट बजाई, हज़ारों मंदिरों को मिट्टी में मिलाया और लाखों निर्दोष हिन्दुओं के गले पर छुरी फेरी, उसके ग़ुलाम मोहम्मद इब्ने बख़्तियार ने काशी के हजारों मन्दिरों की जड़ उखाड़ कर फेंकी, बिहार और बंगाल में पाल और सेन वंश के राजाओं को कपट के साथ नाश किया और बिहार में १२००० बौद्ध साधुओं का गला काट कर सरस्वती भण्डार और विद्यापीठ को जला कर राख कर दिया, यहां तक कि जलाने से पहले पुस्तकों का नाम बताने वाला भी कोई भिक्षु या विद्यार्थी नहीं मिला। अल्तमश ने संवत १२९१ में उज्जैन पर आक्रमण किया और महाकाली के मंदिर को, जिसमें करोड़ों रुपया लगा था, तुड़वा डाला।

खिलजी वंश में जलालुद्दीन फ़ीरोज़शाह के शासन काल में जयसलमेर पर आक्रमण किया गया, उस समय तृतीय मूलराज वहां का राजा था। दुष्ट राक्षसों के हाथ से अपना पातिव्रत धर्म बचाने के लिये २४००० हिन्दु देवियां जल कर राख हो गईं। जलालुद्दीन का भतीजा अलाउद्दीन दक्षिण की तरफ़ गया और देवगढ़ के राजा रामदेव यादव से कहा कि मैं अपने चचा से लड़कर आया हूँ, मुझको शरण दो। राजा ने अतिथि समझकर शरण दी, परन्तु दुष्ट अलाउद्दीन ने नमक हरामी और विश्वासघात करके एक उत्सव के समय, जब राजा की सेना बाहर गई हुई थी, राज भवन को लूट लिया और करोड़ों रुपयों का माल लेकर वापिस चला आया। अलाउद्दीन ने बादशाह बन कर जयसलमेर, चित्तौड़ और गुजरात पर जेहाद और स्त्रियों के लिये चढ़ाई की। जयसलमेर में १६,०००, और चित्तौड़ में १३,००० हिन्दू स्त्रियाँ जल कर भस्म हो गईं। गुजरात के राजा

करण की रानी कमला देवी और उस की बेटी देवल देवी मोहम्मदियों के हाथ पड़ गई, कमला देवी को बलात्कार से अलाउद्दीन ने अपनी स्त्री बनाया और देवल देवी के साथ अपने बेटे खिजरखां का विवाह किया।

स्त्री और बच्चों पर अत्याचार होना हिन्दुस्तान में एक नई बात हुई। इतिहासकार बरनायर का कथन है कि अलाउद्दीन खिलजी से पहले आदमियों के अपराध में स्त्री और बच्चों पर हाथ उठाना कोई नहीं जानता था, हिन्दुओं के सम्बन्ध में अलाउद्दीन ने विशेष रीति का क़ानून बनाया। इस बादशाह ने हिन्दुओं की ऐसी दुर्दशा बना दी थी कि जिसके कारण कोई हिन्दू सवारी के लिए घोड़ा न रख सके, शस्त्र न धारण कर सके, बढ़िया कपड़े न पहन सके और न कोई दूसरा सुख भोग सके, जब अलाउद्दीन ने क़ाज़ी से पूछा कि हिन्दुओं के लिए क्या कानूनी अधिकार हैं, तो काजी ने इस प्रकार उत्तर दिया:—

"हिन्दुओं का नाम खिराज गुजार या करदाता है, जब मुसलमान हाकिम उनसे चांदी मांगे तो उनको कुछ आपत्ति नहीं करनी चाहिये और बड़ी अधीनता के साथ हाथ जोड़ कर हाकिम को चांदी की जगह सोना भेंट करना चाहिये, यदि मुसलमान उनके मुँह में मल डालना चाहें या थूकना चाहें तो हिन्दुओं को शांति के साथ हाकिमों का मल थूक आटने के लिए अपने मुँह खोल देने चाहियें, क्योंकि खुदा ने हिन्दुओं को महानीच और घृणित बनाया, खुदा का हुक्म है कि हिन्दुओं को गुलाम बनाये रखो, हिन्दुओं को नीच अवस्था में रखना मुसलमानों के लिये धार्मिक आज्ञा है, क्योंकि वे रसूले खुदा (मोहम्मद) के बड़े कट्टर शत्रु हैं।" क़ाज़ी ने और कहा कि "आपके राज्य में काफ़िर हिन्दुओं की ऐसी दुर्दशा हो गई है कि उनके स्त्री बच्चे मुसलमानों के द्वार पर रोते और भीख

मांगते फिरते हैं, इस शुभ काम के लिये यदि खुदा आपको जन्नत में न भेजे तो मैं जिम्मेवार हूँ।"

तुग़लक़ वंश में मोहम्मद तुग़लक़ जेहाद और रक्तपात का इतना प्रेमी था कि लाख लाख हिन्दुओं को शिकार में पशुओं की तरह वध करवा कर ईद मनाता था। नाक कान कटाना, आँखें निकलवाना, शिर में लोहे की कील ठुकवाना, आग में जलवाना, खाल खिंचवाना, आरे से चिरवाना, हाथी से कुचलवाना, सिंह से फड़वाना, सांप से डसवाना, और शूलो पर चढ़वाना मोहम्मद तुग़लक़ के लिये लड़कों का खेल था।

फ़ीरोज़शाह तुग़लक ने नगर कोट को विजय करके गोमांस के के टुकड़े तोबरों में भर कर हिन्दुओं के गले में लटकवाये और बाज़ारों में फिरा कर खाने की आज्ञा दी, जिसने गोमांस खाने से इनकार किया उसका सिर काटा गया। एक दिन किसी ने आकर कहा कि एक वृद्ध ब्राह्मण अपने घर में मूर्तिपूजा करता है और हिन्दुओं को दर्शन के लिये बुलाता है, फ़ीरोज़शाह ने ब्राह्मण और दर्शकों को अपने सामने बुला कर मोहम्मदी बनने के लिये कहा, उन्होंने इनकार किया, इस पर उन सब को ज़िन्दा आग में जला दिया गया। फ़ीरोज़शाह ने हिन्दुओं के सैकड़ों मन्दिर मिट्टी में मिला दिये, जिसने बनाने की चेष्टा की, उसका सिर काटा गया, जब फ़ीरोज़शाह जम्बू गया और वहाँ का राजा भेंट लेकर मिलने आया, फ़ीरोज़शाह ने उसके मुँह में गोमांस भरवा दिया। महमूद तुग़लक के शासन काल में तैमूर लंग ने संवत् १४५५ हिन्दुस्तान पर जेहाद के लिये आक्रमण किया और ग़ाजी कहलाया। तैमूर ९२००० सवार साथ लेकर अपने खुदा और रसूल (मोहम्मद सा०) की आज्ञा पालन करने (लूट मार और क़त्ल करने) के लिये हिन्दुस्तान में घुस आया, आते ही भटनेर के स्थान पर, जो बीकानेर राज्य में है, एक घंटे में

१०,०००हिन्दुओं को टुकड़े टुकड़े कर डाला, फिर यह नर पिशाच दिल्ली पहुँचा और वहाँ एक लाख हिन्दुओं का सिर काट कर मसजिद में ईद में मनाई। तुजुक तैमूरी में लिखा है कि उसके प्रत्येक सिपाही ने पन्द्रह पन्द्रह हिन्दू अपने हाथ से मारे। दिल्ली के बाद तैमूर मेरठ गया, वहाँ पहुँचते ही हिन्दुओं का सिर काटना आरंभ कर दिया और हज़ारों मनुष्यों को कत्ल करके हज़ारों जवान स्त्री और बच्चों को क़ैद कर लिया। कहा जाता है कि प्रत्येक सिपाही के हिस्से में २० से लेकर १०० तक क़ैदी आये थे, मेरठ को उजाड़ कर वह हरद्वार गया, वहां गंगा को यात्रियों के खून से लाल कर दिया।

तैमूर के चले जाने के बाद भारतवर्ष का शासन तुग़लक़ वंश से निकल कर सैयद लोगों के हाथ आया। सैयदों ने लगभग ३७ वर्ष तक राज किया, पीछे लोदीवंश के लोगों का अधिकार हुआ। इस वंश में सिकन्दर लोदी महा अन्यायी और अत्याचारी था। लोदियों के बाद सूर वंश के लोगों ने कुछ दिन तक राज किया, उनके समय में मुग़ल बादशाह बाबर ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की और पानीपत तथा फतेहपुर सीकरी के विजय के उत्सव में लाखों हिन्दू भेड़ बकरी की तरह उसके तम्बू के सामने मारे गये। इनकी संख्या इतनी अधिक थी कि बादशाह के तम्बू के सामने ख़ून की नदी बह निकली। मुग़ल बादशाहों में औरङ्गजेब और उसके अधिकारियों के अत्याचारों की कथायें इतनी बड़ी हैं कि इस छोटी सी पुस्तक में नहीं आ सकतीं। इस ख़ानदान का सब से नेक और अच्छा बादशाह अकबर को कहा जाता है, किन्तु उसने भी मीना बाज़ार के बहाने क्षत्राणी स्त्रियों के सतीत्व नष्ट करने और महाराणा प्रताप तथा चित्तौड़ के सहस्रों वीर क्षत्रियों के बरबाद करने के जो जो काम किये हैं, वह भारतवर्ष के सभी शिक्षितगण जानते

हैं। औरंगज़ेब तो मानो अत्याचार का पुतला ही था, उसने हिन्दुओं पर जज़िया लगाया, मूर्तिपूजा और शास्त्र पढ़ने को मना किया, मथुरा और काशी आदि में हिन्दुओं के सहस्रों मन्दिरों को नाश किया, कुरुक्षेत्र में लाखों अनाथ हिन्दुओं को मार कर ख़ून की नदी बहाई, गुरु तेग़ बहादुर के एक साथी मतिराम को आरे से चिरवाया, दूसरे साथी भाई दयाल को खौलते तेल में डाला, गुरु तेग़ बहादुर का सिर कटवाया, जोधपुर के महाराज यशवन्त-सिंहजी के पुत्र पृथ्वीसिंहजी को ज़हर दिलवाया। बहुत से सत नामधारी साधुओं को क़त्ल करवाया और इसी प्रकार के अनेक पैशाचिक कर्म हिन्दुओं को नष्ट भ्रष्ट करने के लिये उसने किये। यह सारी घटनायें भारत के इतिहास के पन्ने पन्ने में मौजूद हैं, उन्हें यहाँ दुहराने की आवश्यकता नहीं है। औरंगज़ेब के पापों ने अन्त में मुग़ल साम्राज्य को भी खोखला कर दिया और ज्योंही वह अपने करतूतों की गठरी बांधकर इस दुनियां से रवाना हुआ, उस के राज के टुकड़े टुकड़े हो गये, जिनको अन्त में अंग्रेज़ी सरकार बिना अधिक परिश्रम के अपने अधिकार में लाई।

अंग्रेज़ी हुकूमत में यद्यपि यह लोग छुप छुप कर हिन्दुओं पर उसी प्रकार से अत्याचार करते रहे और उनको बेख़बर देख पंजाब से लेकर बंगाल तक और नेपाल से लेकर रास कुमारी तक उनके धन और धर्म नष्ट करने में कोई कसर उठा नहीं रक्खी, फिर भी बहुत काल तक इनको खुले तौर से किसी भारी चढ़ाई करने का अवसर नहीं मिला, किन्तु जब से पान-इस्लामिक आन्दोलन इन लोगों में उठा, जिसका अभिप्राय यह है कि दुनियां की सारी शक्तियें आपस में मिल जावें और मिलकर समस्त संसार पर अपना अधिकार करके मुसलमानों के अतिरिक्त और किसी को रहने न दिया जावे, तब से भारतवर्ष के मोहम्मदी लोगों ने फिर

खुल्लमखुल्ला हिन्दुओं को लूटने, उनकी स्त्री और बच्चों को भगा ले जाने, उनके घरों को आग लगाने, तथा उनको अकारण ही क़त्ल करने के घृणित कार्य करने आरम्भ कर दिये। जिस प्रकार से इन लोगों ने मुल्तान, मलावार, अजमेर, सहारनपुर, दिल्ली, गोंडा और कोहाट आदि में हिन्दुओं को लूटा, उनके घरों को जलाया, उनको ज़बरदस्ती पकड़ पकड़ कर मुसलमान बनाया और इनकार करने पर क़त्ल किया वे सारी ही घटनायें बहुत ही हृदय विदारक और रोमांचकारी हैं उनके विस्तृत वृत्तान्त मलावार हत्याकांड, भयानक षडयन्त्र और विश्वासघात आदि पुस्तकों तथा समाचार पत्रों में निकल चुके हैं। इसलिये उन्हें यहाँ देना कुछ अधिक लाभदायक प्रतीत नहीं होता।

इस बीसवीं शताब्दी में भी मोहम्मदियों के उसी प्रकार के अत्याचार और लूटमार जैसे कि मोहम्मद सा० के समय में होते थे, देखकर यह मानना पड़ता है कि संसार में वह दिन अति भयानक था कि जिस दिन मोहम्मद सा० ने तलवार की धार पर अपना धर्म फैलाने की घोषणा की और जेहाद को ख़ुदा की बन्दगी कह कर बहिश्त में जाने का पासपोर्ट बतलाया। क़ुरान की आगे लिखित आज्ञाओं से विदित होगा कि जेहाद का सिद्धान्त कितना भयानक और मनुष्यता से विपरीत है। क्या इसके रहते संसार में कभी शान्ति रह सकती है और क्या आदमी सुख के साथ जीवन व्यतीत कर सकता है? कभी नहीं, कभी नहीं।

—क़ुरान में जेहाद की आज्ञायें

(१) जो मुसलमान जेहाद में मारा जाय, उसको मुर्दा मत कहो, वह जिन्दा है। (सूरा बकर)

(२) जो मुसलमान जेहाद करते हैं और संसार के जीवन को

परलोक के लिये दान देते हैं, चाहे वे मरें चाहे मारें, उनको ख़ुदा की तरफ़ से अच्छा सवाब मिलता है। (सूरा निसा)

(३) शान्त बैठने वाले और जेहाद करने वाले मुसलमान समान नहीं हो सकते, क्योंकि जेहाद करने वालों को ख़ुदा इज्ज़त देता है और शान्त बैठने वालों से उनका दरजा बढ़ाता है।

(सूरा निसा)

(४) ऐ मुसलमानो ! बराबर जेहाद करते रहो, क्योंकि यह तुमको ख़ुदा से मिला देगा। (सूरा मायदा)

(५) जिस जगह काफ़िरों को देखो, मारो और घर से निकाल दो। (सूरा बक़र)

(६) मुसलमानों को चाहिये कि काफ़िरों को मित्र न बनावें, जो बनाता है वह ख़ुदा का नहीं है। (सूरा आल अमरान)

(७) यदि तुम चाहते हो कि काफ़िर न रहें तो उनको मित्र मत बनाओ और यदि वे कलमा न पढ़ें तो जहाँ देखो मार डालो।

(सूरा निसा)

(८) जो मुसलमान काफ़िरों को मित्र बनाते हैं, उनको ख़ुदा के यहाँ इज्ज़त नहीं मिल सकती और ख़ुदा का क्रोध उन पर पड़ेगा। (सूरा निसा)

(९) काफ़िरों से उस समय तक लड़ो, जब तक कि उनका नाश न हो जाय और सारी दुनियां में इस्लाम न फैल जाय।

(सूरा इनफ़ाल)

(१०) मुसलमानों को चाहिये कि परस्पर मित्र रहें और काफ़िरों पर कठोरता करते रहें। (सूरा मायदा)

४०—मुख्य मुख्य इतिहासवेत्ताओं की सम्मतियां

आर्थर गिलमैन साहब एम० ए० (Arther Gilman M. A.) अरब के अंग्रेजी इतिहास में लिखते हैं कि मोहम्मद ने मक्का पर अधिकार जमाते समय अपने अनुयायियों से कहा कि:—

"Fight! Fight! Fight! Let no idolater perform the piligrimage. Keep no faith with them. Kill them by fair means, beguile them by strategem, disregard all ties of blood, friendship and humanity. Sweep the unbelievers from the face of the earth in the name of *Allah and of* the Prophet."

अर्थ—लड़ो! लड़ो! लड़ो! किसी काफ़िर को तीर्थयात्रा मत करने दो। उनसे ईमानदारी का बर्ताव मत करो, चाहे तो काफ़िरों को साधारण रीति से मारो और चाहे कपट से बहका कर मारो। उनसे .खून का, मित्रता का और मनुष्यता का सम्बन्ध छोड़ दो, अल्लाह और रसूल के नाम पर काफ़िरों का नामोनिशान दुनियां के परदे से मिटा दो।

मोहम्मद साहब तथा उनके नये धर्म के सम्बन्ध में सैयद मोहम्मद लतीफ़ ने "पञ्जाब का इतिहास" नामक पुस्तक में निम्न प्रकार से लिखा है।

"The religion of Islam was founded by Mohammad, an Arabian of the tribe of Quraish, who announced to his countymen a Divine revelation which he was commanded to promulgate with the Sword. Mohammad called the latent passions and talents of the Arabs into activity and animated

them wlth a new spirit. Armed with the Quran and the sword and supported by the enthusiastic ardour of his followres, Mohammad waged a war with the civil and religious institutions of the world, and introducing new politics and new manners changed the political and moral condition of things Mohammad propagated his religion by the Swoid. 'The Sword' said he 'is the Key of Paradise and Hell.' A drop of blood shed in the cause of God, a night spent in arms is of more avail to the faithful than two months, of fasting and prayer. Whoever falls in battle is forgiven his sins, in the day of Judgment his wounds shall be resplendent as vermilion and odoriferous as musk, and the loss of his limbs shall be replaced with wings of angels and cherubin He who perished in a holy war went straight to Heaven. In paradise nymphs of fascinating beauty impatiently waited to greet his first approach. There the gallant martyrs lived forever a life of happiness and bliss, free from all sorrows and liable to inconvenience from excess. They would possess thousands of beautiful slaves and get houses furnished with splendid gardens and with all the luxuries of life to live in.

"Such liberal promises of future happinessadd-

ed to an immediate prospect of riches and wealth were enough to kindle the frenzy of the desert population of Arabia. Th ir martial spiital was,, roused and their sexual pissions were inflamed.
History of the Panjab by Saieb Mohammad Latif.

कुरेश जाति के मोहम्मद नामक एक अरब निवासी द्वारा इस्लाम धर्म का प्रादुर्भाव हुआ, जिसने अपने देशवासियों से कहा कि यह धर्म उसे ईश्वर द्वारा प्राप्त हुआ है और उसने तलवार के जोर से इस धर्म के प्रचार की आज्ञा दी है। मुहम्मद ने अरब निवासियों की गुप्त काम वासनाओं और शक्तियों को नवीन जीवन से संचारित कर दिया। इस प्रकार कुरान और तलवार से सुसज्जित मुहम्मद ने अपने अनुयायियो के उत्साह के बल पर, संसार के सब धर्मों और राज्यो से युद्ध ठान दिया, और नई नीति और चालों को जारी करके राजनीति और इखलाक में बहुत बड़ी तबदीली पैदा करदी। मुहम्मद ने "तलवार" द्वारा अपने धर्म का विस्तार किया। वह कहा करता था, "तलवार" स्वर्ग और नर्क की कुंजी है। ईश्वर की आज्ञा पालने मे (धार्मिक कामों में) गिरा हुआ एक बूँद रक्त और एक रात्रि का युद्ध भी दो मास के उपवास और प्रार्थना से कहीं बढ़ कर है। युद्ध के समय काम आये हुये योद्धाओं के अपराध क्षमा कर दिये जाते हैं। अन्तिम न्याय के दिन, उसके घाव सिंदूर के समान लाल, क्रांतियान और कस्तूरी के समान सुगंधित हो जायँगे और उनके कटे हुये अंगों के स्थान पर फ़रिश्तों और स्वर्गीय दूतों के पंख लगे होंगे। धार्मिक संग्राम में प्रणान्त होने से सीधा स्वर्ग प्राप्त होजाता है। स्वर्ग में सुंदर स्त्रियां उनके पदार्पण की अधीर हो प्रतीक्षा करती रहती हैं वहाँ वे शहीद सदैव प्रसन्नता पूर्वक निवास करते हैं।

और अधिक भोग से भी किसी प्रकार का दुख अथवा असुविधा अनुभव नहीं करते। वहाँ उन्हें सहस्त्रों, सुन्दर परिचारक (गुलाम नौकर) और रहने के लिये समस्त आवश्यकीय सामग्रियों सहित सुन्दर उपवन और वाटिकाओं वाले वृहद् भवन मिलेंगे।

वर्तमान में सम्पत्ति की प्राप्ति और भविष्यत् में स्वर्ग के सुख की ऐसी उदारता पूर्ण प्रतिज्ञायें, अरब जैसे मरु प्रदेश के निवासियों के दीवानेपन को उद्दीपन करने के हेतु पर्याप्त थीं। उनको लड़ाकू शक्ति को इस प्रकार उत्तेजना मिली और उनकी कामाग्नि भी इस प्रकार प्रज्वलित हो गई।

सैय्यद मोहम्मद लतीफ़ द्वारा प्रणीत "पंजाब के इतिहास" से उद्धृत

"Finally, a simple creature, not far from primitive animality—a Barbarian. Such is the man who has conceived Islam and who by the strength of his arm and the sharpness of his sword has carved out of the world this Musalman Empire."

—*Andre Servier.*

"सारांश, एक साधारण मनुष्य, प्रारम्भिक पशुता के बहुत निकट, अर्थात एक जंगली—ऐसा व्यक्ति है, जिसके मस्तिष्क से इस्लाम का निकास हुआ और जिसने अपने बाहु के बल और तलवार की तेज़ धार से इस्लामी सलतनत को संसार में कायम किया।" (एण्डी सरवीयर)

"Islam, therefore, owes its birth to the hostility between Mecca and Medina. Its first manifestations were acts of hostility against Mecca, and the adhesion of Yathreb (Medina) to the new faith was inspired by policy rarher than religion.

..ammad was received at Medina with sympathy because he was the enemy of Mecca."

Andre Servier

इसलिये, इस्लाम धर्म का जन्म मक्का और मदीना के विरोध के कारण हुआ। इसका आरम्भ मक्का के विरुद्ध किये हुए कार्यों द्वारा हुआ। एथेब (मदीना) के लोगों को इस नये मजहब की तरफ किसी मजहबी जजबे ने नहीं वल्कि हिकमत अमली ने रागिब किया। मदीना में मोहम्मद के साथ केवल इसलिये सहानुभूति दिखाई गई कि वह मक्का का शत्रु था। (एण्ड्री सरवीयर)

Unquestionably the grand cause of the success of Islam was its use of the Sword. Without Islam the Arabs had not been the conquerors of the world, but without war Islam itself had not been. Here converts are made on the field of battle with the Sword at their throats.

"Tribes are in a single hour convinced of the truth of the new faith, becuse they have no alternative but extermination. —*Marcus Dad.*

निस्संदेह इस्लाम धर्म की सफलता का एक बड़ा कारण उसका शस्त्रप्रयोग था। इस्लाम के बिना अरब निवासी संसार विजयी कदापि न हो सकते थे, किन्तु बिना युद्ध के इस्लाम ही न होता। युद्ध क्षेत्र में गरदनों पर अड़ी हुई तलवारों के बल से धर्म परिवर्तन किया गया है। कितनी ही जातियों को केवल मात्र एक घंटे में इस नवीन धर्म की सत्यता को स्वीकार करना पड़ा, कारण कि उनके लिए उस समय सर्वनाश के अतिरिक्त और कोई मार्ग न था।

(मारक़स दाद)

"To convince stubborn unbelievers there is no argument like the Sword. Kill the idolators wherever you shall find them." *Washington Irving*

जिद्दी काफ़िरों को विश्वास दिलाने का तलवार से * दूसरा कोई ज़रिया नहीं है। मूर्तिपूजकों को जहाँ कहीं पाओ, क़त्ल कर डालो। (वाशिङ्गटन इरविङ्ग)

"If we look into the Quran, we find many tokens of this uncompromising spirit.

"When you meet those who misbelieve, then strike off heads untill you have massacred them, and bind fast the bonds.

'Allah promised you many spoils. The spoils are Allah's and Prophet's.

"How can there be a treaty to the idolators, a treaty with Allah and His Apostle.

"Take not your fathers nor your bretheren for association, if they love misbelief and hate the true Faith." —*Arthur Gilman.*

यदि हम क़ुरान पढ़ें, तो हमें उसमें दूसरों से विरोध करने वाले भावों से पूर्ण बहुत से स्थल मिलेंगे

जब तुम काफ़िरों से मिलो, उनके सिर काट डालो, जकड़ कर बाँध लो और उनका नाश कर डालो।

अल्लाह ने तुम्हें बहुत सी लूट देने की प्रतिज्ञा की है, लूट का माल अल्लाह और रसूल का हक़ है।

कैसे हो सकती है सुलह मूर्तिपूजकों से, और अल्लाह और अल्लाह के रसूल से ?

"अपने बड़ों और साथियों का भी साथ न करो, अगर वह मुन्किर हों और सच्चे मजहब से नफ़रत करते हों।"

(आर्थर गिलमैन)

॥ इति ॥